मोपला

अर्थात्

मुझे इससे क्या?

विनायक दामोदर सावरकर

ओ३म्

मोपला

अर्थात्

मुझे इससे क्या ?

[मलाबार का भीषण रक्तपात व हिन्दू वेदनाओं का मार्मिक उपन्यास]

आधुनिक युग के महान् क्रान्तिकारी स्वातन्त्र्यवीर

विनायक दामोदर सावरकर

की लौह लेखनी से लिखा

मुसलमानों की मनोवृत्ति का यथार्थ

जीवन्त चित्रण

प्रकाशक :

वेद विद्या शोध संस्थान (न्यास)

पिपली, कुरुक्षेत्र

मानव-जीवन के परम उद्देश्य सत्य-असत्य के निर्णयार्थ विवेक-सहित व भ्रमरहित आध्यात्मिक ज्ञान के स्रोत तक पहुँचने के लिए जीवन में एकबार महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित 'सत्यार्थप्रकाश' अवश्य पढ़ें।

पुस्तक : मोपला (उपन्यास)

लेखक : विनायक दामोदर सावरकर

अनुवादक : बनारसी सिंह एम.ए.

प्रकाशक : **वेद विद्या शोध संस्थान (न्यास)**
जी०टी० रोड, पिपली, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
चलभाष : 9215592855, 9416916835, 9413394160

संस्करण : प्रथम, 2016 ई० (प्रतियाँ 10000)

पुस्तक-प्राप्ति स्थान—

1. **महर्षि पाणिनि आर्ष गुरुकुल,**
   'कुटिया' नली खुर्द, कुंजपुरा, करनाल-132022
2. दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, हनुमान रोड, नई दिल्ली
3. आर्यसमाज पश्चिम विहार, नई दिल्ली।

मूल्य : 50.00 रुपये

मुद्रक : **राधा प्रेस,** कैलाशनगर, दिल्ली-110031

प्रस्तावना

रात्रि में ग्राम में अग्निकाण्ड होने पर, आग में जान-बूझकर तेल डालना, जितना समाजविद्रोही एवं पापपूर्ण कृत्य है, उतना ही इस आग की ओर से नेत्र मूँदकर रहना तथा यह मानना भी सार्वजनिक हित की दृष्टि से हानिकारक ही है कि आग लगी ही नहीं! जैसे अग्नि में तेल डालना, आग बुझाने का उपाय नहीं, उसी प्रकार "आग लगी है, उठो भागो" आदि की आवाज इस भय से न लगाना कि कहीं सोते हुए लोगों की नींद न टूट जाए, भी उस अग्नि से ग्राम को बचाने का वास्तविक उपाय नहीं है।

इसी भाँति मैं यह समझता हूँ कि मलाबार में मौपलों के उपद्रव के समय घटित भयंकर घटनाओं को अतिरंजित और अस्फुट-रंजित न करते हुए अथवा ज्यों का त्यों विवरण हिन्दू-मात्र के कानों तक पहुँचाना और इनके घातक कर्म को उनके हृदय में बैठाना, हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के लिए हितकारी है। इसी दृष्टि से यह कहानी लिखी गई है।

यद्यपि इस पुस्तक में उल्लिखित नाम और ग्राम कल्पित हैं, फिर भी इसमें जिन घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है उनमें वस्तुस्थिति का यथातथ्य प्रतिबिम्ब ही है! इस वर्णन में मोपलों के उपद्रवों के समय हुई भयंकर और भव्य घटनाओं को अतिरंजित करने का प्रयत्न नहीं किया है।

केवल पृथक् व अलग-अलग स्थानों पर आधारित हुई घटनाओं को एक सुसंगत कथा के सूत्र में पिरोने के लिए नाम, ग्राम व काल तथा वेला की जितनी काट-छाँट आवश्यक थी उतनी की गई है! किन्तु ऐसा करते हुए भी इस उपद्रव के उद्देश्य, इसकी भूमिका, कृत्यों अथवा घटनाओं की संगति और मर्म के ऐतिहासिक स्वरूप का लवलेश-मात्र भी विपर्यास न होने देने की सतर्कता बरती गई है।

मलाबार के उपद्रव का प्रत्यक्ष अवलोकन कर, उस उपद्रव से पीड़ित लोगों के मध्य अनेक वर्ष काम करते हुए सैकड़ों पीड़ित हिन्दुओं और मोपला उपद्रवियों के वृत्त उनके हस्ताक्षरों सहित आर्यसमाज ने "मलाबार का हत्याकाण्ड" नामक पुस्तक प्रकाशित की है। इस पुस्तक में श्रीयुत देवधर द्वारा मलाबार में पीड़ितों की सहायता करने का पुण्यकृत्य करते हुए वहाँ की परिस्थिति

का इतिवृत्त भी प्रकाशित किया है। इसी विवरण और जानकारी के आधार पर यह कथा लिखी गई है। जिन पाठकों के लिए सम्भव हो वे इस पुस्तक तथा अली मुसेलियर के अभियोग का विवरण अवश्य पढ़ें! 'मलाबार का हत्याकाण्ड' नामक इस पुस्तक में ही लाला खुशहालचन्द खुरसन्द के प्रत्यक्ष रूप से देखे गये 'कुएँ' का वृत्तान्त (पृष्ठ ....) पन्नीकर, तेहअस्मा, थल कुर्र राम, सनको जी नायर, की हत्या कर तथा केमियन को मृत समझकर इस कुएँ में फेंके जाने तथा ईश्वर-कृपा से उसके जीवित बचने, केश वन नम्बोदरी, कंजुनी, करुप व चमकुरी मंजेरी इत्यादि स्त्री-पुरुषों द्वारा अपने भयंकर अनुभवों का जो विवरण अपने हस्ताक्षर सहित दिया, प्रकाशित किया गया है। इन्हें पाठक अवश्य पढ़ें। उससे पाठकों को यह विदित हो सकेगा कि पुस्तक में दिया गया विवरण कितना यथार्थ है।

ऐसा अवसर अपने राष्ट्र के समक्ष क्यों उपस्थित हुआ और पुनः ऐसा प्रसंग उपस्थित न हो पाए इसके लिए किन उपायों का अवम्बन किया जाना चाहिए, इस प्रश्न को समाधानकारक रीति से सुलझाया जाना आवश्यक है। सत्य को दृढ़ता-सहित सामने रखकर हिन्दू-मुसलमान दोनों ही इस प्रश्न को समान रूप से सुलझाने को प्रवृत्त हों। ईश्वर से मेरी उत्कण्ठा-सहित यही प्रार्थना है।

—विनायक दामोदर सावरकर

ओ३म्

प्रकाशकीय

हिन्दू तू कब जागेगा रे!

धियो यो नः प्रचोदयात्। —ऋग्वेद।

हे प्रभु हमें मनुष्य जीवन के उद्देश्य पूर्ति के लिए सद्बुद्धि का वरदान दो!

महाभारत के विनाशकारी महायुद्ध के पश्चात् भी अनेकों शताब्दियों तक संसार में वैदिक संस्कृति का साम्राज्य रहा, परन्तु धीरे-धीरे वैदिक जीवन पद्धति एवं प्रभु के वास्तविक स्वरूप सहित आध्यात्मिक मूल्यों का ह्रास होने के पश्चात् संसार में मत-मतान्तरों के अंकुर फूटने लगे। वेद से अलग सबसे पहले दुनिया में पारसी मत का प्रादुर्भाव हुआ, फिर यहूदी, जैन, बौद्ध, ईसाई और अन्त में इस्लाम। जैसे-जैसे वैदिक धर्म से अलग होकर अन्य मतों को जिस भी देश के वासी स्वीकार करते गये, वैसे-वैसे ही वह भू-भाग प्राचीन आर्यवर्त्त से अलग होता गया। इसकी एक झलक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं।

(1) 500 ई० में पश्चिमी एशिया+मिश्र+साईरिनी। (2)1000 ई० में पारस+गन्धार+खोतान। (3) 1500 ई० में सुमात्रा+जावा+बोर्नियो+सैलिनस+मलाया। (4) 1834 ई० में अफ़गानिस्तान। (5) 1872 ई० में नेपाल। (6) 1906 ई० में भूटान। (7) 1914 ई० में तिब्बत। (8) 1935 ई० में श्रीलंका। (9) 1937 ई० में म्यामार (ब्रह्मदेश) (10) 1947 ई० में पाकिस्तान। (11) 1948 ई० में पाक अधिकृत कश्मीर। (12) 1962 ई० में चीन अधिकृत भारत। (13) 1971/ 1947 ई० में बंगला देश

अब आपके मन में एक प्रश्न आपको बार-बार कचोटेगा कि आखिर मेरा ये प्यारा देश इतने बार क्यों कटा-फटा। क्या हमें ये देश प्यारा नहीं था। क्या हम कमजोर व कायर थे! क्या ये भू-भाग निर्जन, बंजर या बेकार थे। या हम इनको सम्भालने या देख-रेख करने में असमर्थ थे। नहीं। नहीं। नहीं। इनमें से कोई भी कारण इस अभागे आर्यवर्त्त की दुर्गति का नहीं है। इन सब न भरने वाले घावों के कारण हमारी वैदिक-संस्कृति, वैदिक-धर्म, वैदिक-विचारधारा या कहिये वैदिक जीवन पद्धति का हमारे जीवन से लोप हो जाना। जिस वृक्ष की जड़ों को दीमक ने खा लिया हो फिर वह आंधी का सामना नहीं कर सकता। वह एक दिन मिट्टी में मिलकर अपना अस्तित्व खो बैठता है। यही हुआ इस अभागे

आर्यवर्त्त के साथ। जातिवाद, छुआछात, बाल-विवाह, ऊंच-नीच, अवैदिक मतों की उत्पत्ति, बहुविध उपासना पद्धति, अनार्ष ग्रन्थों की बाढ़ और धर्म शून्य निरंकुश राजसत्ता व धर्मसत्ताएँ ही वह दीमक थीं जिसने इस विशाल, प्राचीन सभ्यताओं के स्रोत आर्यावर्त्त देशरूपी विशाल वट-वृक्ष की जड़ों को खा लिया। परिणामतः अरब से उठी इस्लाम की काली आंधी की टक्कर न ले सका।

मानव को अपनी दुर्गति के लिए स्वयं की न्यूनताओं को अधिक जिम्मेवार मानना चाहिए। भारतवर्ष के वैभव, वीरता, ऐश्वर्य और निष्कलंक प्राचीन वैदिक ज्ञान-विज्ञान से युक्त गौरव को पैंदे में बिठा देने वाले इस्लामी आक्रमण को अकेले जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। इसके लिए भारत की अपनी विकृत धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और अन्धविश्वास, शोषणमूलक कथित आध्यात्मिक परम्पराएँ अधिक उत्तरदायी हैं। उस किले को कोई भी ताकतवर शत्रु उस समय तक नहीं जीत सकता, जब तक उसे गुप्त व कमजोर स्थलों पर आक्रमण करने का अवसर हाथ नहीं लग जाता। या फिर किले की सुरक्षा के प्रति जिम्मेदार व्यक्ति ही द्रोह करके द्वार न खोल दें। भारतवर्ष पर किये गये आक्रमणों में से कुछ में मिली सफलता का कारण न तो मुसलमानों की वीरता थी, न सूझबूझ, न युद्ध-कौशल और न ही धार्मिक व दार्शनिक विशेषता। इन चन्द आक्रमणों की सफलता का कारण थी भारत में फैली छुआछूत, जाति-पाति का जंजाल, फलित ज्योतिष, मूर्त्तिपूजा, अन्धविश्वास, वेदशास्त्रों का पठन-पाठन मात्र ब्राह्मणों के यहाँ कैद हो जाना और वह भी केवल अवैदिक कर्मकाण्ड के साधन के रूप में तथा विवेक रहित अहिंसा व शास्त्रीय मर्यादाओं से रहित विलासी धर्म व राजसत्ता। मेरे एक मित्र ने कहा ये तो आपने नौ कारण गिना दिये। इन नौ कारणों में से कोई दो प्रमुख कारण कौन से हैं ? उपर्युक्त कारणों में दो प्रमुख कारण छांटना कठिन तो है, फिर भी वे कारण हैं—

छुआछूत और मूर्त्तिपूजा।

मूर्त्तिपूजा भगवान् का अपमान हैं और छुआछूत मानवता का अपमान हैं। जहाँ मनुष्य और भगवान् दोनों का अपमान होता हो, वहाँ फिर क्यों न सारे जहाँ के दुःख-संकट, विपत्ति, दरिद्रता व दारुण विपत्ति अपना सदा के लिए डेरा जमा ले।

राजर्षि वी०डी० सावरकर द्वारा लिखित मलाबार के हत्याकाण्ड की सत्य घटनाओं पर आधारित **मोपला** उपन्यास इसका साक्षात् उदाहरण है। मलाबार के हिन्दुओं में नम्बोदरी ब्राह्मण सबसे ऊँचे दर्जे के हैं। नम्बोदरियों से नीचे

नायर हैं जिनको ब्राह्मण कहते हैं कि ये शूद्र हैं। इन दोनों जाति के अतिरिक्त एक और जाति है जिसका नाम है तीया। इस जाति को मलाबार में चारों वर्णों से बाहर समझा जाता है। उन्हें आज्ञा थी कि वह ब्राह्मण व नायरों से 24 फीट दूर रहे। तीया लोग ब्राह्मणों के घरों व तालाबों में नहीं जा सकते थे। हिन्दुओं का विनाश करने वाली इस बिमारी का विकराल रूप आप एक मुकदमे के माध्यम से देख सकते हैं।

फरवरी 1919 को कालीकट में एक मुकदमा हुआ। मामला यह था कि एक ब्राह्मण मिस्टर शकरन आयर की माता जी के पेट में भयंकर दर्द हुआ। मिस्टर आयर माता जी के उपचार के लिए डॉ० चोई को बुला लाये जो एक तीया था। रास्ते में एक तालाब पढ़ता था। डॉ० चोई उस तालाब से गुजर कर मिस्टर आयर के घर पहुँच गये। इसी पर डॉ० चोई और मिस्टर आयर पर मुकदंमा कर दिया गया कि उन्होंने तालाब को अपवित्र कर दिया। 6 महीने तक मुकदमा चलता रहा। हिन्दू जाति का दुर्भाग्य देखिये कि उस समय के बड़े-बड़े प्रसिद्ध वकीलों, ग्रेजुएट और पढ़े-लिखो ने यही गवाही दी कि बेशक एक तीया के गुजरने से तालाब अपवित्र हो जाता है। मिस्टर एम० गोपाल वकील हाईकोर्ट मद्रास के उस समय में प्रख्यात वकील भी दावेदारों के एक गवाह थे। डॉ० चोई के वकील ने जिरह करते हुए कुछ प्रश्न किये। जिनमें से कुछ विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं—

प्रश्न—यदि एक तीया हिन्दू रहते हुए तालाब के पास से गुजरना चाहे तो गुजर सकता है या नहीं।

उत्तर—नहीं गुजर सकता।

प्रश्न—यदि वह तीया ईसाई बन जाये तो क्या वह इस तालाब के पास से गुजर सकता है या नहीं ?

उत्तर—हाँ, गवर्नमैण्ट के बनाये हुए कानून के अनुसार वह उस तालाब के पास से गुजर सकता है।

प्रश्न—यदि डॉ० चोई मुसलमान बन जाये तो क्या वह तालाब से गुजर सकता है ?

उत्तर—हां, गुजर सकता है।

हाय! दुर्भाग्य हिन्दू जाति का कि एक गोरक्षक रहते हुए तालाब पर से गुजर नहीं सकता है, परन्तु गौभक्षक बन जाने पर गुजर सकता है और तालाब भी अपवित्र नहीं होगा।

हा! दुर्भाग्य हिन्दू जाति का कि एक कुत्ते और जंगली जानवर द्वारा तालाब का पानी पीने से तालाब अपवित्र नहीं होता। तालाब के अन्दर रहने वाले मेंढक, कछवा, मछली आदि प्रजातियों से और पानी में ही मलमूत्र का त्याग करने से भी तालाब अपवित्र नहीं होता। प्राणियों में श्रेष्ठ मानव योनि में जन्म लेने वाले मनुष्य से तालाब मात्र इसलिए अपवित्र हो गया कि उसने कथित एक नीची जाति में जन्म ले लिया।

इसी उपन्यास में आप स्थूलेश्वर शास्त्री को यह कहते हुए सुनेंगे कि जब ब्राह्मणों के घरों, गलियों में नीची जाति के लोगों का प्रवेश हो गया तो अब कौन-सा धर्म शेष रहा जो मोपलों (मुसलमानों) से बचाना चाहिए। जब मोपलों ने उसके सामने ही एक लड़की को निर्वस्त्र करके बालात्कार किया और हरिहर शास्त्री के द्वारा छोटी लड़की को एक दलित के हाथों लड़की के मामा के यहाँ सुरक्षित पहुँचाने का प्रस्ताव रखा तो स्थूलेश्वर शास्त्री तमककर बोला नहीं, नीच जाति के व्यक्ति के साथ भेजने से अच्छा है इसे मोपले मुसलमान ही ले जाएँ। यह हिन्दू जाति के दुर्भाग्य की गाथा है।

इसी छुआछूत का विधान आप अलग-अलग जाति की, नायर या ब्राह्मण से अलग-अलग दूरी के रूप में देख सकते हैं।

तीया जाति—24 फुट की दूरी। मसकून—24 फुट की दूरी। कनीसन—36 फुट की दूरी। यलाबन—64 फुट की दूरी। नायाडी—72 फुट की दूरी। हाय रे हिन्दू जाति! मक्खी, मच्छर, कुत्ते, बिल्ली, भिरड़, ततैये से दूरी की कोई निश्चित सीमा नहीं, परन्तु मनुष्य की मनुष्य से दूरी इससे कम नहीं हो सकती। भारत के टुकड़े किसने किये? क्या विदेशियों ने? नहीं, बिल्कुल नहीं। जातिगत छुआछूत ने पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगलादेश और 25 करोड़ आज के दिन भारत के मुसलमान कहाँ से आये? अरब से? इरान से? बगदाद से? नहीं, जातिगत छुआछूत के कारण हमसे हमारे ही भाई अलग हो गये। आज अपनी व अपने पूर्वजों की संस्कृति को निकृष्ट व विदेशी (अरब की) संस्कृति, भाषा, धर्म, व धार्मिक पुस्तकों को अपनी समझते हैं। अपने ही पूर्वजों की सन्तान अपने भाइयों को काफिर (शत्रु) भारतीय गौरव को तहस-नहस करने वाले इस्लामिक आक्रान्ताओं को अपना हीरो (आदर्श) समझते हैं क्यों? क्योंकि छुआछूत के विषैले व्यवहार ने ही ये हमसे अलग कर दिये। इसी छुआछात ने काला चन्द राय को सारे बंगाल को और पूर्वी भारत में हिन्दूओं को मुसलमान बनाने वाला काला पहाड़ बनाया। क्योंकि यह छुआछूत ही एक बार मुसलमान

बन जाने पर हिन्दू के वापिस हिन्दू धर्म में सम्मिलित होने का द्वार सदा-सदा के लिए बन्द कर देती है। पहले हम जिनको मन्दिरों में प्रवेश नहीं करने देते थे। वे ही मुसलमान बनकर उन मन्दिरों को तोड़ने के लिए आते थे। उन्हीं मूर्त्तियों के अवशेषों को उठाकर मस्जिदों की सीढ़ियों में लगाते थे। कैसे हमारे ही अपने लोग वैदिक संस्कृति के उपासक से विनाशक बन गये।

हिन्दू जाति के पतन का दूसरा कारण मूर्तिपूजा सिद्ध हुई। इस बात को पढ़कर बहुत सारे हिन्दू भाइयों की तथा अपने स्वार्थ की रोटियाँ सेंकने वाले नेताओं की इस पर भोंहे तन जाएंगी। परन्तु शांत चित्त और विवेकशक्ति का प्रयोग करने पर वो मेरी बात से सहमत हो जायेंगे। वैदिक संस्कृति की जितनी हानि ईसाइयत और इस्लाम ने की, उससे कहीं अधिक हानि मूर्त्तिपूजा ने पहुँचाई है। एक समय सारे संसार में वैदिक संस्कृति का झण्डा फहराने वाली आर्यजाति की सन्तान को अपने ही देश में शरणार्थी किसने बनाया ? प्राचीन विशाल आर्यवर्त्त देश को एक छोटे भूखण्ड भारत में सीमित किसने किया ? आत्मवत् सर्वभूतेषु का पाठ करने वाली जाति को जातिगत छुआछूत का कलंक किसने लगाया ? राक्षसराज रावण और कंस जैसे दैत्यों का समूल विनाश करने वाले राम-कृष्ण की सन्तानों को मनोबल विहीन किसने बनाया ? सारे संसार के रचयिता व समस्त ब्रह्माण्ड के संचालक व नियन्त्रक को पुरोहित वर्ग के आधीन किसने लाया ? महर्षि कपिल, कणाद और पतंजलि के अष्टांग-योग पद्धति से प्रभु का साक्षात् करने वाली हिन्दू जाति के मत-मतान्तर के भ्रमजाल में किसने फंसाया ? ईश्वरभक्ति, ईश्वरप्रीति, परोपकार, स्वार्थ त्याग, संयम, शुद्धता व चित्त की एकाग्रता के स्थान पर मात्र किसी दिन-विशेष पर खाद्य विशेष का सेवन करना, किसी तिथि-विशेष पर किसी का मुख देखना तो दूर, उसकी छाया तक का स्पर्श न करके सर्वश्रेष्ठ प्रभुभक्त कहलाने का मिथ्याभ्रम किसने उत्पन्न किया ? सारे संसार को ज्ञान, विज्ञान, चरित्र और शिक्षा का उपदेश देने वाली आर्य जाति की सन्तान को शताब्दियों तक पराधीनता की लोहमयी बेड़ियों में किसने जकड़े रखा ? कभी सारे विश्व का औद्योगिक आदर्श माना जाने वाला वैश्विक-व्यापार के केन्द्र भारतवर्ष को भिखारियों का देश किसने बनाया ? ऐसे लाखों प्रश्नों का एक ही उत्तर है—**मूर्त्तिपूजा ने।**

मूर्तिपूजा भगवान् के साथ उसका अपमान है। मूर्त्तिपूजा आत्मबल व मनोबल की शत्रु है। इस्लाम के विरुद्ध कितनी ही लड़ाईयाँ मूर्त्तियों के भरोसे हारी गई। सोमनाथ मन्दिर का किस्सा प्रसिद्ध है कि मूर्त्ति के दायें-बायें, उपर-

नीचे चुम्बक के पत्थर के आकर्षण से सोमनाथ की मूर्त्ति मध्य में लटकी हुई थी। इसी चमत्कार को दिखाकर पोपों ने मन्दिर में अथाह सम्पत्ति इकट्ठी कर ली थी। क्षत्रियों को ये कहकर की भगवान् अपनी रक्षा करने में आप समर्थ हैं, बहकावे में रखा। कितने ज्योतिषियों ने बहकाया कि अभी चढ़ाई का मुहूर्त्त नहीं है। किसी ने आठवाँ चन्द्रमा बताया, दूसरे ने योगिनी दिखाई। परन्तु जब महमूद गजनवी ने मन्दिर को घेरे में लिया तो इस दुर्दशा से सब भागे। कितने ही पुजारी व उनके चेले कैद कर लिये गये। कितने कत्ल कर दिये गये। उस समय मन्दिर व मूर्त्ति न तोड़ने के बदले ३ करोड़ रुपया देने की पेशकश की। उस पर मुसलमानों के कहा कि हम बुत्परस्त नहीं बुतशिकन् (मूर्त्तिभंजक) हैं और ये कहकर झट से मन्दिर व मूर्त्ति को तोड़ दिया। जिसमें से अट्ठारह करोड़ के हीरे व रत्न निकले। इसे मात्र खाली आर्थिक हानि नहीं कह सकते हैं। बार-बार हिन्दूओं के मन्दिर व भगवान् की मूर्त्तियों के टूटने का परिणाम यह निकला कि इन्हें इस्लाम, मुहम्मद साहब और अल्लाह के सामने अपने भगवान् कमजोर, कायर व बौने नजर आने लगे। यही कारण था कि सदा विजयी रहने वाली आर्यजाति की सन्तान (हिन्दू) का मनोबल व आत्मबल सदा के लिए रसातल में बैठ गया। महमूद गजनवी ने इस आक्रमण में हिन्दुओं को गाजर-मूली की तरह काटा। स्त्रियों और जवान लड़कों को गुलाम बनाकर गजनी के बाजार में बेचा। यह मोपला उपन्यास इसी प्रकार की लूटमार, हत्या, बलात्कार और बलपूर्वक मुसलमान बनाने की कहानी है।

इस्लाम के दो हथियार जिन्हें सारी दुनिया में कोहराम मचाया।

जन्नत और जिहाद!

सारी दुनिया के मुसलमानों को यह विश्वास है कि इस्लाम समानता व मानव प्रेम का प्रतीक है। इस झूठ को बड़ी चतुराई के साथ प्रस्तुत किया गया है। वास्तव में हजरत मोहमद साहब ने सारी दुनिया को दो हिस्सों में बांटा। एक अरब और दूसरी ओर सारे संसार के लोग। इस विभाजन के अनुसार अरबी राज़ करने वाले हैं। बाकि सब अरब-संस्कृति और साम्राज्यवाद द्वारा शासित होने योग्य हैं।

इस्लाम में मानव प्रेम या शान्ति जैसे शब्द तो मात्र एक ढोंग हैं। दूसरों के प्रति घृणा ही इस्लाम का मूल आधार है। इस्लाम के अनुसार मुसलमानों को छोड़कर बाकी सारी मनुष्य जाति सदा के लिए घोर नरक में जायेगी। इस्लाम का उद्देश्य अरब देश, अरबी भाषा और अरब संस्कृति की महता स्थापित

करना हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक अन्धविश्वास के द्वारा दुनिया के मुसलमानों का बुद्धि नियन्त्रण किया जाता है कि हजरत मुहम्मद साहब जन्नत (स्वर्ग) दिला सकते हैं। उनकी आज्ञा पालन ही जन्नत (मुक्ति) का आधार है, किसी के अपने पुण्य कर्म नहीं।

पैगम्बर मुहम्मद साहब!

मुहम्मद साहब के कथनानुसार आपको 610 ई० में एक पहाड़ की हीरा गुफा में ध्यान करते हुए जिब्रील (फरिश्ते) के दर्शन हुये। जिब्रील ने मुहम्मद को अल्लाह का लिखा हुआ सन्देश पढ़ने को दिया और लोगों को इसका ज्ञान देने को कहा। जब मुहम्मद साहब ने कहा कि वह तो अनपढ़ है उसे पढ़ना नहीं आता तब जिब्रील (फरिश्ते) ने क्रोध में आकर मुहम्मद साहब का तीन बार गला घोंटा। जब मुहम्मद साहब ने अपनी पत्नी ख़दीजा को यह वृत्तान्त सुनाया तो उन्होंने कहा कि आपको अल्लाह ने अपना सन्देशवाहक (पैगम्बर) चुना है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि अल्लाताला सर्वज्ञ होते हुए भी ये नहीं जान पाये कि जिनको वो अपना पैगम्बर चुन रहे हैं वह व्यक्ति अनपढ़ है और लिखा हुआ सन्देश पढ़ नहीं सकता।

अल्लाह

यहूदियों का भगवान् यहोवा था। इंजील के कुछ भागों से यह आभास होता है कि एक समय यहोवा कई अन्यों के साथ एल (EL) के अधीन था। एल (EL) को अरबी में अल्लाह कहते हैं। इस्लाम के भगवान् के लिए इससे अच्छा और क्या नाम हो सकता था। क्योंकि अल्लाह यहूदियों के भगवान् से उच्चतर था। और मुहम्मद साहब के सम्प्रदाय कुरैशों का भगवान् था और काबे का स्वामी कहा जाता था। काबे पर कुरैशों का अधिकार था। इसलिए कुरैशों को अल्लाह के लोग कहा जाता था। अल्लाह ने पहले इब्राहीम के बेटे इस्माइल को चुना। फिर इस्माईल की संतती (अरबों) में से मुहम्मद साहब के सम्प्रदाय कुरैशों को चुना, फिर कुरैशों में से मुहम्मद साहब के वंश बानू हाशिम को चुना और फिर बानू हाशिम वंश में से अल्लाह ने सबसे अच्छे पुरुष मुहम्मद साहब को चुना। (Jame Tirmze, Vol. 2)

कयामत के दिन मुहम्मद साहब तुम्हारे पापों को क्षमा करवाकर जन्नत (स्वर्ग) दिलवा सकता है। (Jame Tirmze, Vol. 2) उस समय कुरैशों की अरबी भाषा थी इसलिए कुरान भी अल्लाह ने कुरैशों की भाषा अरबी में दी। इसलिए मोहम्मद साहब कहते हैं कि जो भी कुरैशों का मान-मर्दन करेंगे अल्लाह

उनको नष्ट कर देगा। केवल कुरैशों को ही राज करने का कयामत तक अधिकार होगा। (Jame Tirmze. Vol.2)। चाहे वे सदाचारी हो या दुराचारी (Jame Tirmze. Vol. 1)। इसका प्रमाण यह है कि स्पेन पर 800 वर्ष तक के राज में सभी राजा कुरैश सम्प्रदाय के थे। इसलिए अनवर शेख जैसे निष्पक्ष चिन्तक इस्लाम को धर्म की अपेक्षा अरब का राष्ट्रीय आन्दोलन मानते हैं।

जिहाद

अल्लाह को न मानने वालों पर आक्रमण करके, हत्या करने फिर उनकी सम्पत्ति और स्त्रियों को छीनने का नाम जिहाद है। इस सिद्धान्त के अनुसार लूटमार, हत्या और स्त्रियों का बालात् अपहरण वह पुण्य है जिससे जन्नत मिलेगी। इसका प्रमाण यह आयत है—

खुदा ने मोमिनों से उनकी जानें और उनके माल खरीद लिए है! और इसके बदले उनके लिए बहिश्त (स्वर्ग) तैयार की है! ये लोग खुदा की राह में लड़ते हैं ये मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं........ (9-111)

यही कारण है कि जिहाद अर्थात् अल्लाह के नाम पर जो मुसलमान नहीं है उनकी लूटमार व हत्या करके मालेगनीमत (स्त्रीयाँ और सम्पत्ति) का उपभोग करके जन्नत (स्वर्ग) प्राप्त करना हर मुसलमान का ध्येय है। स्वर्ग (जन्नत) के प्रलोभन के बिना मुसलमान दूसरी जातियों के विनाश के लिए शायद इतने उत्साह से न लड़ते। यही है जिहाद का फल यदि मर जाओ तो जन्नत और दूसरों को मारकर जीवित रहो तो मालेगनीमत (स्त्रियों, सम्पत्ति और जवान सुन्दर लड़कों के रूप में) जो भी मिले वो तुम्हारा। केवल पांचवाँ हिस्सा अल्लाह के लिए पैगम्बर को देकर बाकि सब आपस में बांट लो। इसलिए गैर-मुसलमानों में जहाँ इस्लाम का प्रभुत्व है वहाँ मरने-मारने पर ही उतारू रहते हैं।

जन्नत (स्वर्ग)

इस्लाम के स्वर्ग की परिभाषा क्या है इसका जरा लेखा-जोखा देख लें—

1. वहाँ मेवे हर किस्म के खाने को मिलेंगे। 2. शराब की नदियां बह रही होंगी और वह शराब न सरदर्द करेगी, न नशा। 3. वहाँ अनार और खजूर के वृक्ष ही वृक्ष हैं। 4. शीतल मण्डपों में गलीचे पर हरे तकिये के सहारे एक मुसलमान के लिए 70 हूरें मोटी-मोटी आँखों वाली बैठी होंगी। 5. चारों और पानी के चश्मे और हरियाली। 6. दुध की नहरें जिसका कभी स्वाद नहीं बदलेगा। 7. व्यभिचार करने के लिए सुन्दर-सुन्दर लड़के

होंगे। 8. हर मुसलमान की मर्दाना ताकत सौ गुणा बढ़ जाएगी। 9. हूरों का शरीर पारदर्शी होगा, शरीर का रंग देखकर आँखें चूंधियाँ जाएगी तथा उनकी आँखें मोटी-मोटी व काली-काली होंगी। 10. हूरों के शरीर शीशे जैसे और रंग लाल शराब जैसा होगा।

आप कल्पना कीरिये यदि जिहाद अर्थात् दूसरों (जो मुसलमान नहीं उन जातियों) का विनाश करके यदि जीवित बचे तो अपहरण की हुई स्त्रियों, कन्याओं और सम्पत्ति का भोग करने को मिलेगा अर्थात् धरती पर ही स्वर्ग होगा और मर गये तो ये स्वर्ग की लम्बी चौड़ी भोगों की सूची आपकी प्रतीक्षा करती हुई मिलेगी। यही कारण है मुल्ला-मौलवी लोग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए इन दोनों हथियारों (जन्नत और जिहाद) का भरपूर उपयोग कहते हैं और भोली-भाली जनता को अपने चंगुल में फंसाते हैं इसके दो उदाहरण निम्न हैं।

मलाबार में मुसलमानों के धार्मिक नेता को थंगल कहते हैं। ये मोपला मुसलमान अपने थंगलों पर पूर्ण विश्वास करते हैं। थंगल जो कहे उनके लिए वह ईश्वर-आज्ञा है। थंगलों के शरीर को पवित्र, रोगनिवृत्ति, पापमुक्ति और मनोकामनाओं की पूर्ति का साधन समझते हैं। मोपले थंगलों पर कैसे लट्टू हैं इस उदाहरण से देखिए—

मलाबार के अरनाड ताल्लुके में एक जगह मम्बरम हैं। उस जगह के थंगल को बड़ा थंगल समझा जाता है। प्रसिद्धि अधिक होने के कारण अंग्रेज सरकार इस थंगल को कैद करना चाहती है। मोपलों को किसी प्रकार इसका पता लग गया। 12 हजार मोपले इकट्ठे हो गये। डिप्टी कमिश्नर मिस्टर कोनाली को इसका पता चलने पर कैद करने का विचार छोड़ दिया, परन्तु कुछ दिन बाद इस थंगल को किसी न किसी तरह अरब भेज दिया फिर जब 1855 ई० में मोपलों से हथियार लिये जा रहे थे, तब चार मोपलों ने मिस्टर कौनाली की कोठी में घुस उसका कत्ल करके अपने थंगल का बदला ले लिया। मोपलों को अपने थंगल पर कितना विश्वास है यह निम्न घटना से पता चलता है।

इस मोपला विद्रोह में जब कुछ मोपले सरकारी सेना से मारे जा चुके थे तो उसी दिन सायंकाल को चैम्बर शेरी का थंगल मस्जिद में बैठा हुआ आकाश की तरफ देख रहा था और हंस रहा था। पास बैठे मोपलों ने पूछा हजरत आप किस बात पर हंसते हैं। वह बोला ये तुम्हारे सुनने योग्य नहीं है। मोपलों ने हठ किया कि जरूर बतायें। वह हंसता रहा और बड़ी देर बाद उसने कहा मैं देख रहा हूँ कि आकाश में जन्नत (स्वर्ग) की खिड़कियाँ खुल गई और उनमें से हूरें

निकल कर उन मोपलों का स्वागत कर रही हैं जो आज सुबह शहीद हुए थे। इस पर मोपलों ने पूछा हजरत हमें यह दिन कब नसीब होगा। थंगल बोला। वह दिन तो आया हुआ है तुम्हें पता है, गौरखों का कैम्प लगा हुआ है। जाओ हमला करो और शहीद हो जाओ इस पर 500 मोपले तैयार हुए, हमला किया और कट-कट कर मर गये। इसको कहते हैं **बुद्धि-नियन्त्रण**। इस्लाम के जन्नत और जिहाद ने मुसलमानों की बुद्धि को नियत्रित किया हुआ है वह मरने मारने को जन्नत का साधन समझता है। इसी मानसिकता ने मुहम्मद साहब के देहान्त के बाद पहले चार खलीफाओं की निर्मम हत्या करवाई।

1. खलीफा हजरत अबूबकर को विष देकर मारा।
2. खलीफा हजरत उमर को नमाज़ पढ़ते समय विषैली तलवार से काटा।
3. हजरत उस्मान को उनके घर में घेरकर कत्ल कर दिया।
4. हजरत साहब के दामाद हजरत अली को करबला में कत्ल किया।
5. हसन और हुसैन हजरत मुहम्मद साहब के दौहित्र (नातियों) दोनों का कत्ल ईमानवाले मुसलमानों ने किया (किसी गैर-मुस्लिम ने नहीं)।

अन्त में एक चेतावनी हिन्दू जाति को

जिस मानसिकता ने भारत देश का इतना बड़ा अनर्थ किया वे आज भी ज्यों की त्यों है उसमें किंचितमात्र भी परिवर्तन नहीं आया है, वह है जातिगत छुआछूत, बढ़ता पाखण्ड अन्धविश्वास व मूर्त्तिपूजा। वेदादि शास्त्रों के प्रति बढ़ती हुई अरुचि और शुद्धि (वापिस हिन्दू बनाने) में अनिच्छा। इस मलाबार के मोपला हत्याकाण्ड में जबरदस्ती मुसलमान बनाये गये 2600 नर-नारियों को आर्यसमाज द्वारा शुद्ध किया। आर्यसमाज की तरफ से वस्त्र व राशन-वितरण का डिपो महीनों तक चलता रहा। इस पुनीत कार्य में आर्यसमाज के दो महापुरुषों का विशेष योगदान रहा—(1) स्वामी श्रद्धानन्द, (2) खुशहाल चन्द (महात्मा आनन्द स्वामी)। अपने घर को सुरक्षित करने के लिए मुझे पूर्ण आशा है कि हिन्दू जाति अपनी अन्दर की न्यूनताओं व दोषों को दूर करेगी। इस उपन्यास को हिन्दू जाति की एकता के लिए एक औषध मानकर छपवाया जा रहा है। आशा है हिन्दू जाति इस कड़वी दवाई को खाएगी और अपना रोग दूर करेगी।

इत्योम् शम्॥

ऋषि चरणानुरागी
स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती
15 मई, 2016

मोपला

1

भारतवर्ष के सुरम्य स्थानों, पावन प्रदेशों में मलाबार की गणना की जाती है। हरे वृक्षों से आच्छादित सघन वन, नाना प्रकार के फलों और पुष्पों से ढकी पर्वत-मालाएं, स्वच्छ सलिल से आप्लावित मंजुल प्रपात, गहरी किन्तु शान्त-स्वभावी सरिताएं, विपुल धान्य से भरे-पूरे खेत, ऊंचे और छत्र-से प्रतीत होने वाले वृक्ष पर लगे नारियल एवं पोफली तथा ताड़ इत्यादि वृक्षों की पंक्तियों से परिपूर्ण यह प्रदेश नेत्रों और मन को पद-पद पर आह्लादित करता प्रतीत होता है।

ऐसे इस सुरम्य प्रदेश में, नाना प्रकार के फलों और पुष्पों से आच्छादित ऐसी ही पर्वतमालाओं के एक पर्वत-शिखर पर बसी थी कुट्टम् नामक एक छोटी-सी बस्ती। वहीं नारियल और पोफली के सघन वन में पांच-छह नम्बूद्री ब्राह्मणों के घर थे। उन्हीं के समीप कुछ दूरी पर ही नायकों के पच्चीस के लगभग परिवार बसते थे और उनसे कुछ आगे थी अन्य 'स्पृश्यों' की थोड़ी-सी बस्ती। इसी बस्ती में आधे मील की दूरी पर 'थिय्या' जाति के परिवारों की दस-बारह झोंपड़ियां पड़ी हुई थीं। मुख्य बस्ती से आधे मील की दूरी पर पड़ी ये झोंपड़ियां ही इस बस्ती की सीमा समझी जाती थीं। यद्यपि ये भी इसी ग्राम का भाग थीं, किन्तु फिर भी उनके इतनी दूरी पर बसने का कारण यह था कि ये थिय्या लोग अस्पृश्यों में गिने जाते थे।

प्रतिदिन प्राची दिशा में भगवान् अंशुमाली के भी उदित होने से पूर्व ही नम्बूद्री ब्राह्मणों के कुमार उठकर वेदपाठ आरम्भ कर देते थे। उनके सुमधुर कण्ठों से उभरते पावन वेदमन्त्रों के स्वर को सुनकर पशु-पक्षी भी आनन्द-विभोर हो उठते थे। वहां के ब्राह्मणवृन्द ने वेदों का रक्षण इतनी उत्कृष्टतासहित किया है कि स्नान और सन्ध्या से विरत होकर शुभ्र एवं शुद्ध यज्ञोपवीत धारण कर चारों ही वेदों का सस्वर शुद्ध और भ्रमरहित तथा धाराप्रवाह पाठ करते हुए वे आज भी दृष्टिगोचर होते हैं।

परन्तु वेदों के पठन-पाठन का अधिकार शूद्रों को नहीं है, इसी धारणा के

फलस्वरूप ब्राह्मणों के मुख से उच्चारित वेदों की पावन ध्वनि अन्य जातियों को सुनाई न पड़ सके, इस बात को दृष्टिगत रखकर इन ब्राह्मणों ने अपनी बस्ती ग्राम की सीमा पर अन्य लोगों से दूर बसाई थी। उनके घरों के आगे कुछ दूरी पर नायर परिवार बसते थे। नायर अपने-आप को क्षत्रिय समझते हैं और किसी ब्राह्मण का कनिष्ठ पुत्र नायर की कन्या से विवाह कर सकता था, किन्तु ब्राह्मण के ज्येष्ठ पुत्र के लिए ब्राह्मण कन्या को ही अपनी जीवन-संगिनी बनाना अनिवार्य था। इसका कारण यह था कि नायरों से अनुलोम पद्धति के अन्तर्गत सम्बन्ध स्थापित करना, उस जाति के साथ रक्तैक्य व बीजैक्य स्थापित करना वे अपनी जाति की उच्चता के अनुरूप मानते थे। उनका बीज, रक्त और जाति का अस्तित्व विशुद्ध रखने में विश्वास था। नायर भी थिय्या, नवाड़ी, यलाबन, कलियन और मसकून इत्यादि जातियों को अस्पृश्य समझते थे। अतः उनकी भी यह धारणा थी कि इस जाति के किसी व्यक्ति का दर्शन करना भी अनिष्टकारी है। इसी कारण इन जातियों के परिवार प्रत्येक ग्राम में ही मुख्य बस्ती से मील-आधा मील की दूरी पर बसे हुए थे।

इस सामाजिक रूढ़ि से विशृंखलित सम्पूर्ण हिन्दू समाज के समान ही कुट्टम् ग्राम की यह बस्ती भी व्यवस्थित रीति से अलग-अलग बसी हुई थी।

प्रातःकाल की वेला थी। सुदूर नारियल और पोफली के सुन्दर वन्य-प्रदेश में वेदशास्त्रनिरत ब्राह्मण सांगोपांग वेदपाठ करने में संलग्न थे। बीच-बीच में हवन यज्ञ से उठता हुआ सुगन्धित धूम्र, कालीदास के यक्ष का संदेश देने वाले स्निग्ध एवं दयालु मेघों के तुल्य नारियल वृक्षों की शिखाओं के नीचे मण्डरा रहा था। बस्ती के मध्य में बसने वाले नायरों तथा अन्य जातियों के कुटुम्ब भी अपने-अपने कार्यों में संलग्न थे। उनमें से अनेक बस्ती के समीप स्थित सरोवर से पानी भरने के लिए जा रहे थे, नायरों के परिवारों की महिलाएं भी इस तालाब के मार्ग पर आ-जा रही थीं। उनमें से दस-पांच महिलाएं क्षण-भर ठहरतीं और हंसते हुए एक-दूसरे से विदा ले रही थीं।

उसी समय इस स्थान से दूर खेतों के समीप थिय्यों की उस बस्ती में एक मुसलमान मौलवी एक खेत के किनारे खड़ा दो थिय्यों से वार्ता कर रहा था। खास मुहम्मद पैगम्बर के चाचा की मौसी के जंवाई की जो बहिन थी उसके पड़ोसी की भानजी का बड़ा लड़का मेरा पूर्वज था। इस प्रकार मैं एक विशुद्ध अरब घराने को अलंकृत करता हूँ। अपनी लम्बी दाढ़ी पर तीन-तीन बार हाथ फेरकर वह सब लोगों को समझा रहा था। उन थिय्याओं में से एक 30 वर्ष का

नवयुवक था। उससे मौलवी ने कहा, "कम्बु, तुम्हें पता है, दिव्य पुस्तक में क्या कहा गया है? सूरतुल फुर्कान नामक अध्याय में ईश्वर ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि कुरान उसने प्रकट की है जो पृथ्वी और आकाश की सम्पूर्ण बातों को जानता है। पुनः जो इसे तथा पुनरुत्थान (कयामत के बाद पुनः रचना) की बात को गलत समझते हैं, उनके लिए मैंने भयंकर नरकाग्नि तैयार करके रखी हुई है।" तब कम्बु ने नितान्त शान्त भाव से कहा, 'मौलवी, यह वाक्य तुमने मुझे अनेक बार सुनाया है। परन्तु मैंने तुम्हारे समक्ष जो शंका प्रस्तुत की है उसका निवारण क्यों नहीं करते? सभी मनुष्य एक न एक दिन मरते हैं और वे सभी कब्रों में पड़े हैं और जब कभी युगों के उपरान्त कयामत होगी तब परमात्मा एकदम तुरही फूंकेगा और वे उठ बैठेंगे, तथा उनके साथ न्याय किया जायेगा इसी को आप पुनरुथान कहते हैं ना? हाँ, "अच्छा ठीक है, तब यह बताइए कि यदि किसी मनुष्य के द्वारा किये गये किसी कार्य का फैसला करने के लिए पुलिस उसे एक कोठरी में बन्द करदे और दस वर्ष तक भी उसके मामले की सुनवाई न करे और उसे वहाँ बन्दी बनाए रखे तो क्या इस भयंकर कच्ची कैद देने वाले उस पुलिस-अधिकारी के इस कृत्य को अमानुषिक कहेंगे अथवा नहीं?" 'निश्चित' 'अत: जब न्याय न करते हुए जांच के नाम पर ही किसी व्यक्ति को दस वर्ष तक कैद में रखना, यह एक अमानुषिक कृत्य है, ऐसी आपकी भी मान्यता है तो फिर अन्यायी अथवा न्यायी किसी भी व्यक्ति को अन्तिम निर्णय सुनाने के लिए संसार में अब तक कब्रों-सरीखी भयंकर कोठरियों में डाल रखना, परमात्मा की अमानुषिकता भले ही न हो, परन्तु क्या उसकी दयालुता के विरुद्ध नहीं है? और फिर इस प्रकार की बात पर जो व्यक्ति विश्वास नहीं कर पाता उसे नरकाग्नि में फेंक दे। छि:-छि:, परमेश्वर तो महान् दयालु है, कृपालु है, वह तो न्यायकारी भी है। आप जो कुछ बताते हैं उसमें तो परमात्मा के न्यायकारी होने की कल्पनामात्र भी नहीं है, उसमें तो नाममात्र को भी दया-भावना नहीं है।"

"कम्बु!" मौलवी क्रुद्ध होकर बोला, "तुम काफिरों के कानों तथा हृदय पर तो परमेश्वर ने मोहर लगाई हुई है। तुम्हारी बुद्धि तथा हृदय को परमात्मा ने बधिर और वेदनाशून्य बनाकर रखा है। इसीलिए तुम पुनरुत्थान और पैगम्बर के वचनों पर विश्वास नहीं कर सकते।"

"और" कम्बु बीच में ही बोला, "फिर हमें भयंकर नरकाग्नि में फेंक दिया जायगा। यह परमेश्वर को शोभा देता है क्या? पहले तो सर्वशक्तिमान्

होकर भी उसने हमारे कान व हृदय बन्द कर दिये, और उस पर भी अज्ञान की मोहर ठोक दी। फिर हमारे लिये तुम्हारे कथन के अनुसार सत्य-वचन सुनाने हेतु तुम्हारे समान मौलवी भेज दिया और उसकी आज्ञा से हमारी मुक्ति नहीं होगी अपितु हमें दण्डित किया जायगा। जैसे पहले तो कोई हमारे हाथ में बलात् दूसरे की वस्तु रख दे और तदुपरान्त यह कहकर कि हमने चोरी की है, उसका यह कृत्य जिस भांति अन्याय है, उसी भांति जिस प्रकार के परमेश्वर की कल्पना तुम दे रहे हो, उस पर विश्वास करना मात्र भी अन्याय और अधर्म ही कहा जायेगा।''

''तोबा! तोबा!'' मौलवी साहब बोल उठा, ''परन्तु यह परमेश्वर द्वारा प्रकटित पुस्तक में लिखा हुआ है न?''

कम्बु—''यदि आप ऐसा समझते हों तो आप सुखपूर्वक अपना यह विश्वास बनाए रखिए। मुझे तो अपने हिन्दू सन्तों के उपदेश ही अधिक आनन्ददायक लगते हैं। मैं ऐसा समझता हूँ कि परमेश्वर इस बात से किसी व्यक्ति की साधुता अथवा भक्ति की परीक्षा नहीं करेगा कि पुनरुत्थान पर उसका विश्वास है अथवा नहीं, अपितु वह इस आधार पर मानव की परीक्षा करता है कि तूने सत्कर्म किये हैं, अथवा दुष्कृत्य किये हैं।'' जिन्हें पुनरुत्थान की कल्पनामात्र भी नहीं है किन्तु जिन्होंने संसार में प्राणिमात्र पर दया की है, सत्य, समत्व, परहित-तत्परता को जीवन में स्थान दिया है उनसे परमेश्वर सदैव ही सन्तुष्ट रहता है। हम हिन्दुओं में अनेक ऐसे साधु-सन्त जन्मे हैं, जिन्होंने मुसलमानी कुरान का कभी पन्ना भी नहीं पलटा किन्तु वे अपने पवित्र आचरण और भक्ति के आधार पर ही मुक्ति पाने में सफल हुए हैं।

''मुक्त हो गए!'' मौलवी यह कहकर हंस पड़ा। ''मूर्ख, वे सभी नरकाग्नि में जले हैं। परमेश्वर तथा पैगम्बर पर जिसका विश्वास है वही मुक्ति प्राप्त कर सकता है।''

''क्या कहा? हम हिन्दुओं ने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसकी भक्ति भी पूर्ण मनोभाव सहित की, परन्तु जिस प्रकार तुम पैगम्बर मुहम्मद पर विश्वास करने को कहते हो उस प्रकार हम विश्वास न करें अथवा पुनरुत्थान और उत्पत्ति को मान्यता न दें तो हमारी मुक्ति नहीं हो सकती?''

''अलबत्—अर्थात् नहीं।''

''फिर तो हमारे लिए परमेश्वर के समान ही पैगम्बर की भक्ति करना भी महत्त्वपूर्ण है। हमारे समान! और पैगम्बर से पूर्व मनुष्य-जाति की जो लाखों

पीढ़ियां संसार में जन्मीं और उनके उपरान्त पैदा हुईं, इस संसार की सब पीढ़ियां नरक में गई हैं ना? हमारी हिन्दू-जाति के साधु-सन्तों को भी नरक ही मिला है ना?''

''बिल्कुल। परमेश्वर की पुस्तक से तो यह बात स्पष्ट ही है।''

''फिर अच्छा है?'' कम्बु ने चलते-चलते कहा,''मौलवी जी, जिस नरक में ऐसे साधु-सन्त रहते हैं,जहां मेरे पूर्वजों की पीढ़ियों की पीढ़ियां निवास कर रही हैं, वही मेरा स्वर्ग है। मैं हिन्दू ही रहूँगा। इस धर्म का परित्याग कर मैं स्वर्ग-प्राप्ति का इच्छुक नहीं हूँ। धर्मराज की कथा मेरी दादी मुझे आज भी सुनाती हैं कि उन्होंने अपने पांच भाइयों को छोड़कर स्वर्ग में जाने के स्थान पर नरक में अपने जाति-बांधवों के साथ रहना ही श्रेयस्कर समझा और अपने धर्मबल से अपने भाइयों को मुक्त कराया। मैं उस धर्मराज के भक्तों का एक नितान्त ही कनिष्ठ भक्त हूँ। मैं उसी धर्मराज के तथा श्री कृष्ण के पावन हिन्दू-धर्म का अनुगामी रहूँगा।''

इतने में थिय्यों की बस्ती जिसे अस्पृश्यों की बस्ती अर्थात् महारवाड़ा भी कहा जा सकता है, से एक प्रचण्ड चीत्कार सुनाई पड़ा, ''कम्बु! कम्बु! कम्बु! अरे दौड़ो'' तुम्हारा पुत्र मारा गया। वह दम तोड़ गया।

इस चीत्कार को सुनते ही कम्बु एवं उसके साथ वहां खड़े हुए सभी थिय्या अपने महारवाड़े में जा पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्होंने देखा कि कम्बु का एक मात्र पुत्र वटवृक्ष पर चढ़ते हुए उससे गिर पड़ा था। इससे उसे भयंकर चोट आई थी। उसके घावों से बहते हुए रक्त से उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग तथा वस्त्रादि भीग गये थे। वह अचेत पड़ा था। किसी थिय्या को जितनी जानकारी थी, उसने उतना उपचार भी किया था, किन्तु बालक के व्रणों से होता हुआ रक्तस्राव बन्द नहीं हो पाया था। उसी समय एक थिय्या बोला, ''ग्राम के कृष्ण नायर के पास कोई दौड़कर जाए और उसे बुला लाए, इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है।'' यह सुनते ही कम्बु और उसके समीप खड़ा हुआ एक अठारह वर्षीय किशोर दामू तीर के समान दौड़ पड़े। मौलवी भी उनका पीछा करता हुआ जिस मार्ग से उन्हें जाना था उस मार्ग में स्थित तालाब के पास जाकर खड़ा हो गया था। कम्बु और दामू दोनों ही बड़ी व्यग्रता सहित दौड़ते हुए उस तालाब से लगभग सौ-डेढ़-सौ फुट की दूरी पर जा रहे थे। तभी तालाब पर पानी भरने वाले तथा खड़े हुए नर-नारी सहसा ही चीख पड़े—''थिय्या! थिय्या! दुर! दुर!''

मलाबार में स्पृश्य जातियां अस्पृश्यों को अपने से सौ-डेढ़-सौ फुट दूर ही रहकर चलने देते हैं। स्पृश्यों की यह धारणा है कि यदि तालाब से 100 फुट की दूरी तक स्थित मार्ग पर किसी अस्पृश्य का पैर भी पड़ जायगा तो सम्पूर्ण तालाब का जल ही अशुद्ध हो जायगा। इन दोनों थिय्यों को तालाब के समीप से जाते हुए देखकर हुई इस गड़बड़ को देखकर मौलवी का हृदय हर्ष से प्रफुल्लित हो उठा और उसने वहीं खड़े रहकर यह दृश्य देखने का निश्चय कर लिया।

दूर से ही उन थिय्यों ने कहा, "महाराज! हमारा एक लड़का भयंकर घाव लगने के कारण मरणासन्न है, हम कृष्ण नायर वैद्य के घर से उसके लिये औषधि लेने जा रहे हैं। दूसरा मार्ग यहां से दो-तीन मील की दूरी पर है, अतः दया कीजिए, हमें इस मार्ग से जाने की अनुमति दीजिए।"

"चाण्डाल, मरे तुम्हारा बेटा" एक नायर हाथ हिलाते हुए दौड़ता हुआ आया और चीख उठा। उसने कहा, "क्या तुम्हें पता नहीं है कि जिस मार्ग से तुम जा रहे हो, यह सौ फुट दूर नहीं है। चाहते हो तो नापकर देख लो।"

"महाराज! तालाब के पास से यह स्थान जितना निकट है, उससे भी अधिक मेरा पुत्र मृत्यु-मार्ग के निकट पहुंच चुका है। अतः कृपा कीजिये और मुझे औषधि लाने के लिए जाने दीजिए।"

"तुम्हारा पुत्र मरता है तो मरे" वह राम नायर बोल उठा, जिसे चोरी के आरोप में दो बार कारागार की सैर करनी पड़ी है। उसने कहा, "हमारा तालाब अशुद्ध हो गया तो? नहीं। तुमने पापयोनि में जन्म लिया है, तुम्हें तो देखना मात्र भो अशुभ है, किन्तु कलियुग है अतः मैं सहन कर रहा हूँ।"

"महाराज! आपके मन में जो भी आए कह लीजिए, किन्तु दया कीजिए मेरा यही एकमात्र पुत्र है, मुझे जाने दीजिए। मैं अपने मुख को ढक लूंगा जिससे वह आपको दिखाई न देगा।"

"चुप! वह मुकन्द उत्तेजित होकर बोला जो पिछले पांच वर्ष से कालिकट में शराब की दुकान चला रहा था। उसने चीख कर कहा,"तुझे दिखाई नहीं देता कि मैं स्नान कर रहा हूँ? तू बड़ी ही ढिठाई दिखा रहा है कि हमारे बारम्बार मना करने पर भी आगे ही बढ़ता आ रहा है। क्या तुम्हें विदित नहीं है कि तेरे शब्द कानों में पड़ जाने मात्र से ही मेरे लिए पुनः स्नान करना अनिवार्य हो गया है। पता नहीं है क्या तुझे?"

इतनी कहा-सुनी होते-होते दोनों थिय्या, जो पहले सौ-सवा-सौ फुट की

दूरी पर खड़े थे और वे सरकते-सरकते अधिक निकट आ पहुंचे थे। वे दोनों अब उस तालाब के तट से होकर जाने वाले मार्ग पर पहुँच चुके थे। लड़के के सिर से निरन्तर रक्त प्रवाहित हो रहा था। उसके पिता को भी यह आभास हो रहा था कि उसका पुत्र प्रतिक्षण मृत्यु की ओर पग रख रहा है। जिस समय थिय्या तालाब से केवल 30 फुट की दूरी पर स्थित पगडण्डी के समीप आ पहुंचे तो उस तालाब पर खड़े तथा उसमें स्नान कर रहे स्पृश्यों में भारी उत्तेजना व्याप्त हो गई और दो नायर, एक-दो ब्राह्मण तथा सुनार भी उन पर पत्थर फेंकते हुए उनकी ओर दौड़ पड़े। उसी समय-शान्ति सहित पुरुषसूक्त का उच्चारण करता हुआ एक ब्राह्मण वहां आया और उसने हाथ उठाते हुए कहा, हां। हां। ऐसी निरर्थक मारामारी आप लोगों को शोभा नहीं देती। सुना कम्बु! मैं तुम्हारे लिए उस वैद्य के पास चला जाता हूँ और उसके पास से औषधि ला दूंगा। यद्यपि मैं तुम्हारे पुत्र का कोई सम्बन्धी नहीं हूँ, फिर भी तुम्हें अपने पुत्र के सम्बन्ध में जितनी चिन्ता है, उतनी ही चिन्ता अपने हृदय में लिये मैं शीघ्रता सहित वैद्य के पास जाऊंगा और औषधि ला दूंगा। तुम यहीं खड़े रहो। इससे किसी की भावनाओं को भी आघात नहीं लगेगा और तुम्हारा कार्य भी हो जाएगा।'' अभी इस ब्राह्मण ने इतना कहा ही था कि वह मौलवी बीच में ही बोल उठा, ''माफ करो। मैं बड़े आनन्द सहित कम्बु को औषधि ला दूंगा। आप अपनी सन्ध्या पूर्ण कीजिए। मेरे इस रास्ते से जाने में तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी ना? तभी शराब की दुकान चलाने वाला मुकुन्द बोल उठा, तेरी जाति क्या है? थिय्या लोग अस्पृश्य हैं और गन्दा काम करते हैं।''

मौलवी बोला, ''मैं थिय्या हिन्दू नहीं, मैं तो मुसलमान हूँ।'' ''ओ हो, तो आप तो खान साहेब हैं। भला आप पर किसे आपत्ति होगी? आप इस मार्ग से चाहे आएं अथवा जाएं, इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? ये थिय्या पाप-योनि वाले हैं, अतः इस तालाब से 100 फुट की दूरी से इनके आने-जाने से तालाब भ्रष्ट हो जाता है?'' चोरी करके दो बार कारावास भोगने वाला वह क्षत्रियाकुलावतंस राम नायर अभी इधर ये बातें कह ही रहा था कि पुरुषसूक्त का उच्चारण करने वाला वह ब्राह्मण अपने भीगे वस्त्रों सहित ही दौड़ता हुआ चला गया था। वे थिय्या खडे हुए प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह कब कम्बु के पुत्र के लिए औषधि लेकर वापस लौटता है। अब वह मौलवी भी उन दोनों के समीप जा पहुंचा और बोला, ''हाय! हाय! ये काफिर कितने निर्दयी हैं। कम्बु मुझे क्षमा करो। किन्तु मैं तुम्हारे हित की ही बात कह रहा हूँ। वस्तुतः तूने मेरे

समक्ष इस्लाम के विरुद्ध जो अपशब्द कहे थे उसी का तुझे यह तत्काल फल मिला है। तेरे पुत्र को इसी कारण अल्लाह मियां ने वृक्ष से नीचे गिरा दिया है। और जिन्हें तू अपने धर्मवाला समझता है, उन काफिरों, ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों के हृदय पर तो अल्लाह ने मुहर ठोक दी है। मैं मुसलमान हूँ, मैं तो इस तालाब पर जा सकता हूँ, तू हिन्दू है! किन्तु अस्पृश्य है, तू वहां नहीं जा सकता। तू मुसलमान हो जा, फिर देख कि मैं तुझे इसी तालाब से लेकर जाता हूँ अथवा नहीं। फिर तू इस तालाब से पानी भी लेगा तो कोई न बोल सकेगा। तू मुसलमान हो। अब शीघ्र ही वह समय भी आने वाला है जब मुसलमान इन सभी काफिरों की स्त्रियों का पाणिग्रहण करेंगे। समझा ? चल और तू मुलसमान होने का संकल्प ग्रहण कर। और इस आयत का—कुरान के मन्त्र का उच्चारण कर, जिसे मैं तुझे बताता हूँ। फिर तू देखेगा कि तेरा पुत्र भी तत्काल स्वस्थ हो जाएगा और साथ ही तुझे इन निर्दयी ब्राह्मणों व स्पृश्यों से प्रतिशोध लेने का अवसर भी प्राप्त हो जाएगा।''

अपनी ही चिन्ता में ग्रस्त वह थिय्या मौलवी के इस भाषण को सुनकर संतप्त हो उठा और बोला ''भले ही मेरा पुत्र अच्छा न हो, भले ही उसकी मृत्यु हो जाये, किन्तु मैं मुसलमान नहीं बनूंगा। ब्राह्मणादि हिन्दुओं की इस निर्दयता का प्रतिशोध किस प्रकार लेना है, यह मेरे सोचने का विषय है, तुम्हारे विचारने का नहीं। और जो दयालु मनुष्य मेरे लिए प्रार्थना करता-करता गीले वस्त्रों सहित ही वैद्य के पास दौड़ता हुआ गया, वह भी तो ब्राह्मण ही है।''

अब मौलवी निराशा और क्रोध से लाल-पीला हो उठा और बोला, ''चाण्डाल! काफिर! 'सूरतुल बय्यन' इस अध्याय में परमेश्वर ने मूर्तिपूजकों के लिए जिस दण्ड के सम्बन्ध में कहा है, वह दण्ड तुझे मिलेगा। तुम्हारे लिये नरकाग्नि में पड़ने की ही व्यवस्था है। जैसा कि तू कह रहा है, तेरा पुत्र मरेगा ही। नहीं, नहीं तुम काफिरों के लिये तो ईश्वर ने ही यह व्यवस्था की हुई है तब तक तुम कुरान की श्रेष्ठता स्वीकार नहीं करोगे जब तक कि तुम्हारी गर्दनों पर तलवार नहीं बरसेगी। ठहरो, वह दिन भी अब दूर नहीं रह गया है। हाथों की मुट्ठियां बांधे मुक्का दिखाते हुए वह मौलवी उसे यह श्राप देता हुआ वहां से चल पड़ा।''

इसी बीच औषधि लाने के लिये गया वह ब्राह्मण भी लौट आया। उसके साथ वह नायर वैद्य भी आ गया था। कम्बु, थिय्या था, अस्पृश्य जाति में जन्मा था, किन्तु वह सुशिक्षित था और कालिकट से मलयालम भाषा का एक साप्ताहिक

पत्र भी प्रकाशित करता था। उसने हिन्दू-धर्म का मलयालम भाषा तथा अंग्रेजी ग्रन्थों द्वारा पर्याप्त अध्ययन भी किया था। इतना ही नहीं वह संस्कृत ग्रन्थों का पाठ भी बे-रोक-टोक ही नहीं करता था अपितु उनका अर्थ काफी हद तक समझ लेता था। भगवद्गीता का तो वह भली-भांति पाठ करने में समर्थ था।

संस्कृत भाषा को मातृभाषा के समान ही धाराप्रवाह बोलने वाले अनेकों ब्राह्मण-कुटुम्ब आज भी मलाबार में हैं। किन्तु इतना ही नहीं, ऐसे अनेकों थिय्या आदि अस्पृश्य भी मलाबार में निवास करते हैं जिन्हें संस्कृत के सौ-दो-सौ श्लोक कण्ठस्थ हैं। पर इतना ही क्यों, वहां तो सर्वसाधारण में भी संस्कृत के अनेक श्लोक इतने अधिक प्रचलित हैं कि भर्तृहरि के कतिपय चुने हुए श्लोक अशिक्षित मुसलमानों तक को याद हैं। अस्पृशतया की बात को छोड़ कर कम्बु थिय्या की विद्वत्ता के तो स्पृश्य लोग भी कायल थे। वे भी उसकी विद्वत्ता का सम्मान करते थे। कृष्ण नायर वैद्य की दृष्टि में उसके लिए पर्याप्त सम्मान था। वह भी उसके साथ लगभग 50 फुट के अन्तर से चलता हुआ महारवाड़े पहुंचा और उसके पुत्र का यथोचित उपचार कर वापस लौट गया। जब कम्बु का पुत्र कुछ स्वस्थ हो गया तो कम्बु के साथ जो थिय्या तरुण उस मौलवी द्वारा किए गए सम्भाषण के समय उपस्थित था वह कम्बु से बोला, "दादा! मुझे क्षमा करो, वह मौलवी जो यह कह रहा था कि कुरान ईश्वर द्वारा प्रकट की गई पुस्तक है, मुझे लगता है सत्य ही है।" कम्बु हंसते हुए बोला, तुमने यह कैसे समझ लिया ? तरुण बोला, "इसका कारण यह है कि वह मौलवी इस बात को बारम्बार बड़े विश्वास के साथ दोहरा रहा था।"

"तो फिर यदि किसी बात को एकाध बार जोरों से कह दिया जाए तो क्या वह सही हो जाती है ? तो फिर मैं यदि ऐसा कहूँ कि दो और तीन मिलकर सात होते हैं, और यह ज्ञान मुझ पर परमेश्वर ने प्रकट किया है तथा मैं सौ बार इसी वाक्य को दोहरा दूं तो क्या तुम इसे सच मान लोगे ?

"छिः-छिः, यह बात मेरे प्रत्यक्ष ज्ञान और अनुभव को स्वीकार नहीं। मेरी बुद्धि ऐसा मानने की अनुमति नहीं देती।"

"किन्तु दामू, कुरान ईश्वर-प्रणीत है, यह मुझे नहीं लगता। मेरे समक्ष तू ऐसा कोई तर्क प्रस्तुत कर जिससे तेरे इस कथन की पुष्टि होती हो, अन्यथा बात ऐसी है कि जिन्हें कुरान ईश्वर-प्रणीत लगती है, वे खुशी से ऐसा मानें, किन्तु मेरी दृष्टि में तो उसका अर्थ समाजनाशक, निष्ठुर अथवा अविश्वसनीय है। किन्तु ऐसा समझने वाले मेरे सरीखे लोगों की गर्दन पर क्या तलवार रखी

जाएगी, उन्हें नरकाग्नि में दग्ध किया जाएगा और क्या उनके हृदय को दग्ध करने का प्रयत्न होगा?''

''दादा, हम अस्पृश्यों पर जो हिन्दू-धर्म इतना अन्याय करता है, क्या उसका अपमान करने वाले एवं हिन्दुओं को काफिर समझने वाले मुसलमान हमसे अधिक पवित्र हैं। वे गोवध करते हैं और देवमूर्तियों को पत्थर के टुकड़े समझने वाले ये मुसलमान उनके तालाबों पर भी जा सकते हैं, परन्तु राम-कृष्ण की पूजा करने वाले हम, जो उनके हिन्दू बन्धु-बान्धव हैं, उन्हें वे पापयोनि वाला समझते हैं और हम उनका स्पर्श भी नहीं कर सकते। जिस हिन्दू-धर्म में इस भयंकर अन्याय की गणना भी पुण्य के रूप में की जाती हो, उस हिन्दू-धर्म की अपेक्षा अस्पृश्य जाति की कल्पनामात्र भी न करने वाला एवं सभी मनुष्यों को समान समझने वाला मुसलमानी धर्म श्रेष्ठ नहीं है क्या?''

बड़े लाड़ सहित उस तरुण की पीठ पर हाथ रखते हुए कम्बु बोला, ''पगले, देख शब्दों का अन्तर होने से ही विचारों में भी कितना घोटाला हो जाता है? तू कहता है कि हमसे हिन्दू-धर्म अन्याय करता है, पर हम अस्पृश्यों पर जो निर्दयता सहित अत्याचार होता है, वह हिन्दू-धर्म नहीं करता अपितु यह अत्याचार हिन्दू समाज द्वारा किया जाता है। किन्तु थोड़ा सा विचार करें तो यह बात भी भूल ही प्रतीत होती है। कारण हम अस्पृश्य भी तो हिन्दू-समाज के ही अन्तर्गत हैं। अत: यह कहना ही उचित होगा कि अपने-आपको स्पृश्य समझने वाले कतिपय व्यक्ति हम अस्पृश्य समझे जाने वाले लोगों पर कई दृष्टियों से अत्याचार करते हैं, ऐसा कहना ही न्यायसंगत होगा। और एक क्षण के लिए इस बात पर भी विचार कर कि हिन्दू समाज में अस्पृश्यता का यह पाप ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ही नहीं करते अपितु हम थिय्या भी तो इस पाप में भागीदार होने से मुक्त होने का दावा नहीं कर सकते। जब नायर हम से यह कहते हैं कि छुओ मत तो हम महारों को इतना क्रोध आता है—यह है भी उचित। किन्तु महार थिय्या भी तो वादकों को अपनी पंक्ति व समाज में मिलाना अनिष्टकारक मानते हैं। वे भी तो उन्हें पास से नहीं गुजरने देते और उन्हें जब हम अपने से अलग करते हैं तो उन्हें भी तो बुरा ही लगता होगा! अत: इस पाप का प्रक्षालन तो हम सब हिन्दुओं को मिलकर ही करना होगा। और उस पाप के प्रक्षालन का मार्ग मुसलमान हो जाना है क्या? तेरी बुद्धि यह स्वीकार करती है? एक बार नहीं हजार बार यह बात कही जा सकती है कि छुआछूत ने ही हिन्दुओं में अस्पृश्यता का प्रसार किया है, किन्तु जिसे मुसलमान ईश्वरीय आज्ञा समझते

हैं, क्या वह भयंकर अस्पृश्यता नहीं है? कारण यह है कि 20 करोड़ मुसलमानों को छोड़कर जो अवशिष्ट सैकड़ों कोटि लोग इस धरती पर हैं, मुसलमानों के मत के अनुसार क्या वे अस्पृश्यों से अधिक अस्पृश्य नहीं हैं? उनका उद्धार नहीं हो सकता, उनकी मुक्ति का कोई मार्ग नहीं। उनके हजारों पूर्वज साधु, सन्त, सभी नरक में गये हैं व जायेंगे। पैगम्बर की पुस्तक पर विश्वास न करने वालों को परमात्मा भी स्पर्श नहीं करता, ऐसा कुरान का वाक्य बताया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर भी उनके मतानुसार स्पृश्य और अस्पृश्य का विचार रखता है। हम हिन्दू अस्पृश्यों को तो अपने पुनीत आचरण द्वारा पुनः जन्म ग्रहण करने पर स्पृश्य होने की आशा है, परन्तु मुसलमान मत के अनुसार तो जो अस्पृश्य हैं और जिनकी संख्या सैकड़ों करोड़ है, उनका पुनर्जन्म ही नहीं होगा। वे नरक में ही गलेंगे, सड़ेंगे। उनकी ओर ईश्वर भी दृष्टिपात नहीं करेगा। केवल जो मुसलमान हैं वे ही स्वर्ग के अधिकारी हैं। शेष सारा संसार-तुम्हारे रामचन्द्र, श्रीकृष्ण, पांडुरंग, भक्त पुंडलिक सहित—नरक में पड़ा सड़ रहा है। अस्पृश्यता त्याज्य है, परन्तु मुसलमानों की इस भयंकर अस्पृश्यता की तुलना में क्या हिन्दुओं में विद्यमान अस्पृश्यता वरदान ही नहीं है? साथ ही साथ इस बात पर भी ध्यान देना अभीष्ट है कि अस्पृशतया को दूर करने के लिए हम सब को मिलकर ही इस रूढ़ि को तोड़ना होगा। क्या इस कार्य के लिए तुम हिन्दू-धर्म का ही परित्याग कर देने की निन्दनीय कल्पना करते हो? अस्पृश्यता का अर्थ सांगोपांग हिन्दू-धर्म नहीं है। घर में एक चूहे ने बिल बना लिया है, सांप भी उसमें आ सकता है, अतः तुम्हें उस बिल को बन्द करना होगा। किन्तु क्या एक बिल के कारण ही तुम अपनी थिय्या जाति के अनेक पूर्वजों के भी पूर्वजों की दृष्टि में पवित्र और प्रिय इस हिन्दू-धर्म के मन्दिर को छोड़कर दर-दर भटकना पसन्द करोगे? मैं समझता हूँ कि ऐसा करने का कोई कारण नहीं है।

थिय्या लोग अन्यों की दृष्टि में अन्त्यज हैं, किन्तु फिर भी उन्हें अपनी जाति का, रीति-रिवाजों का और कर्म का प्रखर अभिमान है। उनके पूर्वजों की कोई निन्दा करे, यह उन्हें तनिक भी नहीं सुहाता। उनके इसी प्रखर पूर्वजाभिमान और जाति-प्रेम ने उन्हें आज तक भी ईसाइयों और मुसलमानों के जाल में पूरी तरह नहीं फंसने दिया है। उनमें अनेक साधु-सन्त हुए हैं। आज भी उनमें अनेक बैरिस्टर, वकील, डाक्टर तथा पत्रकार हैं। तथापि उनमें से अनेकों उतावले तरुणों को अपने हिन्दू-समाज की अस्पृश्यता के अन्याय और घातक रूढ़ि ने अपने धर्म से बलात् धक्का देकर दूसरे धर्मों में धकेल दिया है। थिय्या जाति के

विधर्मी बने तरुणों को इस गलत मार्ग से पुनः सही मार्ग पर लाने के लिये जिन थिय्या नेताओं ने प्रयत्न आरम्भ किया था कम्बु उनमें अग्रगण्य है। ऐसे इस हिन्दू-धर्माभिमानी महार बन्धु का तालाब पर स्पृश्य लोगों द्वारा इतना अपमान किये जाने पर भी उसकी हिन्दू-जाति के प्रति इतनी प्रगाढ़ निष्ठा देखकर वह तरुण भी प्रभावित हुआ और उसने कम्बु के चरणों का स्पर्श करते हुए कहा, ''मैं अब अपना सम्पूर्ण जीवन ही हिन्दू-जाति में प्रचलित अस्पृश्यता सरीखी रूढ़ियों को समाप्त करने में लगा दूंगा। जिस प्रकार भी आप कहेंगे, उसी प्रकार मैं हिन्दू-जाति की सेवा करने के लिए सिद्ध हूँ।'' कम्बु बोला ''आज हिन्दू-धर्म की सेवा और संरक्षण के लिए जितने स्वयंसेवकों व स्वेच्छा से सैनिक बनने वालों की आवश्यकता है, उतनी इससे पूर्व कभी भी नहीं थी। मेरी ऐसी आकांक्षा, महत्त्वाकांक्षा है कि आज तक हिन्दू-धर्म का संरक्षण जितनी प्रमुखता से ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने किया है, वैसे ही अब हम थिय्यों को करना होगा। हिन्दू-धर्म के लिए धर्मवीरत्व को प्रदर्शित करते हुए स्पृश्यों के स्थान पर हम अस्पृश्यों को, ब्राह्मणों की जगह हम महारों को अधिक शौर्य का प्रदर्शन कर दिग्दिगन्त में उसका जयजयकार गुंजाना होगा, यही मेरी महत्वाकांक्षा है। चल, अपने मलाबार के हिन्दुओं पर जो भयंकर संकट शीघ्र ही आने वाला है, जिसकी कल्पना इन वेदों के घोष में निमग्न ब्राह्मणों को किंचित् मात्र भी नहीं हो पाई है, उस संकट का निराकरण करने के लिए मेरे साथ चल।''

❑

2

उस तरुण को साथ लेकर कम्बु अपने महारवाड़े से निकलकर ग्राम की पगडंडी पर चढ़ता-चढ़ता नारियल और पोफली के वृक्षों के वन में जा खड़ा हुआ। वे उस वन में जाकर चुपचुप खड़े हो गए, जिससे कि किसी ब्राह्मण की दृष्टि उन पर न पड़ने पाए। क्योंकि यदि वह जोर से बोलता तो स्नान-सन्ध्या निरत ब्राह्मणों का अनिष्ट हो जाता। इसलिए वह अपने हाथ के इंगित से दामू को अपने साथ आने का निर्देश देता रहा और वे दोनों एक वृक्ष के नीचे आकर बैठ गए।

इधर ब्राह्मणों के घरों में होने वाला प्रात:कालीन वेदघोष भी सम्पन्न हो चुका था। हरिहर शास्त्री के द्वार से निकल कर उनकी पन्द्रह वर्षीय कन्या और लगभग 18 वर्ष का पुत्र नारियल के एक उद्यान में जहां विभिन्न रंगों के पुष्प भी

लगे हुए थे, पुष्प-चयन के लिये आ पहुंचे। पुष्प-चयन के साथ ही साथ यह बालक और बालिका संस्कृत-श्लोक बोलते जाते थे और श्लोक के अन्तिम अक्षर को लेकर दूसरा उससे आरम्भ होने वाले श्लोक का उच्चारण करता था। इस प्रकार बीच-बीच में उनका सुमधुर हास्य भी गूंज उठता था। हरिहर शास्त्री यद्यपि नम्बूद्री ब्राह्मण थे फिर भी वे जब से एक बार मद्रास-पर्यन्त हो आए थे तब से उनके मन को इस सम्बन्ध में कोई शंका नहीं रह गई थी कि इस जगत् में आग-गाड़ी और तारयन्त्र जैसे पदार्थ भी हैं। किन्तु इतना ही नहीं, वे उन ब्राह्मणों की शंका का भी समाधान करते थे जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण आयु नारियल और पोफली के वृक्षों से आच्छादित वनों में ही व्यतीत कर दी थी और जिन्हें इस सम्बन्ध में कोई जानकारी ही नहीं थी कि यज्ञशाला के बाहर भी अग्नि कोई अन्य रूप धारण कर लेती है। जब हरिहर शास्त्री इन ब्राह्मणों से आग-गाड़ी अथवा तारयन्त्र आदि की चर्चा करते थे तो उन्हें विश्वास न हो पाता था। उस समय हरिहर शास्त्री उनकी शंका का समाधान करने के लिए वेदों में से भी आग-गाड़ी और तारयन्त्रों का उल्लेख खोज निकालते थे। हरिहर शास्त्री उद्भट विद्वान् थे। अब तो मद्रास-पर्यन्त की उनकी यात्रा ने उनकी विद्वत्ता पर और भी धार चढ़ा दी थी। उन्हें विद्यमान सामाजिक और राष्ट्रीय स्थिति की कल्पना थी और वे समाज में व्याप्त बुराइयों के उन्मूलन के सम्बन्ध में भी विचार करते थे। उनके घर में काम करने वाले नौकर पर्यन्त थोड़ी बहुत संस्कृत समझ लेते थे। वे अपने घर के आंगन में खड़े हुए बाग में फूल तोड़ते हुए अपने दोनों बालकों की लीला का अवलोकन कर रहे थे। इधर उनकी पुत्री अपने भाई से खेल-खेल में रुष्ट होती हुई कहने लगी, ''भाऊ! अब मैं तुम्हारे साथ नहीं खेलूंगी। यह श्लोक तुमने नियम से बाहर कहा है। पञ्च महाकाव्यों में से किसी का भी यह श्लोक नहीं है और पञ्च महाकाव्यों में से ही श्लोक बोलने की तुम्हारी प्रतिज्ञा थी।''

''परन्तु सुमति! यह श्लोक तो रघुवंश का है।''

''कदापि नहीं-'' 'चलो! तुम से मेरी शर्त रही।' ''हां-हां, चल शर्त ही सही, बाबा से ही निर्णय कराए लेते हैं।'' ''कहिए न बाबा'' उसका भाई बोला, 'बाबा! सीते दुस्सहनं वनम्।' क्या यह श्लोक कालिदास का नहीं है? 'नहीं बाल', शास्त्री ने कहा। किन्तु यह कहां का है, यदि सुमति ने यह बता दिया तो मैं समझूंगा कि वह जीत गई है। हां-हां, यह रामायण का श्लोक है' सुमति तत्काल बोल उठी। यह सही है तथापि रामायण के कतिपय अनुष्टुप् भी

कालिदास के अनुष्टुपों से इतने अधिक मिलते हैं कि जितने गीता के उपनिषद् से।' अत: यदि बाल से भूल हो गई है तो इसमें सुमति तुम्हारे लिए दोष देने का कोई अवसर नहीं है। सुमति कुछ क्रुद्ध-सी होती हुई बोली, छोड़िये, इससे कुछ नहीं होता। उसी समय उसके पैरों से थोड़ी-सी ही दूरी पर बड़ी तेजी से एक सर्प दौड़ता हुआ दिखाई दिया। शास्त्री किंचित् मात्र भी न चौंकते हुए बोले- सुमते! देख तो तेरा फणीन्द्र तेरे चरणों में क्या विनती करने आया है। आज प्रात:काल फूल तोड़ते समय तूने उसे यह गीत नहीं सुनाया जो तू प्रतिदिन गाती थी। यही कहने के लिए वह आया है। इसे सुना दे वह गीत।

उस सांप को 'फणीन्द्र-फणीन्द्र' कहते हुए वे दोनों ही बालक उसके साथ खेलने लगे। वे क़भी चुटकी बजाकर उसे बुलाते थे तो कभी पुचकार कर आगे आने का इशारा करते थे। उनके खेलते ही खेलते वहां दो तीन सर्प और भी आ गए। वे भी अपने बिलों से निकल कर उनके साथ खेलने लगे। यहां जिस प्रकार आप लोग अपने घर में कुत्ते और बिल्लियां पालते हैं, उसी प्रकार मलाबार में सभी जातियों के लोग घरों के आंगन में सर्पों को निवास करने देते हैं। जिस प्रकार कभी आपके मन में यह कल्पना भी नहीं आ पाती कि कुत्ता भी प्राणघातक सिद्ध हो सकता है, इसी भांति यहां के निवासी सर्पों से किंचित् मात्र भी भयभीत नहीं होते। किन्तु ऐसी बात भी नहीं है कि सर्प कभी किसी पर वार ही न करता हो? तथापि मलाबार में सर्प की हत्या करना सामान्यत: क्रूरता समझी जाती है। अत: अनेक स्थानों पर पालतू पशुओं के समान ही सर्प भी गृह-आंगन से चौखटों तक, चौखटों से गृह-आंगन तक में विचरण करते हुए दृष्टिगोचर हो जाते हैं। हरिहर शास्त्री को अपने उद्यान में विचरण करने वाले सर्पों से केवल धार्मिक दयाभावना अथवा सामाजिक रूढ़ि मात्र के कारण ही प्रेम नहीं था, अपितु सर्पों के प्रति उनके मन में विद्यमान वात्सल्य-भावना का एक विशेष कारण भी था। कारण यह था कि जिस सर्प ने उनकी कन्या के पैरों के समीप आकर बड़े लाड़ सहित कुण्डली मारी थी, उस सर्प का अपनी सन्तान के तुल्य ही पालन करने का निर्देश उन्हें उनके पिता ने ही देहत्याग करते समय दिया था। हरिहर शास्त्री के वृद्ध पिता एक दिन वनांचल से गुजर रहे थे और वर्षा की रिमझिम फुहारें पड़ रही थीं। उन्होंने अपने सिर पर वर्षा से भीगने से बचने के लिए ताड़पत्रों की बनी एक छत्री लगाई हुई थी। वर्षा के कारण शीत बढ़ रहा था और वन्य पशु भी इस ठण्ड से बचने के लिये यत्र-तत्र शरण लेने का स्थान खोज रहे थे। ऐसे समय ही जब वह वृद्ध एक नागफनी के

वृक्ष के समीप से होकर गुजरा तो उस वृद्ध ब्राह्मण की छत्री में नाग का बच्चा आ गिरा। वह उसकी छत्री के डण्डे से लटक गया और वृद्ध ब्राह्मण उसे अपने घर ले आया और दयालु हृदय वाले इस ब्राह्मण ने उसे एक गर्म कपड़े में लपेट दिया। धीरे-धीरे उन्होंने अपने बाग में ही उस सर्प के लिए रहने की एक सुन्दर बांबी भी बना दी। वह नाग का बच्चा धीरे-धीरे बढ़ता रहा और एक नितांत भयंकर सर्प का रूप धारण कर गया। यद्यपि वह सर्प दूसरों को देखने में बड़ा ही भयंकर प्रतीत होता था किन्तु वृद्ध ब्राह्मण की वस्तुओं पर और उसके हाथों पर बालकों के समान खेलता रहता था। उसी पुष्पवाटिका में रहने वाली सर्पिणियों के सम्पर्क में आने के कारण उसकी संतति भी बढ़ती जा रही थी। ये सभी सर्प बड़ी ही स्वच्छन्दता सहित उपवन में विचरण करते थे और उसके समीप ही स्थित अनाज के भण्डार पर रात्रि में पहरा भी देते थे।

एक दिन रात्रि में कुछ चोर शास्त्री जी के घर में धन और धान्य चुराने के लिए आये, जब वे द्वार से भीतर प्रवेश करने लगे तो उस भयंकर नाग ने अपनी तीव्र फुंकारें मारनी आरम्भ कर दीं और अपने विशाल फन को उठा कर वह उनके सामने आकर खड़ा हो गया। उसके सामने आ जाने के कारण चोर कुछ भयभीत हो गये और अभी उन्होंने सर्प को मार्ग से हटाने के लिए शस्त्र उठाया ही था कि आसपास घूमने वाले सभी सर्पों की भयंकर फुंकारें गूंज उठीं और उन्होंने अपने फणों से चोरों पर प्रहार भी किए। चोर अन्धकार में भाग निकले। अभी वह शास्त्री जी के द्वार से तीस-चालीस फुट की दूरी पर ही जा पाये होंगे कि सर्पदंश के कारण शरीर में फैले विष से मूर्छित होकर गिर पड़े। प्रातःकाल वृद्ध शास्त्री जी उठे तो उन्होंने देखा कि एक चोर चोरी के माल की गठरी पर ही मरा हुआ पड़ा है। कोई भयंकर विष की वेदना के कारण मरणासन्न हो गया है। किन्तु किसी कर्त्तव्यनिष्ठ पुलिस अधिकारी के समान वह नाग उन सब चोरों पर पहरा दे रहा था। शास्त्री महोदय ने बड़ी कौतूहलपूर्ण दृष्टि से यह दृश्य देखा। उनके मन में दया की भावना उमड़ पड़ी और उन्होंने समझा कि चोरी के आरोप में प्राण-दण्ड अत्यधिक है, अतः सर्पदंश का वह रामबाण उपाय किया, जिसकी जानकारी मलाबार में अनेक लोगों को है। उस रामबाण उपाय द्वारा उन्होंने चोरों को पुनः चैतन्य प्रदान किया और छोड़ दिया। उसी दिन ग्राम में यह किंवदन्ती फैल गई कि यह नाग शास्त्री महोदय का ही कोई पूर्वज है और उसने उस घर पर पहरा देने के लिए ही जन्म ग्रहण किया है। इस ख्याति के साथ ही साथ एक विशेष बात यह भी थी इस नाग को अपनी शैशव अवस्था

से ही सुन्दर कुमारी से प्रेम था। सर्पों के प्रेम में फंसी कुमारी के जीवन के लिए खतरा होता है, ऐसा भी कभी-कभी होता है। परन्तु इस नाग का इस कुमारी से प्रेम ऐसा नहीं था। वह सर्प तो एक चंचल स्नेही जन के समान उस कन्या के आस-पास घूमता था, उसी के हाथ से दिया गया दूध पीता था, उससे गीत सुनता था और दिन में कम से कम एक बार जब यह कन्या अपने कोमल हाथों से उसे सहला देती थी तो वह दिन भर स्वर्गीय आनन्द का अनुभव करता था। किसी-किसी दिन उसके स्पर्श मात्र से ही इस नाग को सन्तोष नहीं हो पाता था और वह उसके मुख पर टक लगाने की उच्छृंखल इच्छा से भी विह्वल हो उठता था और यदि वह इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती थी तो वह दूध भी नहीं पीता था। और अन्ततः जब सुमति अपना हाथ उसकी ओर कर देती थी और अपने सुकोमल हाथ से एक नागिन के समान उसे दुलारती और सहलाती थी तथा उसके नेत्रों को अपनी कुन्दन-वदन-चन्द्रिका का रसपान करा देती थी, तभी वह नाग दूध पीता था। हरिहर शास्त्री को भी यह दृश्य देखकर आनन्दानुभूति होती थी। इस प्रकार हरिहर शास्त्री और सुमति ही क्या, घर के सभी लोग उस नाग को अपने पारिवारिक जन के तुल्य ही स्नेह करते थे।

उस सर्प के साथ खेलते-खेलते ही सुमति की दृष्टि सामने की ओर गई तो उसे ऐसा लगा कि दूर खड़ा कोई हाथ के इशारे से बुला रहा है। वह बोल उठी, बाबा! देखो तो वह कौन है? आप यहां खड़े हैं, यह उसे पता है, किन्तु वह वहाँ क्यों खड़ा हुआ है? हरिहर शास्त्री ने उस ओर दृष्टिपात किया और बोले, "यह थिय्यों का नेता कम्बु है।" सुमति कई बार अपने पिता के मुख से कम्बु की प्रशंसा सुन चुकी थी, अतः बोली, "बाबा, ऐसे विद्वान् मनुष्य को यहां क्यों नहीं बुला लेते?" शास्त्री जी बोले, अरे, यदि मैंने थिय्या को यहां बुला लिया तो कल ये सारे ब्राह्मण मुझे ही यहां से निकाल कर बाहर कर देंगे, अतः मैं ही उसके पास चला जाता हूँ।'

सुमति तत्काल हंसती हुई बोल उठी, 'बाबा, क्या यह अच्छी बात है? ब्राह्मणों की इस बस्ती में घूमने वाले इन गन्दे कुत्तों और सर्पों से भी थिय्या लोग अधिक मलिन और भंयकर हैं क्या? ऐसा तीखा प्रश्न करने के उपरान्त बालिका अपने सहज सुलभ स्वभाव के अनुसार पुनः खेलने लगी। बालिका घर वापस लौट गई और शास्त्री जी अपने तरुण पुत्र को साथ लेकर उस थिय्या की ओर चल पड़े। सुमति भी मार्ग के समीप ही स्थित एक घर की ओर चली गई और वहाँ जाकर अपने पिता और थिय्या के बीच कैसे वार्तालाप होता है, यह देखने

के लिए खड़ी हो गई।'

हरिहर शास्त्री भी तपोवन के समान शान्त और निर्भय प्रतीत होने वाले ब्राह्मणागार से चल पड़े। उधर कोकिला की सुमधुर कूक गूंज रही थी, गाएं रम्भा रही थीं और साथ-साथ वेदमन्त्रों की पावन ध्वनि की गूंज भी सुनाई दे रही थी। एक स्थान पर दो-तीन शास्त्री बड़ी गम्भीरता सहित प्रदक्षिणा के समय दोनों पैरों में कितना अन्तर होना चाहिये, इस सम्बन्ध में स्मृति में कोई सुनिश्चित और स्पष्ट व्यवस्था की गई है अथवा नहीं, इस महत्त्वपूर्ण विषय पर चर्चा करने में तल्लीन थे। शास्त्री जी अन्ततः वहां जा पहुंचे जहां कम्बु खड़ा हुआ था और पर्याप्त दूरी पर खड़े होकर उससे वार्ता करने लगे। कभी कुछ मन्द और कभी थोड़ी तेज आवाज में उनकी वार्ता होने लगी। बातचीत करते-करते कम्बु ने कहा, "आप इस सम्बन्ध में कोई शंका न कीजिये महाराज! जिस घर में सुरंग लगाई जाती है, उसमें सुरंग लगते ही कोई गड़बड़ दृष्टिगोचर नहीं होती। परन्तु यदि उस घर में निश्चित रूप से निवास करने वाले लोगों को कोई व्यक्ति यह कहे कि इस घर में सुरंग लगाये जाने की बात ही गलत है तो यह एक खोटी बात होगी। किन्तु जब घर के नीचे लगी हुई सुरंग में सहसा ही विस्फोट होता है, तभी उस घर में निवास करने वालों को सत्य का साक्षात्कार हो जाता है, और उस समय सुरंग लगाये जाने की बात को गलत कहने वाले के भुलावा डालने वाले प्रपञ्च का पता लगता है। आज आपकी ब्राह्मण बस्ती की स्थिति भी ऐसी ही है। उस मौलवी ने मुझे कई बार कहा है कि तुम्हें व तुम्हारे थिय्या बन्धु-बान्धवों को उस मार्ग से भी अनिष्ट होने की आशंका से जाने नहीं दिया जाता जिस पर कुत्ते स्वच्छन्द घूमते हैं। यदि इन्हीं ब्राह्मणों और मराठों की पुत्रियों को लाकर उन्हें तुम्हारे साथ न रख दूं तो मैं मौलवी नहीं। जो भी थिय्या आज मुसलमान बनेंगे तथा शीघ्र ही होने वाले विद्रोह में भाग लेंगे उनमें से प्रत्येक को उनकी मनपसन्द ब्राह्मण-कन्या एक मास की अवधि के भीतर सौंप दी जायेगी। महाराज क्रोध न कीजिये। मलाबार में आज यों तो कोई गड़बड़ नहीं दिखाई देती, आज आपके इस शान्त तपोवन में जहां कोकिला की मधुर तान सुनाई पड़ती है, वहां भी मोपले मुसलानों द्वारा राक्षसी धर्मयुद्ध की भयंकर सुरंग बिछाई जा रही है।"

उस थिय्या के इस कथन का शास्त्री महोदय पर भी थोड़ा सा प्रभाव हुआ और उन्होंने कुछ चिन्तायुक्त आवाज में कहा, "उस मौलवी सरीखे दस पांच धर्मोन्मत्त लोगों की मारधाड़ से भयभीत हो जाये, ब्रिटिश राज्य इतना दुर्बल है

क्या ?''

दस-पांच धर्मोन्मत्त मौलवी ही नहीं, किन्तु प्रत्येक मोपला इस विद्रोह में शस्त्र धारण कर खिलाफत के लिए उठ खड़ा होगा। इस बात के साथ ही साथ मुझे उस मौलवी ने यह भी बताया है कि अरब-स्थान से गोला-बारूद समुद्र-मार्ग से उनके पास पहुंचेगा और इसके साथ ही साथ अफगानिस्तान का अमीर भी 50-60 हजार सैनिकों सहित हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने वाला है। हमारे विद्रोह करने में अभी कुछ देर है। हम ज्यों ही विद्रोह करेंगे उसके तीन मास के उपरान्त ही तुर्कस्थान का ध्वज फहराते हुए अनवर बेग भी हमसे आकर मिलने वाला है। यह बात वह मौलवी मुझे बारम्बार कहता है।''

''यह अनवर बेग कौन है ?''

''वह तुर्क है और उसे हिन्दुस्तान के मुसलमान सम्पूर्ण विश्व के मुसलमानों को स्वतन्त्र करने के लिए जन्म-ग्रहण करने वाला ईश्वरीय वीर समझते हैं।''

''अरे, किन्तु यदि वह अनवर तुर्क है तो यह तो बताओ कि वह इन मोपलों का कौन लगता है ? ये मौपले तो हमीं हिन्दुओं के वंशज हैं न।''

''महाराज आप भूल कर रहे हैं। वे तो अपने-आपको अरब-स्थान के मुहम्मद के कुरैशी वंश का समझने लगे हैं। एक बार अरबी अथवा किसी कुरैशी द्वारा तो हिन्दू के प्रति किसी ममत्व-भावना का किया जाना सम्भव है, परन्तु ये मोपले—हम हिन्दुओं के ही वंशज, हिन्दुओं के प्रति उतनी ममता का प्रदर्शन नहीं करेंगे। दस-पन्द्रह वर्ष पूर्व भी एक बार मोपलों ने दंगा किया था। क्या उन दिनों इन्होंने अरनाड तालुका के अनेक हिन्दुओं को बलात् मुसलमान नहीं बनाया था ? क्या उन्होंने मुसलमान न होने वालों की हत्याएं नहीं की थीं ? उस समय का आपको स्मरण होगा ही !''

''क्या कहते हो। वह दंगा करने वाले ये मोपले ही थे ?'' किसी मर्मभेदक जानकारी के उपलब्ध होने पर मानव-मन में चिन्ता का उद्‌भव होना स्वाभाविक ही है। अत: शास्त्री महोदय भी चिन्तामग्न हो गए। यों तो उस दंगे में क्या कुछ हुआ था इसका विचार भी कुट्टम ग्रामवासी ब्राह्मणों तथा अन्य हिन्दुओं ने कभी नहीं किया था। क्योंकि यह घटना उनके ग्राम में नहीं हुई थी और दूसरे ग्राम में क्या होता है उसके सम्बन्ध में विचार करने की सजगता यदि हिन्दू समाज में होती तो वह दुर्दिन ही क्यों उपस्थित होता ! किन्तु हरिहर शास्त्री को इस दंगे की इतनी तीव्र स्मृति हो आने का कारण भी इतना ही तीव्र था। कारण यह था कि उनकी अपनी नानी को उस दंगे के समय पास के ग्राम के मुसलमानों ने

उनके घर से उठाकर बलात् एक वर्ष तक एक मुसलमान घर में रखा था और अन्ततः उस साध्वी ने अन्न-जल का परित्याग कर अपने प्राण समर्पित कर दिए थे। यह स्मृति आते ही कि उसके साथ मोपलों ने क्या किया था, शास्त्री महोदय के हृदय पर एक तीव्र आघात-सा लगा। कम्बु थिय्या ने जो कुछ कहा था उससे उनके मन पर भयंकर आघात लगा था किन्तु वे पुनः विचारने लगे और बोले "क्या कहते हो? ये मोपले पुनः उपद्रव करने वाले हैं? किन्तु क्यों भाई, अपने इस कुट्टम ग्राम में तो कभी ऐसा नहीं हुआ। उसका कारण भी है और वह यह कि इस ग्राम में मोपलों के पांच=छह ही तो घर हैं, और फिर ये तो हैं भी निर्धन। साथ ही ये धर्मान्ध भी तो नहीं। ये अपने ही ग्राम के अस्पृश्य हिन्दुओं के तो वंशज हैं। जो कुछ होगा वह तो अरनाड तालुका में होगा, अपने ग्राम में तो ऐसा कोई खतरा दिखाई नहीं देता।"

"महाराज" क्या कहा कि इस ग्राम पर कोई संकट नहीं आएगा? अहो! हिन्दू अस्पृश्यों के ही वंशज जो चार-पांच मोपला कुटुम्ब आपको गरीब दिखाई देते हैं, उन्हीं के साथ वह मौलवी भी है न। वही मौलवी जिसने मुझे तथा मुसलमान होने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक थिय्या को उसकी मनपसन्द ब्राह्मण व नायर कन्या अर्पित करने की घोषणा की है। इस बार सभी मोपले एक साथ ही विद्रोह आरम्भ करने वाले हैं। यदि यह मान भी लिया जाय कि अरनाड तालुका में निवास करने वाले हिन्दुओं के समक्ष भले ही भयंकर संकट उपस्थित हो जाए किन्तु आपके इस कुट्टम ग्राम में शान्ति ही बनी रहेगी तो भी मैं सोचता हूँ कि क्या अरनाड तालुका के हिन्दुओं के समक्ष उपस्थित होने वाले भयंकर संकट में हम भागीदार नहीं बनेंगे? उनकी स्त्रियों और बच्चों पर जो संकट आएगा वह संकट अपने ही परिवार पर आया है, क्या ऐसा समझकर आप उनकी सहायतार्थ नहीं दौड़ेंगे? क्या वहां के हिन्दुओं की बहनें आपकी बहनें नहीं हैं? क्या उनके देवालय आपके देवालय नहीं हैं? यदि उनका नाश हुआ तो भी अपना ही नाश होगा। जहां सर्व हिन्दू-जाति के सुख-दुःख का प्रश्न है वहां तो हमें पेशावर से महारवाड़े के हिन्दू की झोंपड़ी को रामेश्वर नगर की सीमा तक स्थित हिन्दू-घर के समान समझना चाहिए। क्या आज अरनाड के हिन्दू पर आया संकट कुट्टम के लोगों के लिए संकट नहीं होगा? अरनाड के मुसलमानों ने तुम हिन्दुओं की पुत्रियों का अपहरण किया है, तुम्हारी मूर्तियां भ्रष्ट की हैं, यह बात जब कोई मुसलमान कहता है तो क्या हमारे मुख पर लज्जा से कालिमा नहीं पुत जाती? वस्तुतः वह हमारे ही मुख पर जड़ा गया तमाचा

है। किन्तु ये बातें छोड़िये, मुझे क्षमा करना, मैं आपको स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहता हूँ, मुझे निष्ठुर कर्त्तव्य के कारण यह कठोर बात कहने पर विवश होना पड़ रहा है कि एकाध कांचनलता के समान मोहक तथा प्राणों सरीखी प्रिय, ऐसी जो आपकी कन्या अभी पुष्प-वाटिका से आपके घर की ओर गई है, महाराज! उसके पवित्र सम्मान और जीवन की होली न जलने पाए यदि आपकी ऐसी इच्छा हो तो आप समय रहते सावधान हो जाइए।''

हरिहर शास्त्री का मस्तिष्क ही चकरा उठा। परन्तु मानव स्वभाव बड़ा ही चामत्कारिक है कि अपना अपमान तो वह सहन कर पाता है। किन्तु यदि उसका कोई नाम लेकर अपमान करे तो वह सहन नहीं कर पाता। अपनी प्रिय, सुन्दर तथा सुशिक्षित कन्या का नाम लेकर इस कम्बु थिय्या ने इतनी भयंकर भविष्यवाणी की थी, उससे उन्हें अत्यधिक विषाद का अनुभव हुआ। वह हतप्रभ से हो गये थे। अब उनके मुख पर चिन्ता की रेखाएं उभर आई थीं। किन्तु उन्होंने पुनः अपने विवेक को संवारा और बोले, ''कम्बु! तो बता इस अन्याय के प्रतिकार का उपाय क्या है? बोल क्या किया जाए? आजकल क्या हिन्दू-मुलसमानों में एकता स्थापित नहीं हो गई है? खिलाफत को हिन्दुओं ने अपने धर्म के समान ही अपना प्रश्न बना लिया है। मुसलमान भी अपने वचनों का पालन करेंगे। क्या ऐसा नहीं होगा? परन्तु तुम कहते हो कि विद्रोह होगा। भला यह विद्रोह हिन्दुओं के विरुद्ध किसलिए किया जाएगा? बताओ न?''

''महाराज! इस भावी अनर्थ का प्रतिकार किस प्रकार किया जाए, यदि इस सम्बन्ध में विचार करना हो तो उसका प्रथम उपाय यह है कि हम इस विचार का परित्याग करें कि हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य स्थापित हुई यह एकता हिन्दुओं की सुरक्षा की पोषक है। आपने जो वाक्य कहा है, उसका पूर्वार्द्ध ही सत्य है कि हिन्दुओं ने खिलाफत के प्रश्न को अपने धार्मिक प्रश्न के समान ही समझा है, किन्तु आपके वाक्य का उत्तरार्ध अवास्तविक है। इसका कारण यह है कि हिन्दुओं ने खिलाफत के प्रश्न को अपना प्रश्न बना लिया है। अतः मुसलमान भी हिन्दुओं के किसी शब्द की उपेक्षा नहीं करेंगे, आप ऐसा न मानकर यह समझ लीजिए कि हिन्दू अपने वचनों से कदापि विमुख नहीं होंगे, परन्तु मुसलमानों के बारे में यही कहना उपयुक्त प्रतीत नहीं होता है। इस सत्य स्थिति से हिन्दुओं को परिचित कराना आवश्यक है, जिससे वे असावधानी का परित्याग कर आने वाले संकट का सामना करने के लिए सन्नद्ध हो सकें। प्रतिकार का पहला उपाय यही है। किन्तु यह उपाय ही

अन्तिम उपाय नहीं है। क्योंकि हिन्दुओं के आधार पर मुसलमानों ने इस विद्रोह की सिद्धता नहीं की है। वे साथ आएं अथवा न आएं, खिलाफत आन्दोलन चलाया ही जाएगा, यही उनकी युद्धगर्जना है ! अतः दूसरा त्वरित उपाय जिसको अपनाया जाना आवश्यक है, वह यह है कि हिन्दुओं को स्वसंरक्षणार्थ तत्काल पृथक् निर्णय करना होगा। यह काम तत्काल आरम्भ कर दिया जाना चाहिए। वह मौलवी दो-तीन दिन में ही अरनाड होकर वहां होने वाली मुख्य सभा में यह प्रतिवेदन देगा कि कुट्टम ग्राम के थिय्या लोग स्वेच्छा सहित मुसलमान होने को तैयार नहीं हैं। अन्य जातियों से तो यह बात कही ही नहीं जाएगी। कुट्टम ग्राम का नाम भी उनके द्वारा उस सूची में सम्मिलित कर लिया जाएगा जिनकी सूची इस दृष्टि से बनाई गई है कि विजय के उपरान्त वहां की जनता को बलात् मुस्लिम धर्म स्वीकार कराया जाएगा और उनकी सम्पूर्ण सम्पत्ति को काफिरों की समझकर लूट लिया जाएगा। इस व्यवस्था के अनुसार हिन्दू स्त्रियाँ भी धर्मवीरों की न्यायसिद्ध लूट का माल बनेंगी। यह भी सुनिश्चित है कि इस लूट में इस पवित्र, निरपराध व लावण्यवती कन्या को वह नीच मौलवी अपने हिस्से में लेगा। महाराज, क्रोध न कीजिएगा। मुझ पर क्रोधित न हों, यदि क्रोध करना ही है तो उन नीचों के प्रति कीजिए जो पापकर्म की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। मैंने तो समय से पूर्व ही दुष्टता-पूर्ण कृत्य की सूचना और उसके परिणामों और उनसे बचने के सम्बन्ध में आपको सूचित कर दिया है। मेरी बातों की उपेक्षा न कीजिएगा, अपितु उन पर विचार करके इस संकट का सामना करने और अन्यायियों से प्रतिशोध लेने की तैयारी कीजिए।''

''कम्बु, तुम जैसा चाहते हो वैसा ही होगा। चलो, बता कि किस प्रकार से कार्य आरम्भ किया जाए।''

''ठीक है महाराज, सर्वप्रथम मैं अरनाड जाऊंगा जहां मुसलमानों का मुख्य केन्द्र है और वहां के मुस्लिम नेताओं ने कतिपय हिन्दू-नेताओं को भी स्वराज्य और एकता का झांसा देकर चीनी में विष मिलाकर खिलाने जैसा उपक्रम किया है। सर्वप्रथम मैं उन भ्रमित हिन्दुओं को वस्तुस्थिति से अवगत कराने का प्रयत्न करूंगा। यदि वे सही मार्ग पर आ गए तो बहुत अच्छा, अन्यथा आपको कुट्टम ग्राम के हिन्दू तरुणों को धर्मरक्षणार्थ सुसज्जित करना होगा। थिय्याओं में से भी अनेक तरुण इस कार्य के लिए तैयार हैं।''

इसी बीच कम्बु के साथ आया थिय्या युवक बोल उठा, ''हां, हां, हम हिन्दू-धर्म की रक्षार्थ आत्मबलिदान देने को भी सन्नद्ध हैं।''

"आप पाण्डव शिविर के समान इस ब्राह्मणागार में निश्चिन्त पड़े बन्धु-बान्धवों को सावधान कीजिए, मैं भी अरनाड से वापस आने के उपरान्त आप से पुनः भेंट करूंगा।"

इधर उनकी यह वार्ता चल रही थी तो दूसरी ओर सुमति जो अपने घर के मार्ग में कुछ समय तक खड़ी रही थी, धीरे-धीरे शास्त्री जी की दृष्टि उस पर न पड़े, इस सम्बन्ध में पूर्ण सतर्कता बरतती हुई आगे बढ़ती आ रही थी। और ऐसे स्थान पर आकर खड़ी हो गई थी जहां से उसे उनकी पूरी वार्ता तो सुनाई नहीं पड़ रही थी किन्तु अस्पष्ट रूप से वह उसे सुन पा रही थी। वह ऐसे स्थान पर एक नारियल वृक्ष की आड़ लेकर चुपचाप खड़ी हो गई थी जहां से वह उन थिय्यों को स्पष्टतः देख सकती थी। उसे धीरे-धीरे आगे आते हुए उस थिय्या तरुण ने भी देख लिया था। उसने भी उसे अपनी ओर निहारते देखा था। उसने उसके निर्भीक शब्दों को भी सुना था। उसके मन में सहसा ही यह विचार कौंध गया था कि शरीर-रचना की दृष्टि से तो इस थिय्या तरुण की तुलना में किसी ब्राह्मण तरुण का भी ठहर पाना कठिन है। किन्तु भला इसमें अस्पृश्य समझे जाने वाली कौन-सी बात है? जाति रूप में ऐसी क्या भिन्नता है? परन्तु जो ब्राह्मण और क्षत्रिय सर्पों तक को भी पालते हैं वे इनके प्रति इतनी निष्ठुरता का व्यवहार क्यों करते हैं? अपने हृदय में ऐसे सहानुभूतिपूर्ण विचार रमाए सुमति ने बड़ी ही सावधानी सहित उस थिय्या तरुण पर दृष्टिपात किया और उस तरुण की दृष्टि भी उनकी ओर गड़ गई। उस तरुण के मन में भी यह विचार आया कि उसके साथ वार्तालाप करे। उसकी दृष्टि में ऐसी ही सहानुभूति की रेखा को पुनः देख पाने के लिए उसने मन ही मन यह निश्चय किया कि वह किसी भी महान् कार्य के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर कर देगा।

इधर कम्बु और शास्त्री महोदय में चल रहा वार्तालाप समाप्त हो गया और कम्बु ने साष्टांग दण्डवत् कर शास्त्री महोदय से विदाई ली। उस थिय्या तरुण ने भी चलते-चलते पीछे की ओर निहारा तो उस ब्राह्मण कन्या की वही सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि पुनः उस पर पड़ी। वह भी वृक्ष की आड़ लेकर खड़ी हुई थी। उसके मन में भी सान्निध्य की इच्छा थी और वह युवक की आशा के अनुरूप ही सुन्दर थी।

हरिहर शास्त्री भी धीमी गति से अपने घर की ओर चल पड़े। उनके मन को यही विचार परेशान कर रहा था कि उनकी नानी के साथ जितना भयंकर अत्याचार हुआ था, क्या उनकी अपनी प्रिय पुत्री भी उसी प्रकार के अत्याचार

की भेंट चढ़ जाएगी ! छी: ! इन सब विचारों को अपने हृदय में घुलाते रखने का धैर्य वे अब नहीं संजो पा रहे थे। उस वन से वापस जाते हुए वह पुनः उस स्थान से होते हुए अपने घर की ओर जा रहे थे जहां स्मृति-शास्त्रों में प्रदक्षिणा में दो पैरों में कितने अन्तर की व्यवस्था की गई है इस सम्बन्ध में शास्त्री-मण्डली में विवाद चल रहा था। उस वाद-विवाद में अब बड़ी गर्मी आ चुकी थी। किन्तु शास्त्री महोदय को वह वाद-विवाद अब बड़ा कर्कश लग रहा था। और अब इस वाद-विवाद ने उनके भय को मानो द्विगुणित कर दिया था। और उन्हें लग रहा था कि कहीं कम्बु ने जो कुछ कहा है, वही तो सही सिद्ध नहीं होगा।

❑

3

कालीकट के एक विस्तीर्ण बंगले में खिलाफत मण्डल की हिन्दू शाखा की सभा आयोजित की गई थी। पंजाब से खिलाफत-आन्दोलन के एक प्रमुख सूत्रधार अल्लाबख्श मलाबार के दौरे पर आए हुए थे। ग्राम के हिन्दू-मुसलमानों ने उनका प्रचण्ड स्वागत भी किया था। उस सभा में हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये हिन्दुओं को क्या करना चाहिए, इस विषय पर अल्लाबख्श का बड़ा ही प्रभावशाली भाषण हुआ। इतना अधिक प्रभावशाली था वह कि यहां उसकी शोभायात्रा निकाले जाते समय हिन्दुओं ने उसकी गाड़ी में से घोड़ों को हटा कर स्वयं उनके स्थान पर लग कर गाड़ी को खींचा। इस शोभायात्रा में सहसा ही किसी ने 'वन्दे मातरम्' का जयघोष लगा दिया, किन्तु उस भले आदमी को ऐसा एक भी मूर्ख तथा अनुदार हिन्दू न मिल पाया जोकि उसकी इस ध्वनि में अपने ध्वनि मिला पाता। मुसलमानों ने, इस शब्द का उच्चारण ही क्यों किया गया है, ऐसी आपत्ति उठाकर अपनी शान्तवृत्ति का परिचय दिया। उसी समय हिन्दू नेताओं ने ही यह आज्ञा दी कि सभी को 'अल्ला हो अकबर' का जयघोष लगाना चाहिये, जिससे कि संसार को यह दिखाया जा सके कि हिन्दू-मुसलमानों की एकता किस प्रकार सुदृढ़ होती जा रही है।

शोभायात्रा की समाप्ति पर रामनारायण नम्बूद्री, माधव नायर, सीताराम चेट्टी इत्यादि हिन्दू नेता अल्लाबख्श सहित बंगले पर एकत्रित हुए। कालीकट में खिलाफत-आन्दोलन के प्रमुख पुरस्कर्त्ता महानन्दी अय्यर भी वहां उपस्थित थे। अत: उन्हें सभा का अध्यक्षीय आसन प्रदान किया गया। उन्होंने कहा कि

आज के व्याख्यान का कालीकट नगर के निवासियों पर जो प्रभाव हुआ है उसका त्वरित लाभ प्राप्त करने की दृष्टि से खिलाफत-आन्दोलन को बढ़ाने के लिए हिन्दुओं को किस प्रकार और क्या प्रयत्न करने होंगे इस विषय पर ही विचारार्थ इस सभा का आयोजन किया गया है।

माधव नायर ने कहा, ''स्वराज्य और खिलाफत-आन्दोलन के लिए यह वाक्य प्रस्ताव में सम्मिलित किया जाना चाहिए।''

उनकी इस सहेतुक उद्दण्डता से चिढ़कर मौलाना ऐटखान बोले, ''स्वराज्य खिलाफत से पहले! हिन्दू को मुसलमान पर प्रमुखता। यदि इस प्रस्ताव में ऐसा ही उल्लेख किया जाना है तो मैं इस सभा से उठकर चला जाता हूँ।''

माधव नायर ने अत्यधिक लज्जित होते हुए कहा, ''क्षमा कीजिए, मौलवी जी! मेरा आपकी धार्मिक भावना को ठेस लगाने का किंचित् मात्र भी इरादा नहीं था, यदि आपकी धार्मिक भावना पर ठेस लगती है तो प्रस्ताव में आप खिलाफत व स्वराज्य का आन्दोलन ऐसा उल्लेख कर दीजिए।'' मौलवी ऐटखान बोला, कदापि नहीं। यह स्वराज्य का अड़ंगा तुम केवल इसीलिए प्रस्ताव में लगाना चाहते हो, क्योंकि हमारी खिलाफत तहरीक पर तुम्हारा विश्वास नहीं। यह मुसलमानी धर्म तथा जाति का अपमान है।''

उसी समय बड़ी ढिठाई का प्रदर्शन करता हुआ एक तेजस्वी महापुरुष उठा और बोला, ''परन्तु मौलाना साहब! खिलाफत यह संस्था और आन्दोलन मुसलमानों का है, फिर भी हिन्दू लोग उसको अपना समर्थन प्रदान कर रहे हैं तो भला हिन्दुओं के स्वराज-आन्दोलन को मुसलमान इतना अपमानजनक क्यों मानते हैं?''

''तू मूर्ख है!'' ऐटखान ने बड़ी अकड़ के साथ कहा, ''खिलाफत यह हमारा धर्म भी है। उमर से पहले, अब्बास से पहले प्रत्यक्ष पैगम्बर के साथ ही साथ खिलाफत का भी जन्म हुआ था। परन्तु तुम हिन्दुओं का यह स्वराज का आन्दोलन तो आजकल ही पैदा हुआ है, नवीन हैं, इसलिए इनकी समानता करना अपमानजनक है।''

'स्वराज का आन्दोलन नवीन नहीं' एक व्यक्ति ने कहा, ''मुहम्मद पैगम्बर से भी पूर्व इसे विक्रम ने चलाया था, कृष्ण ने संचालित किया था, रामचन्द्र...''

बस! बस। उस काफिर का नाम न लो। पैगम्बर व कृष्ण! एक ही श्वास में इन दोनों के नाम का उच्चारण। यह पैगम्बर का अपमान है। चुप! नहीं तो तेरी जीभ खींच लूंगा।'' यह कहते हुए मौलवी ऐटखान उस हिन्दू की ओर

बढ़ने लगा।

''हां, हां'' कहते हुए उपस्थित मण्डली के अनेक लोग बीच में आ गए। अध्यक्ष महानन्दी उठकर बोले, ''मौलवी जी, शान्त हो जाइये। मैं सभी हिन्दुओं की ओर से उस मनुष्य की उद्दण्डता के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। हे उद्दण्ड मनुष्य! यह सभा अनत्याचारी असहकारवादी लोगों की है, इस बात को तू क्यों विस्मृत कर रहा है? यहां तूने अपने मुसलमान बन्धु से ऐसा अत्याचार का व्यवहार किया है यह बात हिन्दू-धर्म के लिये लांछनास्पद है। मैं यह निर्णय देता हूँ कि प्रस्ताव में ''खिलाफत-आन्दोलन'' इन्हीं शब्दों का उल्लेख किया जाएगा। ''ठीक-ठीक'' हाथों में माला लिये शान्तिपूर्वक बैठा हुआ एक मौलवी बोल उठा, यह ठीक है। अपने प्रिय हिन्दू बन्धु के लिए हम अपने प्राण दे देंगे। दोनों का उद्देश्य एक ही शब्द में व्यक्त हो गया है, यही अपनी एकता को भी शोभा देता है। फिर खिलाफत में स्वराज्य भी है परन्तु स्वराज्य में खिलापत भी है, ऐसा नहीं है अतः महानन्दी ने योग्य निर्णय दिया है। वस्तुतः महानन्दी एक महापुरुष हैं।''

''वे एक बड़े ही सच्चे हिन्दू हैं।'' सभा में एक स्वर से ये वाक्य गूंज उठा।

''खाली आशीर्वाद किसी काम का नहीं। खिलाफत के लिए हिन्दू लोग क्या कभी प्रत्यक्ष सहायता देते हैं, उसी से मुसलमान यह परखेंगे कि एकता की इस भाषा में कितनी सत्यता है।'' मौलाना ऐटखान ने आक्रोश सहित अपनी फरफराती हुई दाढ़ी को हाथ से संवारते हुए कहा, ''हमने खिलाफत के लिए मोपला लोगों को पृथक् संगठित किया है। परन्तु मोपले निर्धन हैं, और उनके धन का हरण हिन्दू जमींदारों ने किया है, अतः मैं यह कहना चाहता हूँ कि इन स्वयंसेवकों पर किए जाने वाले सम्पूर्ण व्यय का भार हिन्दुओं को अपने ऊपर लेना पड़ेगा।''

''उचित ही तो है।'' महानन्दी बोल उठे।

''मेरा ऐसा सुझाव है कि इन स्वयंसेवकों का अधिकारी कोई हिन्दू गृहस्थ होना चाहिए।'' माधव नायर ने कहा।

''क्यों, क्या, तुम्हें मुसलमानों पर अविश्वास है? मुसलमानों के ऊपर हिन्दू अधिकारी? यह तो मुसलमानों के धर्म का अपमान है। मुसलमान गुलाम बनने के लिए नहीं पैदा हुए! उनका जन्म तो राज्य करने के लिए ही हुआ है!''

''क्षमा कीजिए, मौलाना साहब! मेरे कथन का तात्पर्य यह नहीं था।''

किसी पिटे हुए व्यक्ति के समान घिघियाते हुए माधव नायर ने कहा। वह बोले, ''यदि आपकी धार्मिक भावना को चोट लगती है तो मैं यह सुझाव देता हूँ कि इन स्वयंसेवकों अथवा सैनिक मुसलमान अधिकारियों के नेतृत्व में हिन्दू स्वयंसेवक भी सम्मिलित हों।''

ऐटखान ने कहा, ''कदापि नहीं, खिलाफत-आन्दोलन का संचालन मुसलमान स्वयंसेवकों द्वारा ही किया जाए, यही हमारा धर्म है। उमर से पहले, अब्बास से भी पहले, पैगम्बर के ही समय से मुसलमानी खिलाफत रक्षण का कार्य मुसलमान ही करते आए हैं, ऐसा ही हुकुम है। काफिरों से केवल जजिया लिया जाए किन्तु प्रत्यक्षतः स्वयंसेवक के रूप में उन्हें कदापि न शामिल किया जाये।''

''परन्तु!'' माधव नायर तनिक आग्रह करते हुए बीच में ही बोल उठे। उन्हें पुनः डांटते हुए ऐटखान गरजा, 'चुप, तू मूर्ख है।'

''खिलाफत का रक्षण करने के लिए मुसलमान ही स्वयंसेवक होंगे, यही हमारा धर्म कहता है, तूने सुना नहीं क्या! तेरा सुझाव नवीन है, साथ ही हमारा इससे अपमान भी होता है। हमारे धर्म के विरुद्ध कोई भी कुछ कहेगा तो हम उसकी जीभ खींच लेंगे।'' ऐसा कहते हुए मौलवी इस मण्डली से उठकर जाने लगा। उसी समय आप क्यों जाते हैं, आप क्यों जा रहे हैं, की गुहर लगाते हुए मण्डली के कई व्यक्ति खड़े हो गए। अध्यक्ष महानन्दी ने खड़े होकर कहा, ''शान्त हों मौलवी जी! माधव नायर का सुझाव निश्चित रूप से ही अपने मुसलमान बन्धुओं पर हिन्दुओं का अविश्वास व्यक्त करने वाला है। मुसलमान तो गुलाम होने के लिए जन्म ही नहीं लेता । यह मुसलमान की वाणी निश्चय ही अभिनन्दनीय है। माधव नायर! यहां जो लोग एकत्रित हुए हैं वे सभी अनत्याचारी और असहकारितावादी हैं। इस पर भी तुमने अपने शब्दों से मौलवी साहब का दिल दुखाया है, क्या यह बात तुम्हारे लिये शोभा देती है? मैं यह निर्णय देता हूँ कि हमारे मुसलमान बन्धुओं को खिलाफत रक्षण के लिये स्वयंसेवकों का पृथक् गठन करने का पूर्ण अधिकार है और इन पर होने वाला वह सम्पूर्ण खर्च, जिसे इन मौलवी साहेब ने जजिया कहा है, हिन्दू ही वहन करेंगे।''

'ठीक! ठीक!' हाथ में माला लेकर बैठे हुए उस शान्त मौलवी ने कहा 'यह ठीक है, परन्तु मैं अपने परम प्रिय हिन्दू बन्धुओं के इस प्रेम से मोहित हो गया हूँ। मैं यह सुझाव देता हूँ कि हिन्दुओं द्वारा मुसलमानों को जो धन दिया

जायेगा उसे जजिया न कहते हुए 'वर्गणी' कहे जाने की उदारता प्रदर्शित की जानी चाहिए।''

''मौलवी एक महान् पुरुष हैं। मौलवी हम हिन्दुओं के हितैषी हैं।'' सभा में उपस्थित हिन्दू एक स्वर से बोल उठे।

'मौलवी मेरे सगे भाई हैं।' महानन्दी बोला, 'और उनकी इस नितान्त उदारता से उऋण होने के लिए मैं यह निर्णय देता हूँ कि यदि हिन्दुओं से मोपला स्वयंसेवकों के लिए खर्च किए जाने वाले पर्याप्त धन की प्राप्ति न हो पाये तो हमारे मुसलमान बन्धुओं को धन की वसूली के लिये प्रत्येक शक्य उपाय व्यवहार में लाने का अधिकार है।'

'स्वीकार है, स्वीकार है।' उपस्थित हिन्दू-जनों के कण्ठों से समवेत स्वर गूंज उठा।

'महानन्दी निश्चय ही महापुरुष हैं।' मुसलमान बोल उठे।

उस शान्त मौलवी ने भी कहा, 'महानन्दी मेरे बड़े भाई हैं।'

'परन्तु मेरा यह निवेदन है कि इस निर्णय पर हिन्दुओं को भली-भांति विचार कर लेना चाहिए। प्रत्येक शक्य उपाय द्वारा मुसलमानों को हिन्दुओं से धन वसूल करने का अधिकार होगा, इसका तात्पर्य क्या उनके घर लूटे जाएंगे ? क्या उनकी देवमूर्तियां भी—'

'ये काफिर हैं। पकड़ो साले को। गिरा दो।' ऐसा कहते हुए मौलवी ऐटखान ने अपने साथियों को उस व्यक्ति पर भूखे सिंह के समान टूट पड़ने को कहा। महानन्दी यह दृश्य देखकर चिढ़ गया और तेजस्वी महापुरुष की ओर देखते हुए बोला, ''यह अनत्याचारी लोगों की सभा है। यहां लूटमार का नाम भी अपने मुख से न निकालना। हमारा अपने मुसलमान बन्धुओं पर विश्वास है, वे जो भी करेंगे ठीक ही करेंगे।'' इस प्रकार के वाक्य सुनते हुए भी इस गड़बड़ से किंचित् मात्र भी न घबराते हुए वह व्यक्ति बोला, ''अहा, जो लूटमार शब्द का उल्लेख करता हो तो वह तो अत्याचारी है, किन्तु जो लूटमार करता है वह क्या है ?'' इस वाक्य को सुनकर तो वह शान्ति सहित बैठा हुआ मौलवी खौल उठा। सीताराम चेट्टी उस मौलवी के पास पहुंचा और उस व्यक्ति से कहने लगा। ''नीच, तुम हिन्दु-मुसलमान एकता को बिगाड़ रहे हो। लूटमार का नाम और इस सभा में ?'' उसने उस व्यक्ति को जोर का एक आघात लगाते हुए कहा 'क्या तुझे विदित नहीं है कि हम अनत्याचारी, असहकारितावादी हैं ?'

उसी समय नारायण नम्बूद्री ने भी उस व्यक्ति पर एक लात ठोक दी और बोला, ''क्या तुझे पता नहीं है कि सीताराम चेट्टी अनत्याचारी हैं?''

वह मौलाना ऐटखान भी वहां पहुंच गया और उसने उस व्यक्ति की गर्दन को अपने हाथ से पकड़ लिया तथा बोला ''काफिर! क्या तुझे पता नहीं है कि नारायण नम्बूद्री अनत्याचारी, असहकारवादी हैं?''

अब उस व्यक्ति की सहनशीलता की अति हो गई। उसने दाव लगाकर अपनी गर्दन मौलाना की पकड़ से छुड़ा ली और उसकी आक्रोश से फड़फड़ाती हुई दाढ़ी को एक हाथ से दबा लिया और दूसरे हाथ से उसके श्रीमुख पर चपत जड़ने आरम्भ कर दिए। उसी समय उसके साथ खड़े हुए तरुण ने भी उछल कर उस मौलवी को उठाकर धरती पर पटक दिया। तभी उस सभा में उपस्थित अनेक हिन्दू उन दोनों व्यक्तियों पर टूट पड़े तथा उन पर लात-घूंसे बरसाने लगे और प्रहार करने लगे। वे दोनों रक्त से लथपथ हो गए, परन्तु उन्होंने उस मौलवी को अपनी पकड़ से मुक्त नहीं होने दिया। थोड़ी देर बाद उन दोनों तथा अन्य लोगों के खड़े हो जाने से जिनमें महानन्दी भी सम्मिलित था, सभा में कुछ शान्ति हुई। महानन्दी ने आज्ञा दी कि उन दोनों व्यक्तियों को उनके अत्याचारी व्यवहार के कारण सभा से बाहर निकाल दिया जाये।

माधव नायर ने कुछ धीमी आवाज में कहा ''परन्तु वस्तुतः पहले तो उस पर मौलवी ने ही हाथ उठाया था।''

'चुप रहो'! मौलाना चीखता हुआ बोला। किसी भी नास्तिक अथवा मूर्तिपूजक पर प्रहार करना हमारा धर्म है। उमर से पहले, अब्बास से भी पहले, प्रत्यक्ष पैगम्बर ने कुरान में यह हुकुम दिया है कि पैगम्बर पर ईमान न लाने वाले मूर्ति-पूजकों से कभी प्रेम न करना। आघात करना यह तो मुसलमानों का कर्त्तव्य है, किन्तु प्रत्याघात करने की जिस नवीन रुढि को हिन्दुओं ने अपनाया है, यह मुसलमानी धर्म का अपमान है। यह सभा काफिरों की है, अतः मैं इससे बहिर्गमन करता हूँ। कारण यह है कि तुम सभी इन्हीं दोनों के धर्म को मानते हो। इनको जान से क्यों नहीं मार डालते?

'रुकिये मौलवी जी। मैं इन्हें जान से मार देता हूँ।' रामचन्द्र चेट्टी बोले 'पाजी कहीं के। हिन्दू-मुसलमानों की एकता में विघ्न डाल रहे हो? हम अनत्याचारी असहकारियों पर कलंक लगाते हो?'

परन्तु मौलाना इतना अधिक आतंकित हो गया था कि अब उसका साहस पुनः उन दोनों के समीप जाकर अपनी ढिठाई प्रदर्शित करने का नहीं हो पा रहा

था। वह धीरे-धीरे उस सभा से निकल कर चल पड़ा। उसी के साथ-साथ ही माला हाथ में लेकर बैठा हुआ मौलवी भी सभा से खिसकता दिखाई दिया। किन्तु उस व्यक्ति ने मौलवी को द्वार में ही रोक लिया और अपने बदले हुए वेश का परित्याग कर उससे बोला 'मुझे पहचाना कि नहीं ?' मौलवी आश्चर्यचकित हुआ बोला, अरे क्या तू कम्बु है ? कम्बु बोला, 'हां। और तू तो वही मौलवी है न जो हम थिय्याओं को मुसलमान हो जाने पर ब्राह्मणों, क्षत्रियों और नायरों की कन्यायें बांट कर देने का दावा करता है।'

❑

4

तिरूरंगाड़ी नामक ग्राम की मुख्य मस्जिद में अली मुसेलियर बैठा हुआ था। उसके आसपास हाथों में भाले और तलवार आदि लिये हुए सैकड़ों मोपलों का समूह भी विद्यमान था, जिनमें से कुछ के पास बन्दूकें भी थीं। उनसे कुछ ही दूरी पर मोपलों की स्त्रियां, बालक तथा अन्य लोग एकत्रित थे। वे सभी बीच-बीच में 'अल्ला हो अकबर' की गर्जनाएं कर रहे थे। उनमें से कई को घाव भी लगे हुए थे जिनसे रक्तस्राव हो रहा था तो कई विह्वल भी पड़े हुए थे। अली मुसेलियर के समीप ही रक्त से सरावोर हुए तीन लोगों के शव पड़े हुए थे। बड़ी ही उतावली सहित अली मुसेलियर बोला, 'कासिम, तुम उन काफिरों को अभी तक लाये कि नहीं ?' अल्ला तू यशस्वी है, तूने हम मुसलमानों को पहली विजय प्रदान की है, मैं तेरा अनन्त उपकार मानता हूँ। इस अंग्रेजी राज्य की बोटियां उड़ा दी गई हैं। इस अरनाड तालुके में आज कोई कचहरी अछूती नहीं बची, कोई गोरा चेहरा भी अब दिखायी नहीं देता। बस, यारो अंग्रेजी राज्य खत्म हो गया है। अल्ला हो अकबर।'

'अल्ला हो अकबर! यारो, परन्तु अभी भी काफी काम करना बाकी है।' वह मौलवी, जिससे आप पहले से ही परिचित हो चुके हैं, बोल उठा। उसने यह भी कहा 'आप किस कारण इस अंग्रेजी पुलिस के रक्त से स्नान कर पाने में सफल हो पाए हैं ? तो खिलाफत के कारण, परन्तु ये अंग्रेजों की पुलिस में हैं कौन ? देखो ये हैं काफिरों के शव—'ऐसा कहते हुए उस मौलवी ने अली मुसेलियर के पैरों के समीप पड़े हुए सिपाहियों के शव में से एक पर से सिर काट लिया और चोटी से उसे पकड़ कर लटकाये हुये बोल उठा, 'यह देखो, इन अंग्रेजों के सिपाही कौन हैं ? यह है काफिरों द्वारा स्त्रियों के समान रखी

जाने वाली चोटी! यह दूसरा सिपाही, हाँ, देखो इसकी भी चोटी है! यह तीसरा काफिर है और देखो इसके सिर पर भी चोटी है।'' किन्तु जब उसने उस तीसरे शव का शिरच्छेदन किया और उसकी चोटी खोजने का प्रयत्न किया तो उसे नरमुंड में चोटी कहीं दिखाई ही नहीं दी। कारण यह था कि वह तीसरा सिपाही मुसलमान था। किन्तु फिर भी मौलवी खीजता हुआ बोल उठा, 'यह भी हिन्दू ही है! ये हिन्दू लोग भी अंग्रेजों के समान ही हमारे शत्रु हैं। ये अंग्रेजों के आदेशानुसार ही मोपलों पर गोलियां बरसाते हैं। कोई मुसलमान अंग्रेजों के देवताओं के कहने पर भी मुसलमानों पर गोली वर्षा नहीं कर सकता, उनके विरुद्ध नहीं लड़ सकता।' सभा में एक जोरदार आवाज गूंज उठी 'कभी नहीं, सभी मुसलमान एक हैं। मुसलमान मुसलमान के विरुद्ध कभी नहीं लड़ सकता, लड़ता भी नहीं है और लड़ेगा भी नहीं।'

सभा में हुए इस शोरगुल से और अधिक प्रोत्साहित होकर मौलवी बोला, 'कभी नहीं, खलीफा के जर्मनी के साथ मिल जाने के कारण सभी मुसलमान अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खड़े हुये हैं। अंग्रेजों को एक भी मुसलमान सिपाही तुर्कों के विरुद्ध लड़ने के लिए नहीं मिल पाया।'

'एक भी नहीं मिलेगा।' सभा में गर्जना हुई।

अंग्रेजों ने जो हजारों पठान हिन्दुस्तानी मुसलमानों से लड़ने के लिए भेजे थे, उन सबने लड़ने से इन्कार कर दिया है।'

'सभी ने' लोग चिल्ला उठे।

'जो मुसलमान तुर्कों के विरुद्ध लड़ रहे थे वे भी सब के सब तुर्कों के साथ मिल गये हैं।'

'सभी तुर्कों के साथ मिल गए हैं' सभा में स्वर गूंज उठा।

'इस प्रकार अंग्रेजों के शिविर में अब औषधिमात्र के लिए भी एक मुसलमान ढूंढा नहीं मिल पाता है। अन्ततः अंग्रेज की पराजय हुई। खलीफा इंग्लैंड तक जा पहुंचे हैं।'

'लन्दन तक!' सभा में गर्जना हुई।

जर्मन तुर्कों का मित्र हो गया, परन्तु वह ईसाई था। उसे अनवर पाशा ने कहा 'आज तक हमने तुम्हारी सहायता की है, परन्तु अब यदि तू मुसलमान होगा तो दोस्ती कायम रहेगी। नहीं तो आधे मिनट में ही तेरे बर्लिन नगर को धूल में मिला दिया जाएगा।' तब कैसर बोला 'तुम जो कह रहे हो, वही बात सत्य है। परमेश्वर ने यही आज्ञा दी है कि मुसलमान सभी गैर-मुसलमानों से

अधिक बलशाली हैं। सुरतुल-मुजादिक इस अध्याय में कुरान में यही कहा गया है अतः तुम बर्लिन का नाश न करो, मैं मुसलमान बनता हूँ।' ऐसा कहते हुए कैसर मुसलमान हो गया।

'कैसर मुसलमान हो गया है।' सभा में नारा गूंज उठा।

'और कैसर का अनुकरण करते हुए अमरीका का जार भी मुसलमान हो गया है।'

'अमरीका का जार भी मुसलमान हो गया है' एकत्रित जनसमुदाय गरज उठा।

'और अमरीका के जार तथा कैसर इनको अपने दाएं-बाएं हाथ की ओर खड़ा करके अनवर पाशा ने फ्रांस की मस्जिद में नमाज पढ़ी।'

'अनवर-पाशा ने नमाज पढ़ी। अवनर-पाशा बड़ा पक्का मुसलमान है। वह रोज दारू पीता है तो इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं।' सभा में लोग गरज उठे।

'अब जितने भी टोपीवाले हैं, सभी मुसलमान हो चुके हैं। अब केवल अंग्रेज तथा इन अंग्रेजों का अन्न खाने वाले उनकी सेना में भर्ती होकर हमसे लड़ने वाले हिन्दू ही अपना काफिरपना त्यागने के लिए तैयार नहीं हैं।'

'उन्हें काफिरपना छोड़ना ही होगा। वे अमरीका के जार से अधिक शक्तिशाली तो नहीं है। उनके दांत तोड़ दिए जाएंगे।' सभा गरज उठी।

'मलाबार में अंग्रेजों का राज्य उलट देने वाले वीरो! अब यह कार्य तुम्हें अपने हाथों में लेना होगा।'

इस वाक्य के सुनते ही एक तुमुल गर्जना सभा में हुई—'अल्ला हो अकबर' पकड़ो हिन्दू को! मारो हिन्दू को! मुसलमान बनाओ काफिर को!' उसी समय कासिम ने अली मुसेलियर से कहा, 'हुजूर! ये देखिये, वे काफिर पकड़ कर लाये गये हैं।' अली मुसेलियर उतावली सहित बोले, 'उनको इधर ले आओ।' उसी समय छः सशस्त्र मोपलों के पहरे में चार हिन्दू गृहस्थ अली मुसेलियर के समक्ष लाकर खड़े कर दिए गए। ये कौन थे?'

इनमें से पहला गृहस्थ था महानन्दी, दूसरा माधव नायर, तीसरा रामचेट्टी और चौथा नन्दीदत्त। कालिकट में खिलाफत सम्बन्धी सभा में किये गये निश्चय के अनुसार ये चारों ही हिन्दू नेता अरनाड तालुके के हिन्दुओं से आन्दोलन के लिए चन्दा एकत्रित करते हुए घूम रहे थे। तभी तिरूरंगाडी में दंगा आरम्भ हो गया और मुसेलियर को बन्दी बनाने के लिये सरकार द्वारा सिपाहियों की एक

टुकड़ी भेजी गई। परन्तु मोपले सहसा ही तलवारें खींचकर इन सिपाहियों पर टूट पड़े। उनमें से कुछ मारे गये और कुछ वापस लौट गए। इस वार्ता के विजय के समान प्रचारित होते ही यत्र-तत्र मोपलों ने विद्रोह आरम्भ कर दिया। एक अठवाड़े की अवधि में ही एक प्रकार से सम्पूर्ण अरनाड तालुके पर मोपलों का अधिकार ही हो गया। उस तालुका में एक भी अंग्रेज अधिकारी नहीं रह गया। कोई भी तारघर अथवा सरकारी थाना वहां नहीं रहा। अली मुसेलियर ने अपने आपको मोपलों का सरदार समझते हुए इस बात का निर्णय करने के लिये यह सभा बुलाई थी कि अब विद्रोह का स्वरूप क्या होगा तथा विद्रोह के लिए शस्त्रों आदि के हेतु धन की व्यवस्था कैसे की जाएगी? हिन्दुओं ने जो धन देना था वह अभी तक प्राप्त हुआ है अथवा नहीं, इस सम्बन्ध में पूछताछ करने के लिए हिन्दुओं से चन्दा एकत्रित करने का दायित्व अपने ऊपर वहन करने वाले इन चारों हिन्दू नेताओं को बन्दी बनाकर अली मुसेलियर के समक्ष उपस्थित किया गया। वह महानन्दी से बोला, 'क्यों बे! तुम्हारे हिन्दुओं ने अब तक खिलाफत के लिए कितने पैसे जमा किये हैं? सुनो! मोपलों के इस धर्मयुद्ध में होने वाला सब खर्च तुम हिन्दुओं को देना है, समझ गए हो।'

थरथर कांपते हुए महानन्दी गुपचुप खड़ा रहा, परन्तु माधव नायर ने कहा, 'खान साहेब! तभी उसे एक जोरदार धक्का देते हुए एक पहरेदार ने कहा, 'सरकार, मैं पहले आपकी विजय के लिये आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। हिन्दूस्तान में एक वर्ष में स्वराज्य। इसके लिये हजारों लोगों ने प्रतिज्ञा की, सभायें आयोजित हुईं, मैले और जर्जरित कपड़ों की होलियां जलाई गईं, परन्तु दिखाई देता है कि हिन्दुस्तान में एक वर्ष में जो कोई भी सही अर्थों में स्वराज्य स्थापित कर पाने में सफलता प्राप्त कर पाये हैं, वे मोपले ही हैं। आज इन दो-तीन तालुकों में वस्तुतः अंग्रेजी सत्ता नष्ट ही हो गई है। अब हिन्दू-मुसलमानों की एकता सुदृढ़ तथा विस्तृत आधार पर किस प्रकार की जा सकती है, इस प्रश्न पर आप पहले विचार कीजिएगा।'

'इस प्रश्न पर विचार करने की ऐसी जल्दी तुम्हें क्या पड़ी हुई है?' मौलवी बीच में ही बोल उठा, 'छीः छीः, यह ऐसा कैसे कहते हो? आपको अपने हिन्दु बान्धवों को साथ लिये बिना यश प्राप्त नहीं हो सकता। स्वराज्य में हिन्दू भी साझीदार हैं। खिलाफत-आन्दोलन में हिन्दुओं ने सहायता दी है, यह उनकी खरी उदारता ही है। वे यद्यपि काफिर हैं किन्तु उन्हें भी आप मुसलमानों को न्याय देना ही होगा। क्या स्वयं पैगम्बर ने भी मूर्तिपूजकों के साथ किये गए

स्नेहमय करार का पालन नहीं किया था ?' इस प्रकार गम्भीरता सहित विचार करते हुए एक सुशिक्षित प्रतीत होने वाले मुसलमान ने कहा। उसने पुनः कहा, 'हे मुसलमानो ! हिन्दुओं पर सख्ती करके उनसे यदि तुम वैर मोल लोगे तो तुम्हें अंग्रेजों के विरुद्ध विजय कदापि प्राप्त नहीं हो सकेगी। यह बात ध्यान में रखो कि मोपले हैं ही कितने। मुट्ठी भर ही तो हैं।'

यह सुनते ही उस सुशिक्षित मुसलमान पर क्रोधित होकर बड़बड़ाते हुए मौलवी बोला, 'पर यह पढ़ो, मेरे पास यह पत्र आया है। अफगानिस्तान का अमीर साठ हजार सैनिकों को लेकर कल ही पेशावर पहुंचा है आजकल वह लाहौर में है।'

'अल्ला हो अकबर! अमीर ने दिल्ली को घेर लिया है।' सभा में यह घोषणा हुई और उत्साह से जयध्वनियां भी उठने लगीं।

मौलवी पुनः बोला 'तुम पैगम्बर का उल्लेख करते हो, तो मैं तुमसे पूछता हूँ कि सुरतुल तौबा इस अध्याय की 73वीं आयत में क्या बात कही गई है ? क्या उसमें ऐसे ईश्वरीय वचन नहीं है कि हे मुसलमानो, तुम नास्तिकों, मूर्तिपूजकों तथा दम्भियों के विरुद्ध जिहाद करो और उन पर सख्ती करो। कारण यह है कि वे सख्ती किए जाने के ही पात्र हैं। दम्भियों में से ही एक तू है, इसीलिए ऐसी बात कह रहा है, तू मुसलमान भी नहीं है। अरे, इसके तो दाढ़ी भी नहीं है।'

'इसकी दाढ़ी भी दिखाई नहीं देती। यह मुसलमान नहीं है। यह तो हिन्दू है। पकड़ लो इसको। मारो इसको। ले जाओ यहां से इस हिन्दू को!' इस प्रकार के अतिशय उत्क्षोभक उद्‌गार व्यक्त करते हुए सभा में उपस्थित लोग पुनः आगे बढ़ने लगे।

माधव नायर साहस संजोकर बोला—स्वराज्य तथा हिन्दू-मुसलमानों की एकता के लिये आप सबने अनेक बार प्रतिज्ञाएं ग्रहण की हैं। साथ ही हिन्दुओं ने भी मुसलमानों पर विश्वास रखकर चन्दा एकत्रित करना आरम्भ किया है। इस विद्रोह के अनेक नेता हिन्दुओं पर अत्याचार किये जाने की भी बातें कहते हैं। इस विद्रोह से पूर्व ही हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की गुप्त योजना बनाये जाने की भी चर्चा होती है। इन्हीं सब बातों को देखकर ये हिन्दूजन इस विद्रोह में सहायता देने में संकोच प्रदर्शित करते हैं, इसमें तो कोई सन्देह नहीं। फिर भी हमने 10 हजार रुपया खिलाफत के कार्य के लिए दिया है। और भी अधिक धन-संग्रह का कार्य जारी है। परन्तु स्वराज्य और हिन्दू-मुसलमानों की एकता ?

'बस कर, काफिर!' अली मुसेलियर ने बड़े ही उतावलेपन का प्रदर्शन

करते हुए कहा, 'इन हिन्दुओं का यह किन्तु और परन्तु तो आमरण समाप्त नहीं होगा। यह व्याख्यान देने और सुनने वालों की सभा नहीं है। यहां तो मरने और मारने का बाजार खुला है। यहां तो तुम्हें एक शब्द में ही उत्तर देना होगा। एक आज्ञा होगी और तुम पर प्रहार हो जायगा।' उसने सभा में उपस्थित सभी लोगों पर एक बार दृष्टिपात किया और सभा में यह आवाज गूंज उठी 'देखो! सभी मुसलमान बनो, एक ही शब्द में इस विद्रोह का स्वरूप स्पष्ट हो जायेगा। ये हिन्दू लोग स्वराज्य और एकता की बातें करते रहते हैं। मैं समस्त संसार को यह बता देना चाहता हूँ कि स्वराज्य का अर्थ है खिलाफत राज्य और हिन्दू-मुसलमान की एकता का तात्पर्य है सभी हिन्दुओं का मुसलमान हो जाना।' बस, अब किसी ने भी वाद-विवाद किया तथा और एक भी शब्द मुख से निकाला तो उसका सिर धड़ से पृथक् कर दिया जायगा।'

'स्वराज्य का तात्पर्य है खिलाफत राज्य! एकता का तात्पर्य सभी की एक मुसलमान जाति बना देना?-अली मुसेलियर की जय। अली मुसेलियर गाजी है।' सभा में सभी दिशाओं से यह ध्वनि कल्लोल आरम्भ हो गया।

'हां चल,' अली मुसेलियर पुनः बोला 'ऐ महानन्दी बोल, तू एकता के लिए मुसलमान होता है अथवा नहीं।'

थरथर कांपते हुए महानन्दी ने कहा, 'सभी धर्म एक समान हैं। मुख्य धर्म है अहिंसा...' रक्त से सनी तलवार को झटका देते हुए अली मुसेलियर ने कहा, 'यह धरी अहिंसा। व्याख्यान बन्द करो। बोलो मुसलमान होते हो अथवा नहीं।'

महानन्दी बोला, 'होता हूँ....मुझे मारियेगा नहीं। मैं मुसलमान हो गया हूँ। मुसलमान नहीं बनूंगा, ऐसा कहने से तुम्हारे मन को कष्ट होगा और ऐसा करना अहिंसा तत्त्व के सर्वथा विरुद्ध है। अतः मैं मुसलमान हो जाता हूँ।'

'हां चल, तू माधव नायर! होता है कि नहीं मुसलमान?'

अपनी सम्पूर्ण शक्ति को एकत्रित कर साहस बंधाते हुए माधव नायर ने कहा 'जा, जा, मैं मुसलमान बनने को तैयार नहीं हूँ।'

'मारो! मारो!' एकदम कोलाहल गूंज उठा। जिस किसी भी मोपले ने देखा वही काफिर को सर्वप्रथम मारने का पुण्य प्राप्त करने की इच्छा से प्रभावित होकर तलवार लेकर नायर पर टूट पड़ा। माधव नायर के शरीर पर एक साथ ही 20-25 तलवारो के प्रहार हुए और उसके शरीर की बोटी-बोटी बिखर गई। रक्त के फव्वारे छूट पड़े और हत्यारों के शरीर भी रक्त से भर गये।

अली मुसेलियर बोल उठा, 'हे अल्लाह! तूने जो विजय हमें प्रदान की है

उसके प्रति आभार व्यक्त करने के लिये किसी काफिर के रक्त का यह प्रथम बलिदान तुझे समर्पित है।'

'पहला नहीं, पहला नहीं' कहते हुए लगभग दस मोपलों की एक टोली जो यहां आई हुई थी, बोल उठी।

, हम मलापुर के निवासी हैं। हमने अपने ग्राम के सभी हिन्दुओं को धर्मान्तरित कर लिया है और जो मुसलमान नहीं बने उनकी हमने हत्याएं करके उन्हें ठिकाने लगा दिया है। तुम्हारे द्वारा विद्रोह का आह्वान किये जाने से भी पहले ही हमने गुप्त रूप से इस सम्बन्ध में योजना बना ली थी।'

'अल्ला हो अकबर। मलापुर ग्राम का ग्राम मुसलमान हो गया।' सभा में गर्जना हुई। 'अब मलापुर में काफिरों का समूल सफाया हो गया है।' 'और वेगरा में और कन्ना में भी यही हुआ।' एक के बाद एक टोली वहां अपने-अपने पराक्रम की घोषणा कर रही थी और उनकी घोषणाओं की प्रतिध्वनियों से सम्पूर्ण सभा में कोलाहल मच गया था।

'बस।' मौलवी बोला 'बस, अब यह राजसभा विसर्जित की जाती है। बाकी बात व कामों पर कल विचार किया जाएगा। तब तक हे ईमानदारो! तुम दसों दिशाओं में प्रयाण करो। ग्राम-ग्राम में जाओ और देखो। वहां जितने हिन्दू मुसलमान बनाए जा सकते हैं, उन्हें मुसलमान बनाओ और जो मुसलमान होने को तैयार न हों तो उन्हें पकड़ कर मेरे पास ले आओ और यदि वे यहां आने को तैयार न होते हों तो उन्हें वहीं जान से मार डालो। आज के पश्चात् अपने मलाबार के इस खिलाफती राज्य में कोई भी अन्याय व अधर्म का कार्य नहीं कर सकता। मैं यह कठोर आज्ञा प्रसारित कर रहा हूँ। जो कोई भी मूर्तिपूजा करे, कुरान को न माने, तथा मोपलों ने जिसे धर्मयुद्ध कहा है, उसमें सर्वस्व समर्पित न करे, ऐसे तीन महापाप जो भी व्यक्ति करें उन सभी लोगों के तत्काल वध और परलोक में नरकाग्नि में झोंके जाने की व्यवस्था की गई है। मलाबार में मुसलमानी राज्य स्थापित हो गया है। इस राज्य में केवल पापभीरु लोगों को ही निवास करने का अधिकार है। अत: जाओ, काफिरों को धड़ाधड़ मुसलमान बनाओ। नहीं तो उन्हें मार डालो। उनकी सम्पत्ति तुम्हारी है। उनकी स्त्रियां तुम्हारी हैं। वे यदि स्वेच्छा से देते हैं तो उन्हें ग्रहण करो अन्यथा उन्हें लूटो और बलात् अधिकार कर लो।'

'मारो! लूटो! बलात् अधिकार करो! इस राज्य में केवल पुण्यवान् और पापभीरू लोग ही रह सकते हैं।' 'सभा में सहस्रों कण्ठों से यही समवेत ध्वनि

गूंज उठी।'

सायंकाल था, किसी ने दीपक तो किसी ने मशाल जलाई। कोई पूर्व दिशा में बढ़ चला तो किसी ने पश्चिम की ओर प्रयाण कर दिया। इन हजारों लोगों के शरीरो में तो मानो शैतान ही प्रविष्ट हो चुका था और वे हिन्दुओं का शिकार करने के लिये दौड़ चले थे। 'जाओ! दसों दिशाओं में जाओ!' मौलवी उन्हें निर्देश दे रहा था।

ये थे वे शब्द! एक समय इसी भारत-भूमि में बोधि-वृक्ष की शीतल छाया तले बुद्धत्व प्राप्त करके गौतम ने अखिल विश्व के प्राणिमात्र के प्रति दया की भावना से द्रवित होकर इन्हीं शब्दों का उच्चारण किया था 'भिक्षुओ! जाओ, दसों दिशाओं में जाओ अमृतत्व का यह सन्देश देकर भयतप्त जीवों को शान्ति प्रदान करो।'

उनके यही शब्द मौलवी आज अपने मुसलमानों से कह रहा था।

परन्तु वे 'भिक्षु' किस लक्ष्य से गए थे और ये 'ईमानदार' किस लक्ष्य को लेकर चारों ओर बढ़ चले थे।

❑

5

रात्रि के बारह बजे थे अथवा नहीं, यह निश्चय सहित नहीं कहा जा सकता। कुट्टम ग्राम के नारियल और पोफली के सुन्दर वन-प्रान्तर में सर्वत्र शान्ति व्याप्त थी। उस शान्त वायुमण्डल के पालने में किसी अल्हड़ शिशु के समान ही सुमति गहन निद्रा में पड़ी सो रही थी। उसके केशों की कोई लट कभी-कभी वायु के झोकों के साथ उसके मस्तिष्क पर खेलती-सी प्रतीत होती थी। जब वह बीच-बीच में रुक कर श्वास छोड़ती तो उसकी धोती का पल्ला उसके मत्तगज के गंडस्थल के समान सुशोभित होने वाले वक्षस्थल पर से हिल-डुल जाता था। मौलश्री के वृक्षों की छाया को चीरती हुई सी चन्द्रमा की एक चंचल किरण उसके कमल समान सुन्दर प्रतीत होने वाले मुखमण्डल पर पड़ कर उसकी कान्ति को और भी अधिक द्युतिमान कर रही थी।

श्रीरंग के देव मन्दिर में भी सर्वत्र शान्ति व्याप्त थी। एक पत्ता तक भी खड़कने का स्वर सुनाई नहीं पड़ रहा था। बारह बजते ही अर्धनिद्रित अवस्था से चौंकते हुए प्रहरी ने देवालय के घड़ियाल को बजाया और पुनः निद्रा देवी की गोद में चला गया।

अभी एकाध ही घण्टा हुआ होगा कि उस देवालय की सीढ़ियों से लगभग एक सौ फुट की दूरी पर खड़े एक तरुण ने एक विशाल वट वृक्ष के नीचे सोये हुए लोगों की टोली में से एक को उठाने का प्रयास करते हुए कहा, 'कम्बु। वे आ गए हैं, उठो।' कम्बु चौंक कर उठकर बैठा और तत्काल संभलते हुए बोला, 'कहां से आए हैं ? कितने आये हैं ? कौन हैं रे ये हत्यारे, दामू ?'

'सौ के लगभग लोग हैं, हत्यारे स्पष्टत: तो नहीं पहचाने जा सके। किन्तु वे ब्राह्मणों की बस्ती की ओर ही गये हैं।' चल फिर। श्रीरंग तुम ही हम हिन्दुओं की रक्षा करो।' यह कहते हुए कम्बु ने अपने उन बीस के लगभग साथियों को भी जगा लिया जो वहां सोये हुए थे। वे सभी अपनी लाठियां, तलवारें और भाले आदि उठाकर ब्राह्मणों की बस्ती की ओर बढ़ चले। जब यह टोली ब्राह्मणों की बस्ती की ओर जा रही थी तो उसी समय उन्हें तीन-चार ब्राह्मण युवकों के साथ खड़े हुए हरिहर शास्त्री दिखाई दिये।

उन्हें देखकर खिन्न-सा होते हुए कम्बु ने कहा, 'यह क्या है शास्त्री महोदय ! तीन-चार लोग ही हैं क्या आपके साथ ?' शास्त्री महोदय ने उत्तर दिया, 'बता, मैं अधिक लोग कहां से लाता ? पहले तो मेरे इस कथन पर ही किसी ब्राह्मण अथवा नायर को विश्वास ही नहीं होता कि मोपलों द्वारा विद्रोह किया जाना है। और उनमें से कई तो यह कहते हैं कि भला हमारे घर पर कोई क्यों धावा बोलेगा। और यदि उन्होंने देवालय पर आक्रमण कर ही दिया तो फिर श्रीरंग तो स्वयं ही म्लेच्छों को दण्ड देने में सक्षम हैं ! भला देवताओं की रक्षा हम मानव क्या करेंगे ? ऐसे लोगों को समझाने में अधिक समय न लगाते हुए, मुझे जो चार-पांच स्वयंसेवक मिल पाये हैं, उन्हीं को लेकर मैं आ गया हूँ।'

अपनी निराशा को व्यक्त न होने देते हुए कम्बु ने कहा, 'ठीक है। जो आये हैं, बहुत हैं। वे शत्रु भी चढ़ आये हैं। उनका मुख्य दांव आपकी कन्या पर ही है। मौलवी ने उसे स्वयं अपने उपभोग के लिये चुना है। फिर भी आप किंचित् मात्र अधीर न हों। मैं जब तक जीवित हूँ उसकी रक्षा करूंगा।'

'और मैं भी' दामोदर, वह थिय्या युवक बोल उठा। उसी समय दबे-दबे पांव रखती मोपलों की टोली भी उनके समीप ही आ पहुंची। मोपलों का यह दल थोड़ा सा रुका और मौलवी ने उनसे कहा, 'मुसलमानो ? आज तीन दिन ही हुये हैं, किन्तु आप लोगों ने बड़ी तत्परता सहित दस ग्राम निर्वीर कर दिए हैं। जहां-जहां भी आप लोग पहुंचे और आपके कंठों से, 'अल्ला हो अकबर' का समवेत स्वर गूंजा, वहीं काफिरों में भगदड़ मच गई। इसका कारण यह है

कि वे सभी असंगठित थे। ईश्वर ने तुम सबके सारे पाप क्षमा कर दिये हैं। क्योंकि तुम विगत तीन दिनों से महान् पुनीत कर्म करते हुए घूम रहे हो। कम से कम छः सौ घरों को तुमने आग लगा दी है, सैकड़ों काफिरों को मुसलमान बना लिया है। देव-प्रतिमाओं को उल्टा करके उन पर लघुशंका की है, थूका है। ईश्वर ने भी तुम्हें इन कार्यों का साथ के साथ परिणाम दिया है। कुरान शरीफ में ऐसा लिखा है कि जन्नत में बड़े-बड़े नेत्रों वाली अप्सराएं मिलेंगी।

वह तो अलग बात है। परन्तु इसी लोक में आज तीन दिनों में ही हमारी भोग-विलास की शक्ति समाप्त-सी हो गई है, क्योंकि हमें अत्यधिक संख्या में सुन्दर स्त्रियां उपभोग के लिये प्राप्त हो चुकी हैं। प्रत्येक धर्म-योद्धा को इतना अधिक धन बंटवारे के फलस्वरूप मिला है कि उसके लिए उस धन को पीठ पर लादना भी कठिन हो गया है। परन्तु इस सम्पूर्ण सुख देने के बदले में हम वस्तुतः खुदा के शुक्रगुजार हैं। अथवा नहीं, यह सिद्ध करने का समय तो अब आया है।

इस ग्राम में तुम्हें अन्य सभी ग्रामों की अपेक्षा अधिक संघर्ष करना पड़ेगा। इसका कारण यह है कि शैतान ने स्वयमेव कम्बु थिय्या नामक इस ग्राम के एक व्यक्ति के शरीर में प्रवेश पा लिया है। मैंने स्वयं शैतान को उसके शरीर में प्रवेश करते हुए देखा है।

हे अल्लाह! तू तो सब कुछ जानता है। अल्लाह तू समर्थ है। इस ग्राम में तुम्हें गुपचुप छापा मारना होगा। हे धर्मवीरो! ध्यान सहित सुनो कि इस ब्राह्मण-बस्ती में प्रत्येक घर में ऐसी पांच-पांच दस-दस सुन्दरी कुमारियां हैं, जैसी तुम्हें मलाबार में अन्यत्र कहीं भी मिलनी दुर्लभ हैं। इस ग्राम में मोपलों के भी चार घर हैं, उनसे भी तुम्हें सहायता प्राप्त होगी। कम्बु की टोली को फंसाने की भी मैंने एक युक्ति खोज ली है। वह यह है कि यदि ब्राह्मणों की बस्ती में आप लोगों का कुछ प्रतिरोध किया जाये तो तुरन्त थिय्यों के महारवाड़ में आग लगा दी जाये। तब कम्बु और उसके अन्य सहयोगी अपनी बस्ती में लगी हुई आग को बुझाने के लिये दौड़ पड़ेंगे और फिर ये ब्राह्मण और नायर अकेले पड़ जायेंगे और इनसे निबटना सरल हो जायेगा।'

'परन्तु जब इस ग्राम में इतना अधिक प्रतिरोध होने की आशंका है तो फिर अन्य ग्रामों में क्यों न चलें? सहज ही धर्म का प्रचार, धन तथा यशलाभ की सुसन्धि यदि उपलब्ध हो तो फिर हमें इस विपत्ति को मोल लेने की क्या अवश्यकता है?' दो, चार धर्मवीरों ने तनिक जोरदार आवाज में कहा।

'परन्तु इस ग्राम के ब्राह्मणों और नायरों की स्त्रियों के समान सुन्दर महिलाएं तुम्हें अन्यत्र कहीं मिल पाएंगी क्या ? मुसलमानों को धर्म के लिये संकट तो झेलना ही पड़ेगा।' मौलवी ने क्रोधपूर्ण मुद्रा में उन्हें उत्तर दिया।

अभी उनमें यह वार्ता चल ही रही थी, कम्बु थिय्या की टोली ने इन पर धावा बोल दिया। सहसा ही एक भयंकर कोलाहल गूंज उठा। यद्यपि कम्बु को इन लोगों की संख्या के सम्बन्ध में जो सूचना मिली थी, ये उससे कहीं अधिक 200 के लगभग थी। किन्तु कम्बु ने यह पहला प्रहार ही इतना जोरदार किया था कि मौलवी की मंडली पर एक धाक बैठ गई और उसमें भगदड़ मच गई। किन्तु उसी समय मौलवी के संकेतानुसार उनकी मंडली के कतिपय व्यक्तियों ने महारवाड़े में आग लगा दी। अग्नि की प्रचण्ड लपटों और निद्रा की गोद में निश्चिन्त सोये हुये महारों के घरों से उठने वाले कोलाहल को सुनकर कम्बु की टोली में सम्मिलित थिय्या अपने घरों की ओर भागने लगे। मौलवी ने भी उस समय सहसा ही ऐसा प्रदर्शित किया कि मानो उनकी मण्डली का लक्ष्य अब ब्राह्मणों के घर द्वार नहीं अपितु देवालय ही है। मुसलमानों की एक बड़ी भीड़ श्रीरंग के पावन देवालय पर टूट पड़ी। उस समय कम्बु ने यह आह्वान भी किया कि अपने गृहों की रक्षा करने की अपेक्षा अपने देवालय की रक्षा करना श्रेयस्कर है। किन्तु यह सुनने पर भी जो थिय्या कम्बु का साथ छोड़कर अपने घरों की ओर भाग निकले थे उनकी चिन्ता न करते हुए कम्बु अपने उन 10-15 विश्वस्त सहयोगियों को साथ लेकर देवालय के द्वार पर जा पहुंचा। परन्तु अब उसके साथ उसका नितान्त विश्वासप्राप्त तरुण दामोदर नहीं था। उसने दामोदर को उस निष्पाप और निष्कलंक सुन्दर कुमारी की रक्षा के लिये भेज दिया था।

चारों ओर हुंकारें गूंज उठी थीं और कुट्टम ग्राम में साक्षात् प्रलयकाल-सा दृश्य उपस्थित हो गया था। उस ग्राम में रहने वाले चार-पांच मोपलों के घरों में जो हथियार छिपा कर रखे गये थे, मोपला स्त्रियां उन्हें मुसलमानों में वितरित करती हुई दृष्टिगोचर हो रही थीं। एक वृद्ध मोपला स्त्री एक हाथ में चिराग और दूसरे हाथ में फूंस लिये हिन्दुओं के घरों में आग लगाती हुई इधर-उधर त्वरित गति से घूम रही थी। हिन्दुओं में से अनेक भाग निकले थे तो कई काल के गराल गाल में भी चले गये थे। कम्बु ही अपने मुट्ठी भर सहयोगियों सहित श्रीरंग देवालय के द्वार पर जूझ रहा था। यत्र-तत्र अग्निशिखायें उभर रही थीं। असावधानी के कारण इस संकट की विकरालता और भी बढ़ गई थी। विपन्न जनता त्राहि-त्राहि कर उठी थी। अब मुसलमानों ने देवालय पर भी प्रबल

आक्रमण कर दिया था, किन्तु इन आक्रमणकारियों की भीड़ में मौलवी कहीं दिखाई नहीं दे रहा था।

इसका कारण यह था कि वह अपने कतिपय चुने हुए व्यक्तियों को साथ लेकर श्रीरंग की मूर्ति की अपेक्षा भी अपने नेत्रों को अधिक रमणीय दिखने वाली तथा हृदय को मोह लेने वाली उस दूसरी देवमूर्ति को नग्न करने के लिये उस ब्राह्मण बस्ती की ओर उस कुमारी के शय्या-गृह की ओर ताक लगाये बढ़ता जा रहा था।

उसके वहां पहुंच पाने से पूर्व ही दामोदर थिय्या ब्राह्मण बस्ती में आ पहुंचा था। उसी बस्ती के समीप हिन्दुओं और मुसलमानो में जो प्रथम मुठभेड़ हुई थी और जिसमें मुसलमानों को पीछे हटने पर विवश होना पड़ा था, उसके कारण हुए शोरगुल से उस ब्राह्मण-बस्ती के अनेक लोग निद्रा से चौंक कर उठ बैठे थे। मुसलमानों के पीछे हटने के कारण जो समय मिल गया था उसका लाभ उठाते हुए हरिहर शास्त्री तथा दामू इन लोगों को एकत्रित कर बस्ती की रक्षार्थ संगठित प्रयत्न करने के प्रयास में लग गए थे। वे इन लोगों को आत्मरक्षार्थ सिद्ध होने के लिये प्रोत्साहित कर रहे थे। रामशास्त्री, चिन्तामणि तथा अन्य ब्राह्मण अपने घरों में प्रविष्ट हुए हत्यारों को निष्कासित करने में जुट गए थे। उनमें से अनेकों को कम्बु द्वारा सावधान होने के सम्बन्ध में पहले ही दी गई चेतावनी स्मरण हो आई थी और वे उस चेतावनी की उपेक्षा करने पर पश्चात्ताप भी कर रहे थे।

परन्तु स्थूलेश्वर शास्त्री अभी भी शंका से नहीं उभर पाया था। इतना ही नहीं, उसके मन में तो और भी भयंकर संशय उत्पन्न हो गया था। उसको संशय था कि कौन जाने, यह कम्बु थिय्या ही मुसलमानों से मिलकर वह उपद्रव करा रहा हो! उसने अपनी इस शंका को अन्य लोगों के समक्ष व्यक्त किया तो उनमें से अनेक क्षुब्ध हो उठे और बोले—'ऐसा समझते हो तो ऐसा ही सही। किन्तु अब तो ये मोपले आक्रमण कर रहे हैं। तुम्हारे गृह-कक्षों में स्थित देवगण, ये तुम्हारी महिलाएं, तुम्हारा धर्म, चाहे किसी के भी द्वारा क्यों न हो, भ्रष्ट किया जा रहा है। उसके संरक्षण का तो प्रयास करो, बस।'

'संरक्षण!' स्थूलेश्वर शास्त्री ने चिढ़कर कहा, 'महार ब्राह्मणों की गलियों में आ गये, उनकी छाया तुम पर पड़ रही है, उनके कन्धों से तुम्हारे कन्धे भिड़ रहे हैं। तो अब तुम्हारा धर्म रह ही कहां गया है, जिसकी मैं रक्षा करूं? परन्तु यह कौन है? अरे यह तो महारों का लड़का! दाम्या तू! यहां मेरे घर के आंगन

में घुस आया है ! धर्म का सत्यानाश हो गया ! तेरी अपेक्षा मुसलमान ही यहां आ जाते तो कौन-सा बड़ा भ्रष्ट-कार्य हो जाता ?'

'शान्त हो जाओ ! स्थूलेश्वर।' चिन्तामणि ने कहा, 'स्मृति में भी लिखा है कि आपत्काल में छूआछूत का भेद नहीं किया जाना चाहिए, और फिर यह शूरवीर थिय्या युवक तो केवल हिन्दुत्व का अभिमान लेकर ही संघर्ष कर रहा है।'

'परन्तु उस आपत् प्रसंग को तो पुराणों में ही रहने दो।' हरिहर शास्त्री ने क्रुद्ध होते हुए कहा। वह हिन्दू है अतः उसे हमारे घरों में आने का पूरा अधिकार है। उसने धर्मवीरों के समान संग्राम किया है अतः मैं उसकी चरण-वन्दना करता हूँ। उसका आना तथा मुसलमानों का ब्राह्मण-बस्ती में घुस आना, क्या ये दोनों ही समान रूप से भ्रष्ट कार्य हैं ? हाय, हाय, अब थोड़ी देर बाद ही यह सिद्ध हो जाएगा ! ये थिय्या, महार और मांग अपने हाथों में तलवारें संभालकर हिन्दू-धर्म की रक्षार्थ यहां आये हैं। वे जब तक तुम्हारे प्रांगणों में खड़े हैं, तभी तक तुम्हारे देवता तुम्हारे घरों के देवकक्षों में हैं, अग्नि अग्निकुण्डों में प्रज्वलित हो रही है, तुम्हारे गले में यज्ञोपवीत लटके हुए हैं, प्राण शरीर में विद्यमान हैं। थोड़ा ठहरो, संगठित न होते हुये कुछ और क्षण यूं ही खड़े रहो, और फिर देखो वे मुलसमान यहां आ पहुंचेगे, फिर देखना तुम्हारे देवता, अग्नि, यज्ञोपवीत, तुम्हारी महिलाओं और वेदों की पावन पोथियों का क्या हाल होता है ! और फिर यह भी देख लेना कि महार और मुसलमान से ही हैं, चलो तुम्हारी इस शंका का भी निवारण हो जाएगा !'

क्रोध और क्षोभ के कारण हरिहर शास्त्री के मुख से अभी ये शब्द निकले ही थे कि उस मौलवी की टोली भी वहां आ धमकी। अब उन्हें इस ग्राम के मोपलों के घरों में पहले से ही छिपाकर रखी गई कुछ बन्दूकें और दो पिस्तौल भी मिल गये थे। और कम्बु की टोली के कुछ लोग देवालय की रक्षार्थ चले गये थे तो कुछ लोग अपने महारवाड़े की रक्षार्थ गए थे। और इस प्रकार वह टोली तितर-बितर हो चुकी थी। उसी समय मौलवी भी ब्राह्मण-बस्ती में आ पहुंचा और उसने अपनी पूर्ण शक्ति सहित आवाज लगाई—'मारो काफिरों को।' एक भयंकर गर्जन हुआ और मौलवी की टोली के साथ ही साथ दौड़ने वाली वह वृद्धा भी वहां आ गई और उसने अपनी मशाल से ब्राह्मणों की बस्ती के समीप स्थित नायरों के दो-तीन घरों और फूंस के ढेरों में आग लगा दी। उस समय एक ढोल से भी भंयकर ध्वनि गूंज उठी और उसके साथ ही साथ ये

स्वर भी गूंज उठे—'मारो काफिरों को।'

हरिहर शास्त्री को कम्बु ने जो कुछ बताया था उससे शास्त्री महोदय ने अपनी पुत्री सुमति को पूर्णतः अवगत नहीं कराया था। वह तो आज भी प्रतिदिन के समान ही प्रगाढ़ निद्रा की गोदी में पड़ी सो रही थी। चन्द्रमा की एक किरण भी उसके सुन्दर शरीर का दर्शन निर्भयता से करने के लिए वृक्षों की ओट से सरकती हुई-सी शंख के समान मनोहर उसके कंठ पर पड़ रही थी और उसके कंठहार के समान सुशोभित हो रही थी। उधर वायु के मन्द-मन्द झोंकों से उड़ता हुआ उसकी साड़ी का पल्ला भी चन्द्रमा की इस चंचल-सी किरण को चन्द्रहार के समान ही मनोहर दिखाई देने वाले उसके वक्षस्थल पर पड़ने से मानो रोकने का प्रयास कर रहा था। जिस समय सुमति गहरी नींद में सोई पड़ी थी, उसी समय ब्राह्मणों की इस बस्ती से दूर हिन्दुओं और मुसलमानों में पहली मुठभेड़ हुई थी। इस गड़बड़ के कारण सुमति ने देखा था कि संस्कृत श्लोकों की अन्त्याक्षरी में आज पुनः उसके भाई ने कालिदास के श्लोक के नाम पर उपनिषद् का एक श्लोक बोल दिया था और वह उल्टा उसे ही खिझाने लगा था। उसे अब पुनः झपकी लग गई थी! कुछ ही समय पश्चात् पुनः एक भंयकर कोलाहल हुआ और वह सहसा ही चौंक उठी। उसकी आंख खुलीं तो उसने देखा कि उसके सम्मुख वही थिय्या युवक खड़ा हुआ था। क्षण भर तो वह यही समझती रही कि मैं स्वप्न ही देख रही हूँ। उस दिन जब वह उपवन में पुष्प तोड़ रही थी, उसी दिन का दृश्य आज स्वप्न में दिखाई दे रहा है। परन्तु क्षण भर में ही उस दृश्य का भयंकर स्वरूप उसके समक्ष स्पष्ट हो गया। उसके पिता ने बड़ी चिन्ताग्रस्त मुद्रा में उससे कहा—'बालिका सुमति, जाग' घबराना नहीं, देख अपनी इस ब्राह्मण-बस्ती में भारी संख्या में क्रूर लुटेरे घुस आए हैं।' इस वाक्य को सुनते ही सुमति सहसा ही सन्तप्त हो उठी। उसके मन में यह शंका उत्पन्न हो गई कि क्या यह भी उसी टोली का कोई लुटेरा है। उसने उस थिय्या तरुण की ओर ऐसी दृष्टि से निहारा जिस प्रकार कोई दीन-हीन व्यक्ति किसी दोषी की ओर निहारता है।' उसका पिता पुनः बोल उठा—'ऐसी स्थिति में तेरी रक्षा का एक ही उपाय मुझे दिखाई देता है कि जितना शीघ्र हो सके उतना शीघ्र तुझे जिस किसी भी मार्ग से हो, तेरे मामा के घर पहुंचा दिया जाए। तेरी रक्षा के लिये तेरा भाई तथा मेरा यह विश्वासपात्र थिय्या युवक दामोदर तेरे साथ जायेगा।' यह सुनते ही इस संकटमय स्थिति में भी उस कुमारी के मुख पर सन्तोष की एक रेखा उभर आई। इसका कारण यह था कि उसे अब

विश्वास हो गया था कि इस सुशील और सुन्दर आकृति वाले थिय्या युवक के द्वारा कोई दुष्टतापूर्ण कृत्य नहीं होगा। युवक दामोदर चोर नहीं अपितु उसका रक्षक है, उसका यह विश्वास आज सत्य सिद्ध हो गया था। उस समय की भयंकर स्थिति से अपनी पुत्री को पूर्णतः अवगत कराने के लिये शास्त्री महोदय पुनः बोल उठे, 'हां, उठ, बाले उठ! पगली कहीं की! तू अभी भी जाने को तैयार नहीं हुई।'

उधर ढोल की आवाज बढ़ रही थी, अग्नि-ज्वालाएं फैलती जा रही थीं और विनाशकारी कोलाहल भी अधिकाधिक प्रचण्ड होता जा रहा था। उसी समय शत्रुओं के पहुंचने से पूर्व ही सुमति को वहां से हटा देने की दृष्टि से उसके पिता, भाई और उस थिय्या तरुण ने सुमति को एक पुरुष का पायजामा-अंगरखा पहना दिया। तभी उसके सिर पर टोपी भी लगा दी। बड़ी ही तत्परता सहित वे उसे जंगल की ओर अपने साथ ले गये। हरिहर शास्त्री अपनी कन्या को वन की ओर भेजकर पुनः अपने द्वार के समीप पहुंचे ही थे कि मौलवी के साथी भी उनके घर से दस फुट की दूरी तक आ पहुंचे। शास्त्री को उनके घर पहुंचते देख मौलवी चीख उठा, 'यही...यही वह काफिर है, पकड़ो, मारो मत, पकड़ो।' मोपलों ने अपनी बन्दूकों से हवा में फायर किये, वे शास्त्री के घर की ओर बढ़ चले। बन्दूकों की धांय-धांय सुनते ही आस-पास के घरों में निःशस्त्र और घायल लोग जाकर छिपने लगे। हरिहर शास्त्री ने भी घर में प्रविष्ट होकर भीतर से द्वार बन्द कर लिया और बोले, मौलवी, तुझे मुझसे क्या लेना है ? मुझ निरपराध ब्राह्मण के घर पर तुमने धावा क्यों बोल दिया है ? मोपलों ने तो अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया है, फिर नाहक तुम लोगों ने हमारे विरुद्ध क्यों शस्त्र उठा लिये हैं ? मौलवी बोला, 'तू यदि अपने पास का सारा धन हमें दे देगा, और सम्पूर्ण परिवार सहित मुसलमान बन जाएगा तो फिर हम तुझे अपना ही समझेंगे। इतना ही नहीं, अपितु तेरी उस सुन्दर कन्या से विवाह भी करूंगा, और इस खिलाफत राज्य में तेरा अत्यधिक सम्मान भी किया जाएगा।' उसके इन विष-बुझे तीरों जैसे तीक्ष्ण शब्दों को ज्यों-त्यों सहन करते हुए शास्त्री ने कहा, 'आज का दिन तुम मुझे इस सुझाव पर विचार करने के लिये दे दो, कल ही मैं तुम्हारी बात स्वीकार कर लूंगा, मेरी पुत्री रुग्ण है। वह तुम्हारे इस उपद्रव से घबरा जायेगी, इससे उसका रोग असह्य रूप भी धारण कर सकता है।' मौलवी बोला, 'मैं अकेला ही भीतर आ जाता हूँ, तू द्वार खोल दे।'

'पर तुम मुझे धोखा नहीं दोगे, मैं इस बात का विश्वास कैसे कर लूं।'

'मेरी शक्ति के कारण! तू यदि द्वार नहीं खोलेगा तो भी मैं उसे तोड़कर भीतर प्रविष्ट हो सकता हूँ! परन्तु जो व्यक्ति मुसलमान हो जाता है, उसे हम कष्ट नहीं देते, यही हमारा धर्म है। और फिर जब तू अपनी कन्या भी मुझे देगा तो मैं तेरे साथ धोखा भला क्यों करूंगा।' 'परन्तु आज यदि तुम मुझे छोड़ दोगे तो कल ही सब ब्राह्मणों से आग्रह तथा मुसलमान होने की विनती करूंगा और वे उसे स्वीकार कर लेंगे। अतः तुम आज वापस चले जाओ।' 'छिः छिः! ऐसा नहीं हो सकता। तू राजी-खुशी से द्वार खोलता है कि घर को आग लगा दी जाए? मूर्ख, यह विचार करने का अवसर भी मैं तुझे तेरे लिये नहीं, अपितु तेरी उस कोमल अप्सरा के लिये दे रहा हूँ।'

'और अप्सरा-सी अपनी पुत्री की रक्षार्थ मैं अपने जीवित रहने तक संघर्ष किए बिना नहीं रहूँगा! बेटी सुमति, द्वार खोल दूं क्या? नहीं-नहीं! अच्छा बस, मैं द्वार नहीं खोलता।' हरिहर शास्त्री ने इस ढंग से और जोर से यह वाक्य कहा। और उसके इतने जोर से कहने का इष्ट परिणाम भी हुआ। मौलवी ने यह समझ कर कि सुमति घर के भीतर ही है, मकान को आग न लगाते हुए अपना कार्य पूर्ण करने का विचार किया। और उसने द्वार तोड़ देने का आदेश अपने साथियों को दे दिया। क्षण भर में ही उनमें से कोई खिड़की पर तो कोई दीवार पर चढ़ गया और उनमें से कई द्वार पर आघात करने लग गये। सुमति को दूर निकल जाने के लिये जितना समय आवश्यक था उतना समय बिता देने के उपरान्त अब हरिहर शास्त्री ने भी अपने अग्न्यागार के द्वार के भीतर घुसकर तलवार निकाल कर अपने हाथ में संभाल ली, और द्वार बन्द करके भीतर बैठ गये। अब उस द्वार पर कुल्हाड़ियां बरसने लगी थीं। जो मुसलमान सबसे पहले द्वार के भीतर घुसा उसका सिर उस वीर ब्राह्मण ने अपनी तलवार के एक ही प्रहार से काट लिया। जब दूसरे मोपले ने भीतर जाने के लिये गर्दन झुकाई तो उसे भी हरिहर शास्त्री की तलवार भवानी बनकर चाट गई। अब मोपलों में भी चीत्कार मच गया और वे भयभीत हो उठे। अब वह मोपला वृद्धा पुनः आगे बढ़ी और बोली 'मैं इस मकान को आग लगाए देती हूँ! फिर तड़प कर ये स्वयं ही बाहर निकल आयेंगे।' परन्तु मौलवी बोला, 'नहीं बूढ़ी ऐसा नहीं करना। इन हिन्दुओं में कभी-कभी सिंह के समान शौर्य का संचार हो जाता है। यह ब्राह्मण अपनी पुत्री को साथ लेकर लड़ रहा है। यदि तुमने आग लगा दी तो ये घर के भीतर ही जलकर भस्म हो जायेंगे, परन्तु हमारे हाथों में नहीं पड़ेंगे। अतः घर को छोड़ ही दिया जाना चाहिये।'

उस समय इस ब्राह्मण के घर पर मोपले चारों ओर से टूट पड़े थे और वह ढहता जा रहा था। वे हाथों में मशाल लिए लूट-मार कर रहे थे। केवल घर में स्थित वह अग्न्यागार ही अभी पूर्णतः नहीं टूट पाया था। किन्तु अब वह भी गिर पड़ा। दीवार से मोपले भीतर घुस आए थे। अंधेरे में ही दो आक्रान्ताओं को ठिकाने लगा देने के उपरान्त हरिहर शास्त्री पिछले द्वार से निकल रहे थे कि अपने दुर्भाग्य से मौलवी ही सामने खड़ा हुआ दिखाई पड़ा। बड़े ही उतावलेपन से मौलवी उनकी ओर दौड़ा और तलवार खींचकर गरज उठा, 'लड़की कहां है ?'

'यह देख, यह है मेरी पुत्री।' कहते हुए उस वीर ब्राह्मण ने अपनी तलवार ऐसी सफाई से चलाई और इतने जोर का प्रहार किया कि मौलवी के कन्धे पर भरपूर वार हुआ। मौलवी चीं-चीं करता हुआ पीछे हट गया। अब वह ब्राह्मण भी अपनी मन्त्राग्नि से तथा अपने शस्त्र और बल से जितना संरक्षण कर सकता था उतना करते हुए ब्राह्मणों के जो घर सामने दिखाई दे रहे थे उनकी रक्षार्थ बढ़ चला। परन्तु चलते-चलते ही बोला—'सुमति तुम उस घर में चली जाओ, मैं आता हूँ।'

उस घर में जो भयंकर दुर्घटना घटी थी उसकी तुलना में हरिहर शास्त्री के घर में घटित घटना तो कुछ भी नहीं थी। तीन-चार मोपले उस घर में घुसे हुए थे। उनके पास ही मशाल हाथ में लिए वह बुढ़िया भी खड़ी हुई थी। पहले ही हल्ले में उन मोपलों ने उस परिवार के प्रमुख को घायल कर दिया और वह भूमि पर गिर पड़ा था। उसे इस प्रकार गिरते हुए देखकर उस व्यक्ति की पत्नी दोनों पुत्रियां तथा परिवार की दो अन्य स्त्रियां रोती हुई उसके शरीर पर होने वाले प्रहारों को रोकने के लिए उस पर गिर पड़ीं। तब तक उस घर में प्राप्त हुए सोने-चांदी के आभूषण तथा अन्य सम्पत्ति को मोपले लूट चुके थे। अब वे मोपले उन बेसहारा, विह्वल, भयभीत और निःशस्त्र महिलाओं से बोले, 'ऐ औरतो, यह काफिर अभी तक मरा नहीं है, वह ठीक हो सकता है, शोक मत करो, हम इसकी सम्पूर्ण व्यवस्था कर देंगे, केवल हे प्यारी! तुम हमें अपना मान लो।' 'नहीं, तू मुझे अपना मान ले।' ऐसा कहते हुए दो मोपलों ने उन युवतियों को तथा एक तीसरे ने मध्यम आयु की महिला को अपनी ओर खींच लिया ? वे दोनों शोकाकुल और भयभीत महिलाएं भला उन उपद्रवियों की भीड़ का कैसे प्रतिरोध करतीं। फिर भी उनमें जो बड़ी लड़की थी, वह उस वासना से अन्धे हुए मोपले की पकड़ से मुक्त होने के लिए छटपटाने लगी।

वह अपनी प्रथम सन्तानोत्पत्ति के लिए अपनी ससुराल से अपनी माता के यहां आई थी। उसे कसमसाते और छूटने के प्रयत्न करते हुए देखकर मोपले क्रुद्ध हो उठे। तब उन्होंने उन तीनों स्त्रियों के वस्त्र उतारकर उन्हे नग्न कर दिया। उस समय बड़ी लड़की रोती हुई पुकारने लगी—'इन दुष्ट पशुओं के हाथों से हमारे जीवन और सम्मान की रक्षा करो।' वह चीखती जाती थी और अपना सिर धड़ाधड़ घर की दीवार और फर्श पर पटक रही थी। किन्तु उसका यह आर्त्तनाद सुनकर न तो कोई मनुष्य ही उसकी सहायतार्थ आया और न ही किसी देवता ने उसकी करुण गुहार पर ध्यान दिया। बारम्बार दीवारों और भूमि पर सिर पटकने पर भी न तो कोई दीवार ही टूटी और न ही भूमि फटी। तब अन्य कोई उपाय न पाकर उस कोमल सुन्दरी ने उस वृद्धा मोपला नारी के पैरों में सिर पटक दिया और इस प्रकार गिर पड़ी जिस प्रकार 'मरी माता' के चरणों में कोई कमल पुष्प समर्पित हो जाता है, और बोली, 'तू मुसलमान है, किन्तु स्त्री है। स्त्रियों की भावनाओं को तू समझ सकती है। यह मेरा पिता है और ये उसके हत्यारे हैं। उनके नेत्रों के सामने ही मैं यह कृत्य कैसे सहन कर सकती हूँ।' वह मोपला वृद्धा विकट हंसी हंसते हुए बोली, 'लड़की, एक दिन मैंने भी ऐसा ही कहा था, परन्तु किसी ने भी मेरी पुकार नहीं सुनी थी। यदि कोई मेरी पुकार सुनता तो सम्भवतः आज मैं भी तेरी बात सुन लेती। परन्तु अब तो जितनी भी हमारे समान हों उतनी होनी ही चाहिएं।' चल पड़....... ' उसके इन दुष्ट अपशब्दों से वह तरुणी दग्ध हो उठी और उसने पुनः अपना सिर धड़ाधड़ भूमि पर पटकना आरम्भ कर दिया। उसका कपाल फट गया और रक्त की धारा प्रवाहित हो उठी। अब वृद्धा और भी अधिक चिढ़ गई थी। वह बोली, 'मरे कहीं के, तुम नपुंसक हो क्या?' तभी वे तीनों कामोन्मत्त पशु उन स्त्रियों से लिपट गए।

उनमें से दो चुप रहीं, किन्तु वह रक्त से लथपथ गर्भवती सुन्दरी अभी भी छटपटा रही थी। इतने में ही एक-दो मोपले भीतर घुस आए। 'अच्छा, यह क्यों छटपटा रही है, तुम जानते हो क्या?' उनमें से हुसैन नामक एक व्यक्ति बोला, 'समझ गया, समझ गया' ऐसी स्थिति में भी हंसते हुए हसन बोला, 'उसका काम एक से नहीं चलेगा।' तब दूसरा उससे लिपट गया। इस पर उस युवती ने जिसके पैर बांध दिये गये हों ऐसी सिंहनी के समान अपने दांतों को कटकटाते हुए उसे काट खाया। 'हसन मारो साली को' कहते हुए वह छुरी लेकर दौड़ा। तभी हुसैन बोल उठा, 'अरे मूर्ख! गन्ध लिए बिना ही कभी फूल को मसल कर

कहीं फेंका जाता है क्या ? निरा ही अरसिक है तू भी।'

जब इन नराधमों ने उस युवती को नग्न कर दिया। पहला मोपला अपनी पाशविकता का प्रदर्शन कर उससे अलग हुआ। तदुपरान्त हुसैन ने और हुसैन के उपरान्त हसन ने उस घायल गर्भवती सुन्दरी से राक्षसों से भी अधिक क्रूर बलात्कार किया। इतने भयंकर अत्याचार की परिणति बहुधा इस पापकृत्य के उपरान्त भयंकर द्वेष का रूप धारण करती है। तदनुसार हसन को उठते हुए देख उस क्रुद्ध युवती ने दांत कटकटाकर काट लिया। हसन ने छुरी निकाली और उस सुन्दरी निरपराध कन्या के पेट में घोंप दी। उसके पेट को चीरने के पश्चात् उसने छुरी को इतने जोर से निकाला कि उसके उदर में स्थित भ्रूण भी टुकड़े-टुकड़े होकर बाहर निकल पड़ा। यह सभी कुकृत्य उस सुन्दरी के घायल पिता के नेत्रों के समक्ष ही हुआ। हुसैन बोल उठा 'अच्छी तरह देख ऐ काफिर! अच्छी तरह देख। हिन्दू के रूप में जन्म लेने पर कितनी दुर्दशा होती है। अल्लाह काफिरों पर ईमानदारों (कुरान पर आस्था रखने वालों) को विजय प्रदान करता है।'

ऐसा कहते हुए वे सभी मोपले लूटमार करने के लिए दूसरे मकान में घुसने के लिये बाहर निकलने लगे। उसी समय क्रुद्ध सिंह के समान तलवार चलाते हुए हरिहर शास्त्री वहां आ पहुंचे। वे बड़े जोर-जोर से 'सुमति! सुमति!!' की आवाजें भी लगा रहे थे।

उनकी इस जोरों से की जाने वाली पुकार को सुनकर मौलवी के साथियों ने समझा कि शास्त्री जिस घर में घुसे हैं, सुमति भी उसी में गई हैं ? अतः वे भी उनके पीछे-पीछे दौड़ते हुए आ रहे थे। परन्तु उनमें से एक व्यक्ति धन की टोह में उनके अग्न्यागार में घुस गया। वह मशाल लिए टटोल ही रहा था कि उसने अपना हाथ हवन कुण्ड में डाल दिया। प्रज्वलित अग्नि ने उसके हाथ को बैंगन के समान भून दिया और 'जल गया, रे जल गया' का आर्तनाद करते हुए अपना हाथ हवन-कुंड से बाहर निकाला किन्तु अग्नि ने उसके कुर्ते की आस्तीन को पकड़ लिया था और निकालते-निकालते भी अग्नि-शिखाओं ने उसका आधा हाथ भून दिया। फिर भी आग बुझी नहीं। ब्राह्मण की यज्ञाग्नि ने एक यज्ञ-विध्वंसक को तो अपना चमत्कार दिखा ही दिया था। यदि भक्तों के सभी देवता इतने ही जाज्वल्यमान होते तो..... ?

हरिहर शास्त्री के हृदय में भी हवनाग्नि के समान ही प्रतिशोध की अग्नि प्रज्वलित हो रही थी। दूसरे घर से निरपराध ब्राह्मण कन्या पर बलात्कार करके

बाहर आने वाले मोपलों में से हसन और हुसैन को उन्होंने अपनी तलवार से वहीं ढेर कर दिया। अब जब हरिहर शास्त्री उस घर के भीतर प्रविष्ट हुए तो उन्होंने देखा कि उस ब्राह्मण का कुटुम्ब नितान्त विपन्न करुणास्पद और बीभत्स स्थिति में है। हरिहर शास्त्री ने गृहपति से कहा, 'हाय-हाय! स्थूलेश्वर शास्त्री।' कारण यह था कि यह गृहपति अन्य कोई नहीं अपितु महारों की अपेक्षा मुसलमानों का घर में घुस आना, कम भ्रष्टकारी है, का ज्ञान बघारने वाला स्थूलेश्वर शास्त्री ही था। उसने कराहते हुए कहा, 'यह कैसी स्थिति है। ईश्वर का यह कैसा प्रकोप है।' हरिहर शास्त्री बोले 'एक प्रकार से तो अपनी हिन्दू-जाति की दुष्ट प्रवृत्ति और पापों का ही यह परिणाम है, यह भयंकर फल है अतः अब भी मुझे बता दो।'

मैं तुम्हारी पत्नी और पुत्री को अपनी आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़े हुए उन दो थिय्यों के साथ किसी सुरक्षित स्थान में भेजने का प्रबन्ध करूंगा। स्थूलेश्वर शास्त्री अभी भी हां कहने को तैयार नहीं था। वह अभी भी अपनी कन्या को किसी थिय्या के साथ भेजने को तैयार नहीं था। भले ही वह कन्या मुसलमानों के हाथों भ्रष्ट हो चुकी हो, किन्तु उसे थिय्यों के हाथों में सौंप देना तो महापाप होगा, यही विचार उसके मन में कौंध रहा था। इस प्रकार की रूढ़ियों ने जब एक बार हृदय को जकड़ लिया हो, तो उस हृदय को तोड़े-फोड़े बिना उनको हृदय से निकालना कठिन ही है।

हरिहर शास्त्री ने एक क्षण घर का दृश्य देखा और वे विकल हो उठे और वे मन ही मन बोल उठे 'गत सायंकाल बड़ी ही शान्ति के साथ यह सारा कुटुम्ब निद्रा देवी की गोद में चला गया था। इन मोपलों के प्रति उनके मन में किंचित् मात्र भी आशंका नहीं थी। स्थूलेश्वर शास्त्री और उनकी यह ब्राह्मण-मण्डली कई पीढ़ियों से इस बस्ती में निवास करती आ रही थी। शुचिता सहित और ध्यानमग्न होकर इस बस्ती में ब्राह्मण श्रुति, स्मृति का अभ्यास करते थे। बड़े ही सन्तोष सहित यहां दिन व्यतीत करने वाला यह परिवार भी गत सायंकाल प्रेम सहित हंसते-हंसते सो गया था। और अभी तो सवेरा ही नहीं हो पाया, उससे पहले ही यह क्या स्थिति उत्पन्न हो गई है। घर-द्वार क्या, उसका धर्म, सभी तो मुसलमानों की तलवार की मदान्धता की अग्नि की भेंट चढ़ गया है! क्या केवल इसलिए कि यह हिन्दुओं का परिवार है? केवल इसलिए न कि हिन्दू समाज बलहीन और असंगठित है—समाज की शक्ति क्षीण होने का परिणाम व्यक्ति और कुटुम्ब सभी को इतने भयंकर रूप में सहन करना पड़ता

है। व्यक्ति और समाज का जीवन ऐसे धागों से बुना हुआ है कि किसी वृक्ष की शाखाओं के समान पारस्परिक एकता उनमें भले ही प्रतिबिम्बित न होती हो, किन्तु जिस प्रकार किसी वृक्ष की जड़ें भूमि में जाल सी बनकर फैली होती हैं, उसी प्रकार व्यक्ति का जीवन भी समाज के जीवन के साथ सम्बद्ध है। फिर तू कोई अपराध करे अथवा न करे, तू हिन्दू समाज का अंग है, अतः तुझ पर समाज के शत्रुओं द्वारा अवश्य ही प्रहार किया जायेगा। अतः फिर तू चाहे थिय्या है अथव नम्बूद्री या महार है, तेरे समाज के शत्रु तेरा सिर और आंखें फोड़े बिना नहीं रहेंगे। यदि तेरा सामाजिक जीवन संकट में पड़ गया है, तो फिर तेरा जीवन भी उस संकट से मुक्त कैसे रह सकता है? अतः तेरा जीवन व्यक्तिगत ही नहीं वैयक्तिक-सामाजिक दोनों का ही मिश्रण है।'

उपर्युक्त विचारों से हरिहर शास्त्री का हृदय उद्वेलित हो रहा था। उन्होंने समझ लिया कि स्थूलेश्वर की मूर्खता और हठ अभी भी समाप्त नहीं हुए हैं। अतः अब चाहे वह अनुमति दे अथवा न दे इन दोनों स्त्रियों की निश्चित रूप से ही मुझे रक्षा करनी होगी। उन्होंने ऐसा निश्चय कर उन दोनों थिय्यों को बुलवाया और उन स्त्रियों की रक्षा का दायित्व उन पर सौंप कर स्वयं मौलवी से मोर्चा लेने बढ़ चले।

हरिहर शास्त्री के पीछे-पीछे भागता हुआ मौलवी अभी स्थूलेश्वर शास्त्री के घर में सुमति को तलाश करने पहुंचा ही था कि सहसा ही एक मोपला बड़े जोर से बोला, 'सुमति! सुमति! साली मिल गयी!' मौलवी यह सुनते ही हरिहर शास्त्री को छोड़ कर उस ओर दौड़ पड़ा। बात यह हुई थी कि मोपलों ने दीन-दीन करते हुए चिन्तामणि शास्त्री के घर पर धावा बोला था। उनकी मारकाट से भयभीत चिन्तामणि शास्त्री की कन्या लक्ष्मी छिप कर बैठी हुई थी। उसकी आयु भी सुमति के बराबर ही थी और वह रूप रंग में भी उससे मिलती-जुलती थी। उसको एक मोपले ने पकड़ लिया था। मौलवी ने उसे देखते ही सुमति समझ कर उस मारकाट और उपद्रव के वातावरण में भी अपनी छाती से चिपटा लिया। मौलवी के कन्धे पर हरिहर शास्त्री ने अपनी तलवार से जो प्रहार किया था, उसके कारण होता हुआ रक्तस्राव तो थम गया था किन्तु उस घायल कन्धे में पीड़ा अभी भी कम नहीं हो पाई थी। परन्तु लक्ष्मी को ही सुमति समझकर अपनी छाती से लिपटाते हुए मौलवी अपनी वेदना भी भूल गया था। वह यह समझकर सन्तोष की सांस ले रहा था कि उसने जिसके लिये यह सब उपद्रव किया है, उसे वह अभीष्ट वस्तु प्राप्त हो गई है। बड़े ही हर्ष सहित उसने अपनी

टोली के दो विश्वस्त व्यक्तियों को बुलाया और कहा कि तुम सुमति (लक्ष्मी) को हरिहर शास्त्री के घर पर ले चलो। अब रात्रि के लगभग तीन बज रहे थे। अत: मौलवी ने उस ब्राह्मण-बस्ती में ही अपनी इस विश्वासपात्र सेना को कुछ देर विश्राम करने का अवसर देने का निश्चय किया। इस बस्ती में ब्राह्मणों के सभी घर तोड़-फोड़ दिये गए थे। उनमें से एक भी ऐसा नहीं रहा था जिस पर उन्होंने धावा न बोला हो। ब्राह्मणों की सभी कन्याएं भ्रष्ट की गई थीं, सभी पुरुष घायल थे और कई ने तो अपने प्राणों की भी आहुतियां दे दी थीं। मौलवी की आज्ञा नहीं हुई थी, इसलिए वे घर अग्नि ज्वालाओं में क्षार-क्षार होने से बच गए थे। वह उन सघन वृक्षों की छाया में बने हुए इन घरों को अपना राजमन्दिर बनाना चाहता था। इसलिए उसने मोपलों की खिलाफत सरकार के आग लगाने वाले विभाग की प्रमुख उस वृद्धा की मशाल से इन घरों को बचा लिया था।

अपने सभी लोगों को बुलाकर मौलवी ने एकत्रित किया और एक आसन पर वह विराजमान हो गया। उसका कंधा अभी भी दुख रहा था।

'देखो मैंने जैसा कहा था, वैसा ही हुआ। देख लिया ना? तुम लोगों ने दस ग्राम तहस-नहस किए हैं, किन्तु यहां इन ब्राह्मणों के चार घरों को अपने अधिकार में लेने के लिए ही धर्मवीरों को अपना बलिदान देना पड़ा है। यह सब इस हरिहर और कम्बु का ही काम है। दो काफिर इकट्ठे हो गए थे । इसलिए ही इतनी शैतानी करने में सफल हो गये। परन्तु हमारे द्वारा किए गए श्रम का परिणाम हमें मिल गया है।' मौलवी ने कहा।

'वाह खान साहेब! सुमति मिल गई, इसलिए तुम्हारा परिश्रम तो सफल हो गया है, किन्तु हमें क्या मिला? हमें तो अभी तक कुछ भी हाथ नहीं लग पाया। तुम अच्छी तरह समझ लो कि यदि हमें कुछ नहीं मिला तो जो कुछ मिला है वह हम किसी को भी नहीं पचाने देंगे।' 'हां' आंखें तरेरते हुए अब्दुल्ला तिरोला ने कहा।

'अब्दुल्ला! धैर्य धरो भाई। सवेरा होने दो। अल्लाह ईमानदारों को बरकत देने में समर्थ है। एक नहीं दो-दो, एक-एक को दो-दो मिलेंगी। बस सेवरा होने तक ठहर जाओ। परन्तु जिन काफिरों को बन्दी बनाया गया है उन्हें सामने के मकान में बड़ी सावधानी सहित बन्द कर दो। अरे हां, यह तो बताओ कि वह हरिहर अभी तक मिल पाया है कि नहीं? उसको अवश्य ही बन्दी बनाना पड़ेगा।'

'यह रहा हरिहर।' ऐसा कहते हुए सनकी मुहम्मद आगे बढ़ा। हरिहर

शास्त्री को तीन मोपलों ने पकड़ रखा था। उनका एक पैर तलवार के प्रहार से उसी प्रकार काट दिया गया था, जिस प्रकार किसी वृक्ष से शाखा काट दी जाती है! परन्तु फिर भी वे उस एक पैर से लंगड़ाते हुए चलने वाले हरिहर शास्त्री को घसीटते हुए वहां लाए थे। मशाल के प्रकाश में रक्त से सराबोर होकर रक्तमय हुए हरिहर स्पष्टतः दिखाई देने लगे।

मुहम्मद सनकी पुनः बोला, 'इस काफिर ने भयंकर घात किया है। उसकी बख्शीश स्वयं इस्लामी वीरों ने ही इसे यह दी है। मौलवी, तुमने जो कन्या सुमति समझ कर मुझे सौंपी थी, जब मैं लेकर जा रहा था, उस समय इस काफिर ने मुझ पर हल्ला बोल दिया था। अंधेरे में ही मेरे साथ चलने वाले कासिम की इसने हत्या कर दी और लड़की को मेरे हाथों से छीनकर यह भागने लगा। अंधेरे में ही वार! अंधेरे में ही पलायन! काफिरों से धर्मयुद्ध कैसे किया जाए, यह समझ में नहीं आता!'

'परन्तु वह लड़की कहां है? वह सुमति नहीं है ऐसा तू कैसे कह रहा है?' मौलवी ने क्रोध से उबलते हुए पूछा।

'वह तो भाग गई? नहीं-नहीं खान साहेब! तनिक सुनिये तो' घबराते हुए सनकी मुहम्मद ने कहा 'इस काफिर ने उस लड़की को अपनी पीठ पर लाद लिया था। यह आगे था और मैं पीछे। मैं भी इसके पीछे भागता रहा। चांद की रोशनी में ही मैंने तीन-चार प्रहार अपनी तलवार से कुल्हाड़ी के समान इसके पैर पर किए और इसका पैर काट डाला। परन्तु छोकरी कहीं दिखाई न दी। फिर मैंने इसकी कमर की अच्छी तरह तलाशी ली, किन्तु वह छोकरी तो इसकी पीठ पर मुझे नहीं मिली।'

'अरे शैतान! आसपास ही कहीं छिप गई होगी। क्या वहां तूने उसे नहीं ढूंढा?'

'ढूंढा क्या महाराज! उसकी दायीं बगल में खोजा, बायीं बगल में ढूंढा, दूर तक जाकर भी तलाश की परन्तु इसे कौन संभालता? यह दोनों पैरों से कैसे दौड़ता था, यह तो आपने देखा ही है। उससे आधी गति से यह एक पैर से भी दौड़ता है। अब देख लीजिये मेरा पराक्रम। यह रहा इसका पांव, अच्छी तरह देख लीजिये।' यह कहते हुए मुहम्मद सनकी ने अपने कंधे पर रखा रक्त से सराबोर उस ब्राह्मण वीर का पांव किसी हाथी की सूंड के समान धम्म से धरती पर पटक दिया।

❑

6

उधर सुमति को लेकर उसका भाई तथा वे दोनों थिय्या युवक जहां मार्ग निकलता था वहां से होते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। थोड़ी देर पश्चात् ही स्थूलेश्वर शास्त्री की पुत्री और पत्नी को लेकर दूसरे दोनों थिय्या भी, जिनके हाथों हरिहर शास्त्री ने उन दोनों स्त्रियों को सौंपा था, वहीं आ पहुंचे। अब वे तीन पुरुष और तीन स्त्रियां लुकते-छिपते तथा अपने पीछे छूट गए सम्बन्धियों, प्रियजनों का क्या होगा, इस में सम्बन्ध शंका-कुशंकाएं करते हुए कुट्टम से जितनी दूर निकल सकें, उतनी दूर निकलने के प्रयास में चलते जा रहे थे। परन्तु उस प्रलयंकर झंझावात में हरिहर के शौर्य के कारण बच जाने वाली एक चौथी नारी भी थी। वह थी तरुण लक्ष्मी। वह एकाकी वृक्षों के एक झुण्ड के पीछे छिपकर बैठी हुई थी। हरिहर शास्त्री पैर टूट जाने के पश्चात् भी मुहम्मद सनकी को बहुत देर तक अपनी पकड़ में लिये रहे थे। इसी से लक्ष्मी को बचकर निकल जाने का अवसर मिल गया था। वह कुछ दूर तक भागने के उपरान्त वृक्षों के उस समूह के मध्य जा छिपी थी! वह थी तो साहसी, परन्तु थी तो स्त्री और वह भी युवती। उस सघन वन में उसे दूर से आती हुई गीदड़ों की आवाज और बाघों की गर्जना जब सुनाई देती तो इस युवती के मन में इतनी अधिक घबराहट होती थी कि वह सोचती थी भला इस घोर वन से बड़ा और संकटापन्न स्थान कौन-सा हो सकता है! वह यह भी विचार करने लगती थी कि इससे कुट्टम ग्राम में रहना ही अधिक अच्छा था। सांप और अंधकार दोनों से ही उसे एक समान भय लग रहा था। वह बार-बार यही सोच रही थी कि क्या ही अच्छा हो यदि कोई मनुष्य वहां आ जाये। किन्तु जिस कुंज में वह छिपी हुई थी, वहां कोई भी भयंकर जीव-जन्तु भी नहीं आया। मोपलों से अधिक भयानक जन्तु भी भला कोई हो सकता था क्या? परन्तु किसी भी जीव-जन्तु के समीप न होने से भी उसे इस निर्जीव और निर्जन वन में भय लग रहा था। अपने प्रियजनों की गोदी और कंधे पर चढ़कर वही लक्ष्मी यद्यपि बहुत अधिक भयभीत हो गई थी, परन्तु फिर भी किसी प्रकार उसने धीरज धरा और रात वहीं काट दी। अभी पौ फटने को ही थी कि उसने पुनः वहां से भाग चलने का निश्चय किया। अभी एक-दो मील ही भाग पाई होगी कि उसने अपने ही समान भयभीत होकर बढ़ती हुई दो अन्य स्त्रियों को कुछ दूरी पर देखा। लक्ष्मी के मन में एक बार यह शंका भी उठी कि कहीं ये मोपलों के पक्ष की ही स्त्रियां

न हों, किन्तु वह तो निर्जनता से ऊब गई थी अतः किसी प्रकार की आवाज़ न करती हुई वह उन स्त्रियों के समीप जा पहुंची। उन महिलाओं ने भी उसी जिज्ञासा-सहित लक्ष्मी को देखा। उसे देखते ही धीमी-सी आवाज में उनमें से एक स्त्री बोल उठी 'अरी बहन! तू यहां-कहां! तुम ब्राह्मणी हो!' तुम्हारे तो नाखून भी हमने कभी नहीं देखे। देवताओं का यह कौन-सा प्रकोप है। इन मरे मुसण्डों के दंगे से तुम्हें भी निकलना पड़ा। तुम्हारे द्वार की जूठन हमने अनेक बार खाई होगी! तुम्हारे कुट्टम ग्राम की ही हम दोनों मसकुनियां हैं, बहन!'

'बहिनो,' लक्ष्मी ने नेत्रों से अश्रु गिराते हुए कहा, 'तुम इधर कहां जा रही हो?'

'हम पर भी उन मरदूद मोपलों ने अत्याचार किए हैं। भाई, हमारे पास तो पैसा-धेला कुछ भी नहीं था, तब भी उन्होंने हमारी झोंपड़ी में आग लगा दी। हमारे पुरुषों की धर-पकड़ की और हम सबसे बोले, मुसलमान हो जाओ, नहीं तो मार दी जाओगी।' पर बाई, हम अपनी मसकुनि जाति को कैसे छोड़ दें? बाई, हमने उनसे कहा, 'हम ब्राह्मणी नहीं, हमारे पीछे क्यों लगते हो?' तभी उनमें से एक बुढ़िया हमारी धोतियों में आग लगाने लगी और बोली, 'पर तू हिन्दू तो है ना! हम तुम हिन्दुओं को कुत्तों से अधिक नीच समझते हैं, परन्तु मसकुनि लोग मुसलमान नहीं होते। तुम्हीं ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों के पैर हो। वे तुम्हारे ऊपर ही खड़े हुए हैं। तुम हटे कि वे धम्म से नीचे आ पड़ेंगे।' उसके द्वारा घर जला दिये जाने पर किसी प्रकार हम बचते हुए यहां तक भाग आई हैं। परन्तु हमारा क्या! हम तो मसकुनि हैं। परन्तु बहन! तेरा इस जंगल में क्या होगा?' यह कहते-कहते उस मसकुनि के नेत्रों से गंगा-यमुना प्रवाहित हो उठी। मलाबार में यह मसकुनि जाति अस्पृश्यों से भी अस्पृश्य मानी जाती है। थिय्या भी उनके साथ व्यवहार नहीं करते। जैसे महार डोमों को अपने से नीचे मानते हैं इसी प्रकार यह मसकुनि जाति वहां थिय्यों से भी नीची समझी जाती है।

लक्ष्मी का भी कण्ठ भर आया और वह बोल उठी 'बहिनो, तुम अपना दुःख भुलाकर मेरी चिन्ता न करो? देवताओं ने तुम्हें इतना उदार हृदय दिया है। तुम मसकुनियां तो मेरे जैसी ब्राह्मणी की अपेक्षा कहीं अधिक उच्च जाति की हिन्दू हो। नहीं, नहीं, बहिन! तू इस तरह पीछे न हट। यह देख, मैं कितनी देरी से किसी के गले से लिपटकर कुछ देर रोने के लिए अकुला रही हूँ। तुम संकोच न करो। क्षण भर मुझे अपनी गोदी में भर लो। तुम्हीं मेरी माता हो!'

ऐसा कहती हुई लक्ष्मी उस मसकुनी से लिपट गई। किन्तु वह मसकुनी अपने आपको मन ही मन यह विचारते हुए दोष देने लगी कि इस ब्राह्मणी से छूकर मैंने भारी पाप किया है। किन्तु फिर भी वह मसकुनी लक्ष्मी को सांत्वना देने लगी। थोड़े समय बाद ही उस दुःख की वेला में उन तीनों में उमड़े प्रेम का ज्वार शान्त हो गया और वे फिर भयभीत होती, लुकती-छिपती आगे बढ़ने लगीं। थोड़ी दूर पहुंचने पर ही उन्हें अपने ग्राम का विष्णु नायर नामक एक व्यक्ति दूरी पर जाता हुआ दिखाई दिया। उन भयभीत स्त्रियों को लगा कि परमात्मा ने ही उसे हमारी सहायता के लिए यहां भेजा है। वे बड़ी आशा सहित उसके पास पहुंचीं। उन्हें देखते ही विष्णु नायर की भृकुटि तन गई। मानो वह अपने आप से ही कह उठा मैं तो अपना ही पाप ज्यों-त्यों बचा पाया हूँ। ये कहां से गले पड़ गईं। वह बोल उठा 'मेरे पास क्या धरा है! यहां क्यों आई हो?' वह वृद्ध मसकुनी हाथ जोड़कर बोली—'महाराज, आप नायर लोग अपने-आपको क्षत्रिय कहलवाते हो। हम अबला हैं। हमारा दूसरा कोई नहीं। इस ब्राह्मणी की मौसी का ग्राम यहां से दो कोस की ही दूरी पर है। इसे वहां तक पहुंचा दीजिए। मोपलों ने रास्ता रोका हुआ है, इसीलिए हमें डर लग रहा है।' 'परन्तु तुम्हारी जाति क्या है?' नायर बोला 'मसकुनि-डोम, बाबा!' 'और तू मुझ से 200 फुट दूर न रहकर बात कर रही है? राक्षसिनि, मेरा धर्म डूब गया है? जानती नहीं, मैं क्षत्रिय हूँ, धर्म के लिए तो हम अपने प्राणों की भी चिन्ता नहीं करते।' ऐसा कहते हुए उस स्त्री की छाया अपने ऊपर पड़ जाने से क्रुद्ध होने वाले उस क्षत्रिय ने उस अस्पृश्य वृद्धा को तड़ाक से धक्का दे दिया। उसकी पुत्री सहसा ही रो पड़ी। तब लक्ष्मी क्रोध और दया से लाल हो गई और गरज उठी-'अरे विष्णु! इस बेचारी अछूत नारी पर तो तू पराक्रम दिखा रहा है और वे तेरे बाप! वे मुसलमान मोपले तेरे घरों की महिलाओं पर और तेरे देवालयों पर अत्याचार कर रहे हैं, उनको अपना यह पराक्रम क्यों नहीं दिखाता? उनके भय से तो तू किसी नपुंसक के समान अपने प्राण बचाकर भागा जा रहा है। तेरी इस कायरता से क्षत्रिय धर्म नहीं डूबा। परन्तु इस बेचारी वृद्धा की छाया-मात्र पड़ जाने से ही तेरा धर्म नष्ट हो गया है। मुसलमान इन्हें हिन्दू कहकर जान से मारते हैं, हिन्दू इन्हें मसकुनी अस्पृश्य कहकर ठोकर मारते हैं, धक्का देते हैं। तो फिर बता ये जाएं तो कहां जाएं। वह नायर जरा संभलते हुए बोला—'तू चाहती है तो मेरे साथ चल। यद्यपि तेरे समान सुन्दर तरुणी को साथ लेकर चलना भी मोपलों के संकट को न्यौता देना ही है। फिर भी तू मेरे ग्राम की ब्राह्मणी है, तू चल, मैं तुझे

पहुंचा देता हूँ। परन्तु ये मसकुनी स्त्रियां मेरे साथ चलीं तो क्षत्रिय मुझे जाति से निष्कासित कर देंगे।'

'क्यों नहीं निकालेंगे!' लक्ष्मी ने तिरस्कार सहित कहा—'अबलाओं की परधर्मियों से तूने रक्षा न की तो भला तेरा क्षत्रियत्व कहां से बच जाएगा? परन्तु तूने तो ऐसा कोई 'पाप' किया ही नहीं है। हिन्दू-धर्म और हिन्दू-जाति पर भयंकर अत्याचार हो रहे हैं और तू इन अत्याचारों के करने वाले विधर्मियों के समक्ष लड़ा भी नहीं है। तू तो भाग निकला है। मुसलमानों ने तेरी बहिनों और बेटियों को उठाया है, इससे तेरा धर्म नष्ट हो गया है, यह तू नहीं समझता। परन्तु हिन्दू अस्पृश्यों की छाया-मात्र पड़ने से ही तेरा धर्म रसातल को चला गया है। वस्तुतः तू सच्चा धर्म-ज्ञाता क्षत्रिय है, इसमें तो किंचित्मात्र भी शंका नहीं की जा सकती! मैं तेरे साथ नहीं जाती। मैं तो अपनी इन मसकुनी बहिनों के ही साथ रहूँगी। डोमों की स्त्रियों का सुख-दुःख मेरा अपना ही सुख-दुःख है! हिन्दुत्व पर संकट आता है तो डोम, महार, मागे, ब्राह्मण, ये डोम, महार, नहीं केवल हिन्दू हैं, ऐसा मानने वाली तथा तदनुसार आचरण करने वाली आत्मा ब्राह्मणों में है, यह सिद्ध करने के लिए मैं इन मसकुनियों के साथ रहूँगी तू जा, चला जा!'

लक्ष्मी अभी यह कह ही रही थी कि वह नायर क्षत्रिय कभी का दूर निकल चुका था। थोड़ी देर तक ये स्त्रियां आगे बढ़ती रहीं। उन्हें दूर से उठता हुआ शोर सुनाई दिया। वे तीनों ही भयभीत होकर एक वट-वृक्ष के समीप ही लगे हुए करौंदे के झाड़ के पीछे छिप कर कुछ समय काट देने के विचार से वहां चली गईं। वहां अचानक ही उनकी स्थूलेश्वर शास्त्री के परिवार की दोनों स्त्रियों तथा सुमति से भेंट हो गई। दुःख का कितना आवेग! कितना भय! पीछे क्या कुछ हुआ है, यह बताने की आतुरता। किन्तु इन सभी मनोविकारों को दबाए रखने पर भी सुमति के मुख से ये शब्द निकल ही पड़े 'तेरी मेरे पिता जी से कहीं भेंट हुई है क्या? ' इसका उत्तर लक्ष्मी केवल यही दे पाई 'उन्होंने ही तो मेरा जीवन और धर्म बचा दिया, परन्तु इस युद्ध में शत्रु ने उनका पैर कुल्हाड़ी से काट कर अलग कर दिया और उन्हें बन्दी भी बना लिया है'

'हाय बहिन!' कहते हुए सुमति एकदम फूट-फूटकर रो पड़ी। 'हे बेटी, धैर्य धर। मत रो मेरी लाडली।' ऐसा कहते हुए स्थूलेश्वर शास्त्री की पत्नी सुमति को सान्त्वना देने लगी। परन्तु भय ने उसका रोना बीच में ही रोक दिया था। कारण यह था कि तीन-चार थिय्या और उसका भाई जब आवाजें कहां से

आ रही हैं, यह जानने के लिए गए थे तो उन्होंने इन स्त्रियों को यह चेतावनी भी दे दी थी कि वे चूं-चां कुछ भी न करते हुए इस झाड़ी में छिपे रहें, यह आदेश दे गए थे। मेरे रोने से कहीं कोई नया संकट ही उपस्थित न हो जाए, यह सोचकर ही सुमति भय के कारण चुप हो गई थी।

अब प्रातःकाल हो गया था, दस बज रहे होंगे। रात्रि भर चलते-चलते, भय से त्रस्त, भागते-भागते दुःखाग्नि में जलते-जलते उन सभी स्त्री-पुरुषों का कण्ठ सूख गया था। आस-पास कहीं पानी की बूंद के भी दर्शन नहीं हो पाये थे। कल दस बजे इसी समय शान्त और रमणीय कुट्टम ग्राम में हरिहर शास्त्री अग्नि के समक्ष आहुतियां समर्पित कर उठे थे। सुमति अपने द्वारा तोड़े गये पुष्पों की माला गूंथने में व्यस्त थी कि उसके भाई ने चुपचाप अपने हाथों से उसके नेत्र मूंद लिये थे। लक्ष्मी तुलसी की प्रदक्षिणा कर रही थी और उधर पारिजात पर बुलबुल बैठती और उड़ती तथा वह अपने हाथ की माला से उड़ाती हुई मनोरंजन कर रही थी। वे बुलबुलें उड़ती थीं और पुनः आ बैठती थीं। वह मसकुनी तरुणी अपनी बहन के समक्ष गीत गाती हुई कह रही थी—

'चोटी कर चोटी कर, वे पी घाल, वे पी छाल।
मालती के फूल डाल, ससुराल चाल॥'

और स्थूलेश्वर शास्त्री की पुत्री ससुराल से पहली बार आई अपनी प्रिय बहिन से प्रेम के अतिरेक में कह रही थी, 'क्या करूं, मैं क्या करूँ, मेरी बहन?' और वह वृद्ध मसकुनी अपने गृह-आंगन में लगी हुई शाक-सब्जियों में से अपनी मनपसन्द कोई सब्जी तोड़ती हुई कह रही थी 'यह भाजी मेरी बच्ची को बहुत पसन्द है, नहीं! अच्छा तो इसे तो मैं अब कल ही तोडूंगी।'

अभी चौबीस घण्टे ही बीते होंगे, दस ही तो बज रहे हैं, किन्तु ये सब आज क्या कर रहे हैं? यह कोई भयंकर कल्पना नहीं अपितु एक सत्य अनुभूति है! उन्हें जो इतना भयंकर अत्याचार सहन करना पड़ रहा है, वे जो इस भयंकर पीड़ा से त्रस्त हैं, भला उन्होंने ऐसा कौन-सा पाप किया है, कौन-सा अपराध हो गया है, उनसे?'

यही न, कि उन्होंने हिन्दू समाज में जन्म ग्रहण किया है और वे हिन्दू ही रहने के इच्छुक हैं। व्यक्तिगत रूप से बस इतनी ही तो उनकी इच्छा है!

किन्तु सामाजिक दृष्टि से स्थिति क्या है? यह कितना बड़ा अपराध है कि उनका अपना हिन्दू समाज इतना असंगठित है और उसमें है परस्पर इतना अधिक असहयोग। यह समाज जो बालू के कणों के ढेर के समान है। जो

केवल पूर्वजों के पुण्य कर्मों के अवशिष्ट अंश के कारण ही एक समाज के रूप में विद्यमान है। परन्तु अवशिष्ट पापों से प्रतिक्षण विश्रृंखलित होता जा रहा है, छिन्न-भिन्न होता जा रहा है।

अब यह शोरगुल कैसा है, यह जानने के लिये गए हुए वे पुरुष वापस लौट आए थे। यह शोर-गुल शत्रुओं द्वारा ही किया जा रहा था। कारण यह था कि जिस मार्ग पर ये सब चले जा रहे थे, उसी मार्ग से मोपलों की एक दूसरी बड़ी टोली हिन्दुओं की मृगया करती हुई आ रही थी। इस संकट को देखते ही वे पुरुष भयभीत हो उठे थे तथा इस चिन्ता से ग्रस्त हो उठे थे कि अब क्या होगा। एक भयंकर संकट का सामना करने और आत्मरक्षा का मार्ग खोजने में ही उनकी सम्पूर्ण शक्ति लग रही थी। उनके कण्ठ जल के अभाव में सूख गये थे। स्नायु विश्राम के अभाव मे शिथिल हो रहे थे। किन्तु इतने पर भी यदि वह ब्राह्मण कुमार और वे थिय्या युवक यदि अभी तक हाथों में शस्त्र लिए हुए खड़े रह सके थे तो वह अकेले दामू के ही धैर्य और दृढ़ निश्चय के भरोसे। 'जीवन की अन्तिम घड़ी तक लड़ेंगे, धर्म के लिये मरेंगे, मलाबार का हिन्दू लड़ सकता है। हमने तो अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया, बस!' यह वाक्य उनमें से किसी एक के मुख से निकला ही था कि सुमति आवेश सहित बोल उठी, 'मुझे एक छुरी दो, मैं भी एक-न-एक हिन्दू-द्वेषी को मार कर ही मरूंगी।'

दामू ने उसे एक छुरी दी और बोला, 'देवी! जब तक मैं जीवित हूँ तुम्हारे हाथ की छुरी मैं हूँ। मेरी मृत्यु के उपरान्त यह' उस तरुण और तरुणी के उत्साह से प्रेरित होती हुई मसकुनि जाति की वह अस्पृश्य बाला मालती भी आवेश में आकर बोल उठी, 'मुझे भी एक छुरी दे दो। मैं भी हिन्दू-धर्म के लिए लड़ते-लड़ते ही अपने प्राणों की भेंट चढ़ाऊंगी।' दामू ने उसे एक और छुरी दे दी। परन्तु वह उस छुरी को अपने हाथों में नहीं पकड़ रही थी। 'नीचे डाल दो, मैं इसे नीचे से उठा लूंगी। मेरी जाति मसकुनि है। तुम थिय्या हो। मैं ग्राम में तुम सबसे दूर रही। मेरा आपका स्पर्श हो गया तो आपका अशुभ हो जाएगा न।'

दामू हंसा और बोला, 'हमारी इच्छा है कि हम ब्राह्मणों की बराबरी करें। ब्राह्मण भी हमें अपने बराबर का अधिकार दें, यह हम मांग करते हैं। किन्तु ऐसा कहने से पहले महारों को तथा डोमों को अपने समान अधिकार देने होंगे। तू मसकुनि है, किन्तु तू हिन्दू भी है न। मैं भी हिन्दू हूँ। अतः मेरे हाथ से यह छुरी ग्रहण कर। जब मुसलमानों से मेरे छू जाने से कोई दोष नहीं होता तो फिर

भला तुम मुझ हिन्दू से छू जाने से क्या अनिष्ट होगा!' आज तुझमें हिन्दू-धर्म के लिए मरने का उत्साह जाग्रत हुआ है, अतः तू मेरे लिए ब्राह्मण की अपेक्षा कहीं अधिक पूज्य है। ले, पकड़ यह छुरी अपने हाथ में। और जो धर्म का शत्रु पहले दिखाई दे, और जो आततायी सामने आए, उस पर इसी से प्रहार कर।'

मालती ने दामू के हाथ से वह छुरी ले ली। दैव की क्या इच्छा है, यही देखने के लिए वे सभी उस झाड़ी के पीछे छिप गए थे।

कुछ ही क्षण बीते होंगे कि 'दीन-दीन' और 'अल्ला हो अकबर' की गर्जना करती हुई सौ-दो सौ मुसलमानों की टोली और आगे बढ़ आई। इस उपद्रव में 10-12 ग्रामों के मोपले एकत्रित होकर एक हरे कपड़े की पताका बनाए उसे तुर्कों का ध्वज बताते और फहराते हुए हिन्दुओं की लूटमार करते हुए चले आ रहे थे। जो मुसलमान जितना बड़ा गुण्डा और जितना अधिक अत्याचारी था, वह उतना ही बड़ा धर्मवीर बन गया था। क्योंकि जिहाद-सरीखा कोई अन्य धन्धा मिलना भी तो उनके लिए आसान नहीं था। वे राक्षस आगे बढ़ते इधर-उधर भी टटोलते हुए चल रहे थे। क्योंकि जो हिन्दू अपने प्राण बचाकर इधर-उधर छिपे थे, वे उन्हें भी मृत्यु के मुख में ठेलते आगे बढ़ते आते थे। दुर्दैव से अब वे उस झाड़ी के समीप ही आ पहुंचे और उनमें से किसी ने उधर झांकते ही चिल्लाना आरम्भ कर दिया 'काफिर, काफिर।' चारों ओर से आवाज गूंज उठी, 'काफिर! काफिर!' पहले जो दस-पांच मोपले आगे बढ़े, उन्हें तो उस तरुण थिय्या तथा उसके सहायकों ने अपनी तलवारों की भेंट चढ़ा दिया। किन्तु अब तो यह सारी टोली ही उन पर टूट पड़ी थी। दामू के पास भी छुरियां और अधिक नहीं थीं। अन्यथा वह उन महिलाओं को भी एक-एक छुरी दे देता। अब निराशा साक्षात् रूप धारण कर उनके सम्मुख आ खड़ी हुई थी। वह टोली उनकी ओर बढ़ आई थी। युवतियों के हाथ में तलवारें देखकर वे मोपले चीत्कार कर उठे। खटाखट तलवारें एक-दूसरे से टकराने लगीं। तीन-चार मुसलमानों के निर्जीव देह भूलुंठित हो गए। इस समय तक हरिहर शास्त्री का वीर पुत्र अपने शौर्य का प्रदर्शन करता हुआ उन स्त्रियों से शत्रुओं को दूर रखे हुए था। किन्तु सहसा ही तीन-चार तलवारें उस पर एक साथ पड़ीं और उसकी देह टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गई। एक पूरा आघात लगने से उस मसकुनी का सिर भी नारियल के समान कटकर टूट गया था। अपने भाई की हत्या होते देखते ही सुमति क्रुद्ध सिंहनी से समान उसका वध करने वाले मुसलमानों पर टूट पड़ी। उसने अपनी छुरी के प्रहारों से दो के पेट चीर दिए।

किन्तु सहसा ही कई मोपलों ने एक साथ उसे पकड़ कर उसके हाथ से छुरी छीन ली। वे अब उसे अपनी-अपनी भुजाओं में भरने का प्रयास कर ही रहे थे कि सहसा एक आवाज गूंज उठी 'हां, दूर हो जाओ।' इस अधिकारपूर्ण स्वर को सुनते ही वे मोपले उसे छोड़कर अलग हो गए। उसी समय उस टोली के मुखिया ने कहा 'इस छोकरी को जाने मत दो, अपितु इसके हाथ बांधकर इसे मेरे साथ-साथ ले चलो।' आंखें मटकाते हुए ये मोपले पुनः सुमति को बन्दी बनाने के लिए आगे बढ़े। वे उसे बन्दी बनाकर ले चले। मार्ग में ले जाते समय सुमति अचेत हो गई थी। उधर वह थिय्या तरुण भी अनेक घावों के लगने के कारण बेचैन हो रहा था और उसे भी मोपले बन्दी बनाकर अपने साथ लिए चल रहे थे। वह मसकुनी मालती, लक्ष्मी और हरिहर शास्त्री की पत्नी, उन्हें मोपलों ने उड़ा लिया था अथवा वे मारी गई थीं। इसका भी किसी को पता नहीं था। थोड़ा आगे बढ़ते ही एक गाड़ी दिखाई दी। उस टोली का मुखिया बोल उठा 'इस छोकरी को उस गाड़ी में बैठा दो।' सुमति को उठाकर उस गाड़ी में पटक दिया गया और वह मुखिया भी उस गाड़ी में सवार हो गया। और वह गाड़ी उस दिशा से विपरीत दिशा में बढ़ चली, जिसमें दामू थिय्या को ले जाया जा रहा था। इस प्रकार कठिन-से-कठिनतम और भयंकर-से-भयंकर जो कोई संकट सुमति पर आ सकता था, वह उसे झेल रही थी।

उसको धैर्य-मेरु डगमगा उठा और वह दहाड़े मार कर रो पड़ी। 'दामू! दामू!' ही उसके कंठ से निकल रहा था। वह आज इतनी अधिक विह्वल थी कि जीवन में इससे पहले कभी भी नहीं हुई थी। उसने बड़े जोर-जोर से दामू को आवाज लगाई, किन्तु गाड़ी तेजी से भागती हुई जा रही थी और अब दामू उसकी दृष्टि से पूर्णतः ओझल हो गया था। उस निराधार स्थिति में, उस किशोरी के मन में चुंभते हुए वियोग के दंश, उससे फूटती हुई वेदना की लहर का वर्णन भला कोई क्या कर सकेगा? वह तो उसी भांति तड़प उठी थी, जिस भांति मछली जल से बाहर निकलते ही तड़पती है।

और बेचारा दामू? विगत दो दिनों से तो उसकी सम्पूर्ण भावनाएं, उसका विचार, उसका विकार, उसके रक्त-बिन्दुओं का प्रत्येक स्पन्दन सुमति के लिए ही समर्पित था। और वह आज उसी सुमति की रक्षा कर पाने में असफल रहा था। फिर भी वह जीवित है, यह विचार आते ही दामू—वह अठारह वर्ष का तरुण लड़का—वह भी उस किशोरी का स्मरण कर दहाड़े मार-मारकर रुदन कर उठा।

सुमति को उस मुखिया ने थोड़ा डांटा, कुछ दया का भी प्रदर्शन किया और बोला 'छोकरी! रोती है! अरे-रोकर तो तू अपने आपको ही अधिक कष्ट दे रही है! जितना तू अधिक रोएगी उतना ही अधिक संकट में पड़ेगी! तेरे ऊपर बन्धन उतने ही कठोर हो जाएंगे। परन्तु तू ऐसी पागल नहीं है। तू मेरे बारे में जानती है न। देख मैं इस टोली का मुखिया हूँ। इस ताल्लुके का कलेक्टर हूं। मेरा नाम क्या तुझे विदित नहीं है ? इस खिलाफत राज्य में मैं भी अलीमुसेलियर के समान बराबर का अधिकारी हूँ। उसके समान ही मेरा भी हुक्म चलता है। खलीफा ने मुझे कलेक्टरी दी है और कुट्टम ग्राम का मौलवी भी मेरे ही मातहत है। अब तुझ से मुझे प्रेम हो गया है और तुझ पर मेरा विश्वास भी है। क्या तू नहीं जानती कि मेरा नाम क्या है।' मेरा नाम ऐटखान है।'

अपने आप ही प्रश्न करने वाला तथा स्वतः उनका उत्तर देने वाला यह ऐटखान वही था, जिसका उल्लेख पहले कालिकट की सभा में किया जा चुका है। वह सुमति का मनोरंजन कर रहा था। हां मनोरंजन, किन्तु ठीक वैसा ही जैसा मनोरंजन उस मछियारे द्वारा जल से निकाल कर अपने जाल में फंस जाने वाली उस तड़पती हुई मछली का किया जाता है, जिसे पाकर वह झूम उठता है और मस्ती में आकर गाने लग जाता है।

गोपुर ग्राम समीप आ गया था। ऐटखान ने एक मकान में मिट्टी की एक दीवार के सहारे चादर तान कर एक पुरानी अलग कोठरी बना दी और उसमें सुमति को छोड़ वहां भोजन की भी व्यवस्था कर दी गई थी और बाहर कठोर पहरा बैठा दिया था! सुमति को वहां बैठाकर उसने कहा 'मैत्रिणी! तू शान्त होने तक मेरे इसी बंगलें में रह। शान्त हो, तुझे मेरी गर्दन की कसम। मैं यहां के ब्राह्मणों को ठिकाने लगाकर उन्हीं के बंगलें में अपना थाना स्थापित करूंगा। आज का दिन तो यहीं बिता। मैं सायंकाल वापस आऊंगा।' ऐसा कहते हुए वह मोपला वहां से विदा हुआ। इधर सुमति तड़प रही थी। अन्न ग्रहण करना तो दूर रहा, उसने पानी की बूंद तक अपने कण्ठ से नीचे नहीं उतारी। बाबा! दामू! भय्या! कहते-कहते पुनः वह दहाड़े मारकर रोने लगी। अब वह क्या करेगी ? इन नराधमों के बन्दीगृह से मुक्त होने की उसे कोई भी आशा नहीं रह गई थी। वह सायंकाल तक इसी प्रकार तड़पती रही।

परन्तु मन के दुःख की भी नियति ने नैसर्गिक मर्यादा निर्धारित की हुई है। आज असहनीय कष्टों को सहते-सहते दो दिन व्यतीत हो गए थे। उसका शरीर थक चुका था और मन भी इतना अधिक थक गया था कि उसका प्रत्येक

मज्जापिण्ड, प्रत्येक रक्तपिण्ड शिथिल होता जा रहा था और अब उसे नींद नहीं अपितु मूर्छा आ गई थी। और वह निश्चल और निर्वदन होकर पड़ गई थी।

दिन बीता, रात आई। ऐटखान भी पुनः आ धमका। सुमति प्रगाढ़ निद्रा अथवा मूर्च्छा की अवस्था में थी। यह देखकर ऐटखान को एक प्रकार के आनन्द की अनुभूति हुई। क्योंकि उसके रुदन और चीखने-चिल्लाने से तो इस दुराचारी के रंग में भंग भी पड़ता था। उसने उस मूर्च्छित ब्राह्मण-कन्या को कस कर पकड़ लिया और मन ही मन सोचने लगा 'यह ब्राह्मण-कुल की शुचिमूर्ति सुन्दर युवती मेरे जैसा व्यक्ति पीढ़ी-दर-पीढ़ी पुण्य करेगा तब भी उसके पल्ले न पड़ेगी। करकलतिका आज मेरे हाथों में है।' ऐसा विचारते-विचारते उसने अपने मन की कलुषित वासना को पूर्ण करने का निश्चय किया। वह सोच रहा था कि 'अच्छा ही है कि इसे नींद आई हुई है, अन्यथा यह प्रतिरोध अवश्य ही करती।' यह सोचते-सोचते वह उसके पास लेट गया। उसे उसने अपनी ओर समीप खींच लिया और मन ही मन बोला 'या अल्लाह! तूने मुझे मेरे धर्मवीरत्व का श्रेय प्रदान किया है! अल्लाह! यह परी तुमने मुझे प्रदान की है! निःसंशय कुरान ईश्वर-प्रणीत है। उसके वचन सत्य हैं! ईमानदार को परी मिलेगी! यह वचन अल्लाह तुमने सच ही कहा है! कितनी मृदुल है, इसकी देह?' मोपला अपने विचारों में खोया-खोया कामोन्मत्त हो उठा। उसने पुनः उसे अपनी छाती से चिपटा लिया। सुमति कमलिनी सी मुरझा गई। रात्रि-भर इसी तरह रहना। जागना नहीं छोकरी! ऐसा कहते हुए उसकी साड़ी की ओर हाथ बढ़ाने लगा। इस किशोरी के जिन अंग-प्रत्यंगों को कभी सूर्य की किरणों ने भी स्पर्श नहीं किया था, उत्कृष्ट काम में अन्धा होकर वह कामुक लम्पट उन्हें स्पर्श करने ही लगा था कि तोबा! तोबा! कहते हुए चीख उठा। परन्तु उस एकान्त में तो उसकी पुकार सुनने वाला कोई भी नहीं था।

रात्रि बीती। सवेरा हुआ। इस ग्राम में आकर मोपलों की एक अन्य टोली ने उपद्रव करना आरम्भ कर दिया। ऐटखान की टोली के लोग घबरा कर उसे इस समाचार से अवगत कराने के लिए आ पहुंचे! उन्होंने आकर द्वारा ठकठकाया। भीतर से कोई आवाज न आने पर उसे तोड़ दिया तो देखकर हतप्रभ रह गए।

ऐटखान मरा पड़ा था और एक भयंकर नाग अपने फण को छत्री के समान सुमति के सिर पर फैलाए हुए था। ऐटखान के शरीर पर सर्पदंश के इतने अधिक चिह्न थे कि उसके प्रत्येक रन्ध्र से विष से दूषित रक्त प्रवाह हो रहा था।

'नाग! नाग!' चारों ओर यही चीत्कार होने लगा। सुमति भी द्वार पर हुई

ठकठक से अपनी नींद से कुछ जाग उठी थी। ज्यों ही वह उठी तो वह नाग उसके पैरों को चाटने लग गया। 'फणीन्द्र, मेरा फणीन्द्र' कहते हुए सुमति ने उसके शरीर को सहलाया और सहज में ही उसके कंठ से वह गीत मुखरित हो उठा जो प्रतिदिन गाकर वह नाग को रिझाया करती थी। प्रगाढ़ निद्रा से उठते ही ऐसा लगा कि वह अपनी फूलों की बगिया में ही प्रातःकाल फणीन्द्र के साथ खेल रही हो।

उसी समय उसका ध्यान समीप ही पड़े ऐटखान और उसके समीप पड़ी हुई छुरी की ओर गया। इससे उसे सम्पूर्ण स्थिति समझ में आ गई। वह समझ गई कि मेरी रक्षा के लिए फणीन्द्र इस प्याले में पिलाए गए दूध का उपकार स्मरण कर मेरे मार्ग में आया है। जिस समय मैं बेसहारा हालत में थी तब दुष्ट ऐटखान के स्पर्श से मेरा कौमार्य भंग हो जाएगा यह समझकर फणीन्द्र ने मेरे साथ हुए अत्याचार का प्रतिशोध लेने के लिए ऐटखान को डस कर यमलोक भेज दिया। वस्तुतः इस सर्प के रूप में परमात्मा ही मेरे रक्षक बन कर आए। जिसने द्रौपदी की लाज रखी थी, उसी ने मेरी लाज बचाई है। वह सर्वदा भक्तों की लाज इसी प्रकार रखता है। यह विचार सहसा ही सुमति के मन में कौंध उठा।

पर हे बेचारी लड़की! थोड़ा ठहर, केवल न्याय की इस कल्पना में ही न खो जाना। घटनाक्रम का भी स्मरण कर। परमेश्वर ने यह न्याय और धर्म बनाये, उनकी रक्षा और संरक्षण तो वह सदा करता ही है। किन्तु इसी कल्पनालोक में न खोई रहना। अब तो परमेश्वर ही तेरी लज्जा की रक्षा करेगा, केवल इसी मान्यता के भरोसे न रहते हुए तू अपनी कमर में बंधी कटार पर अधिक अवलम्बित हो। समय आने पर तेरी इस भावना के स्थान शायद यही अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। कारण, ऐटखान तो मर गया, परन्तु मोपले तो अभी जीवित हैं।

अभी सुमति इन विचारों के ऊहापोह में रमी हुई थी कि मोपले उस कोठरी में आ घुसे। उस नाग ने किसी निर्भीक वीर के समान उनमें से एक को फुंकारें मारते हुए डस लिया। किन्तु तभी दो-तीन तलवारें उस पर पड़ी और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए। तभी वे मोपले सुमति पर टूट पड़े। सुमति ने भी सहज ही एक आड़ का आश्रय लिया और अपनी छुरी निकाल ली। उसने उन मोपलों में से दो-तीन के पेट को अपनी छुरी के प्रहारों से फाड़ दिया और वे दम तोड़ गये। अब वह छुरी अपने पेट में भोंकने ही वाली थी, उसने हाथ ऊपर ही

किया था कि उसका हाथ पकड़ लिया गया। उसने अपने हाथ को छुड़ाने का असफल प्रयास किया, परन्तु भला उसे मरने कौन देता? केवल इस छीना-झपटी में उसके सिर पर मोपलों की तलवार का आघात लगा था, जिससे उसके सिर में घाव हो गया था। उस घाव से निकलता हुआ रुधिर उसके कंठ तक बह कर आ रहा था। उन मृत पड़े मोपलों के पेट से बहे रक्त से वह कोठरी भर गई थी। उस रक्त में उस नाग के टुकड़े तड़प रहे थे। जो पांच-छः मोपले कोठरी में घुस आए थे वे सुमति को पकड़े खड़े थे और उन्होंने उसके हाथ से छुरी छीन ली थी। वे इस पुष्प-सी कोमल कन्या को फूल के समान मसलने लग गये थे। ऐसी विकट स्थिति थी और चारों ओर फैले रक्त ने स्थिति की बीभत्सता को और भी अधिक बढ़ा दिया था।

'फजल! देखता क्या है!' एक मोपला सुमति के दोनों हाथों को, जो ऊपर की ओर उठे हुए थे, पकड़े खड़ा हुआ अपने साथी से कह रहा था। अरे कल उस झाड़ी से यही पखेरू अपने साथ आया था। परन्तु ऐटखान ने बीच में ही धोखा दे दिया। अब देखता क्या है? अन्यथा यदि उस मौलवी की टोली के लोग एक बार यहां आ पहुंचे तो वे इस छबीली को उठा लेंगे और फिर यह मौलवी के कब्जे में पहुंच जाएगी। तुम फिर मक्खियां मारते रह जाओगे।' ऐसा कहते हुए उस उन्मत्त ने सुमति के रक्त से सने कपोलों का चुम्बन लिया 'अरे यार, मेरे वास्ते भी रख!' इस प्रकार उच्छृंखल विनोद करते हुए वे पांच-छः पशु नितान्त कामोन्मित्त होकर घायल कन्या से लिपट गए।

समाज की सुव्यवस्थित अवस्था में मानव के मनोविकार मर्यादित और दबे रहते हैं। उसमें एक प्रकार का असन्तोष भी निहित होता है। राक्षसी प्रवृत्ति के लोगों में ये मनोविकार जितने उग्र होते हैं, उनमें असन्तोष भी उतना ही अधिक होता है। पाशविक वृत्ति के समाज में जब कभी विप्लव होता है तो यह दुष्ट और तामसी प्रवृत्ति और भी अधिक खुलकर खेलती है। इससे उनके कामुक विकारों की शान्ति नहीं हो पाती अपितु वे और भड़क उठते हैं। वह कन्या रक्त से सराबोर, बेहाल थी, बिलबिला रही थी। किन्तु कामुकता के इन जीवित पुतलों का इन्द्रियोन्माद और भी अधिक बढ़ गया था—'अरे यार! इस साली ने दो मुसलमानों को यहीं मार डाला है। इसलिये इससे अच्छी तरह प्रतिशोध लेना चाहिए। हां, जी भर के प्रतिशोध लेना चाहिए।' इस प्रकार कहते तथा खों-खों करके हांफते हुए इन नर-पशुओं ने इस कन्या से भयंकर बलात्कार करना आरम्भ कर दिया था। एक नहीं दो-दो, तीन-तीन नराधमों ने 'बदला लो'

कहते हुए उस बेबस कन्या का शीलभंग किया और इस अमानुषिक भीषण अत्याचार द्वारा वे अपनी कामवासना का अमानुषिक ढंग से ही समाधान कर रहे थे। इसी प्रकार 9-10 नराधमों ने इस कन्या के साथ बलात्कार कर अपने इन्द्रियोन्माद की जी भर कर पूर्ति की।

किन्तु यह बलात्कार इस निष्पाप और निरपराध कन्या से नहीं अपितु अब तो इसकी निर्जीव देह से हो रहा था। क्योंकि वह बेचारी तो कभी की इस भयंकर और क्रूर यातना को सहन करने में असमर्थ होकर इस संसार से विदा ले चुकी थी।

हां, उसने अपनी बलि दे दी थी। किन्तु एक धर्मवीर के समान ही वह शत्रुओं को मारते-मारते बलि हुई थी। गत दिवस वह इसी समय सुगंधित पुष्पों की माला गूंथ कर भगवान् श्रीरंग की मूर्ति को समर्पित करने के लिए स्नान के उपरान्त स्तोत्र-पाठ करती हुई जा रही थी। और देवपूजन के लिए जाती हुई इस पुष्प के समान सुकुमार और कोमल कन्या का स्पर्श करने में वायु को भी संकोच होता था। वायुदेव भी शायद सोचते होंगे कि अनेक जन्मों का संचित पुण्य जिसकी गांठ में है वही सौभाग्यशाली युवक इस कन्या का हाथ पकड़ेगा। परन्तु एक दिन और रात के पश्चात् ही दैव ने स्थिति कितनी अधिक परिवर्तित कर दी थी। और क्यों? भला क्या ऐसा था इसका? ऐसा उसने किसी का क्या अनिष्ट किया था? वह तो सर्पों से भी प्रेम करती थी। उसने जिस हिन्दू-जाति में जन्म लिया था उसी हिन्दू-जाति के समान उसने भी तो सर्पों को दूध पिलाया था।

और हां, यही तो था उसका अपराध कि उसने हिन्दू-जाति में जन्म ग्रहण किया था। केवल इसीलिए तो उसके समक्ष यह प्रसंग उपस्थित हुआ था। किन्तु इस स्थिति में ही तो उसने अपनी दृढ़ता का परिचय दिया था। इस भयंकर स्थिति में भी उसने हिन्दुत्व का परित्याग नहीं किया। अपितु एक धर्मवीर हिन्दू के समान हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू-धर्म के शत्रुओं को मारते-मारते ही उसका बलिदान हुआ। उसकी पवित्रता, सुमधुर कण्ठों से गाए 'स्तोत्रों' और पुष्पों की मालाओं के अर्पित करने से श्रीरंग जितने प्रसन्न नहीं हो पाए थे वे आज उसकी इस अशुद्ध, घायल और घावों से प्रवाहित होते रक्त से लथपथ और बलात्कार से अपवित्र हुई देह को देखकर सन्तुष्ट थे। देवालयों के शान्त, निर्विघ्न वायुमण्डल में, गोमुखी में हाथ डाले जो जप करते रहते हैं, केवल घंटे की मंजुल आवाज से जिनकी शांति भंग नहीं होती, ऐसे शान्त वातावरण में जो

पंच पकवानों और नैवेद्य को देवमूर्ति के समक्ष प्रस्तुत कर पूजन-वन्दन में तल्लीन रहते हैं, ऐसे भक्तों और पुजारियों की संख्या तो कम नहीं! उनकी पूजा भी परमात्मा स्वीकार करता है, जिसने जप करने वाले किसी हिन्दू साधु की अपेक्षा हिन्दू-धर्म और हिन्दू राष्ट्र पर भयंकर आपत्ति आने पर और सिर पर संगीनें तने रहने की स्थिति में भी न घबराते हुए हिन्दू-धर्म पर एकनिष्ठ रहते हुए लड़ते-लड़ते प्राण विसर्जित कर दिए और बलात्कार और बीभत्स अत्याचारों में भी अपनी निष्ठा को डगमग नहीं होने दिया, ऐसी यह हिन्दू-कन्या भी तो कम पवित्र नहीं थी। अरे नहीं-नहीं, उस की यह अशुद्ध स्थिति में भी की गई पावन पूजा ही अधिक शुद्ध है। देवताओं की दृष्टि में निश्चित ही उसकी पूजा अधिक मान्य है। क्योंकि इस भयंकर आपत्तिकाल, घोर राक्षसी अत्याचारों की घड़ी में देवालय में पद्मासन लगाकर बैठे रहने की अपेक्षा रणांगण में अपने पराक्रम का प्रदर्शन वेद, सती और धर्म का रक्षण करना ही अधिक गौरवास्पद है। हवन में समिधाएं समर्पित करने की तुलना में हुतात्माओं का प्राण-बलिदान देवताओं की दृष्टि में अधिक श्रेयस्कर है।

❑

7

गत प्रकरण में बताया गया है कि गोपुर ग्राम में सुमति का प्रतिशोध, उसके द्वारा पाले गए भयंकर नाग ने ऐटखान को डसकर और उसके प्राण लेकर लिया था। इधर मौलवी की टोली के लोग सुमति की खोज करते-करते उसी ग्राम में आ पहुंचे थे। ऐटखान और मौलवी में अधिकार के लिए एक-दूसरे से प्रतिद्वन्द्विता चल रही थी। दोनों ही अपने-आपको खलीफा द्वारा नियुक्त कलक्टर कहते हुए कुट्टम तथा गोपुर इन दोनों ही तालुकों में घूम रहे थे। इनमें से ऐटखान लोगों को शिया पंथ की दीक्षा देता था, तो मौलवी सुन्नी पंथ का अनुयायी था। इसलिए भी इन दोनों में भयंकर द्वेष था, क्योंकि मुसलमानों के इन दोनों पक्षों में परम्परागत रूप से यह द्वेष चला आ रहा है। सुन्नी हिन्दुओं को काफिर समझते हुए भी एक बार क्षमादान दे सकते हैं, शिया तो फूटी आंखों नहीं सुहाते। मौलवी इसीलिए ऐटखान के विरुद्ध यह प्रचार भी करता था कि वह शिया है, अतः वह खिलाफत राज्य के प्रति कदापि राज्यनिष्ठ नहीं हो सकता।

स्वराज्य अर्थात् खिलाफत राज्य और एकता का तात्पर्य है सभी हिन्दुओं

को एक मुसलमान जाति का अंग बना देना, यह जो व्याख्या दी गई थी उस को मौलवी ने नया रूप दे दिया था। वह कहता था कि खिलाफती रांज्य का अर्थ है सुन्नी राज्य और एकता का अर्थ सब हिन्दुओं को ही नहीं अपितु सभी शिया मुसलमानों को काफिर व दांभिक बताते हुए नामशेष कर दिया जाए। कुट्टम ग्राम पर तो उसने उसी रात्रि को अधिकार कर लिया था और उसे यह भी विदित हो गया था कि सुमति गोपुर ग्राम के मार्ग से निकल गई है। एक तो वह पहले ही ऐटखान से बहुत अधिक द्वेष करता था, किन्तु सुमति के उसके क्षेत्र में चले जाने के समाचार ने तो इस अग्नि में घी का काम कर दिया था। इसलिए उसने अपने शिया प्रतिद्वन्द्वी ऐटखान और उसकी टोली का सर्वनाश ही कर देने का संकल्प कर लिया था। इसीलिए मौलवी की टोली ने अचानक ही गोपुर ग्राम पर धावा बोल दिया था। मौलवी को अभी तक यह विदित नहीं हो पाया था कि ऐटखान को सुमति के प्रिय सर्प ने सदा के लिए मुल्के-अदम भेज दिया है। अत: मौलवी की टोली मारकाट करती, मार्ग बनाती वहां आ पहुँची थी जहाँ ऐटखान ने मुख्य थाना बनाकर सुमति को रखा था। जब ऐटखान की टोली के लोगों को मौलवी के दल के वहां आ धमकने की सूचना मिली तो वे सुमति की निर्जीव देह को वहीं छोड़कर भाग निकले। देव-पूजा के लिये निर्मित पुष्पमाला-सरीखी उस पावन, सुकुमार सुन्दर कन्या की पार्थिव देह को वहां पड़े हुए पाकर उन पापी मोपलों के मन भी उन्हें कचोटने लगे। मानव-स्वभाव का निरीक्षण करने वाली यह बात उल्लेखनीय है कि मानव स्वत: अनेक बार जो पाप बड़ी आसानी सहित करता है वही जब वह दूसरे द्वारा किये जाते हुए देखता है अथवा उसके सम्बन्ध में सुनता है तो वह उस कृत्य के करने वाले को हृदय से धिक्कारता है। यही मानवीय स्वभाव है। अत: फजल इत्यादि मोपलों द्वारा किए गए इस घृणित बलात्कार की मौलवी की टोली द्वारा जो इतनी अधिक भर्त्सना की जा रही थी, उसका एक कारण यह भी था कि मौलवी द्वारा इस कुकृत्य का अनुमोदन नहीं किया गया था। और साथ ही इस पापकृत्य का शिकार वह सुमति हुई थी जिस पर मौलवी की नजरें बहुत दिनों से गड़ी हुई थीं। जिसकी प्राप्ति की आकांक्षा के कारण ही मौलवी इस मोपला-विद्रोह में भाग लेने के लिए अत्यधिक उत्तेजित हुआ था। अत: मौलवी के क्रोध का वारपार नहीं रहा। उसने अपनी टोली के एक प्रमुख व्यक्ति हसन को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'हसन, यह शैतानी मनोवृत्ति का खुला दिग्दर्शन है, और ऐसे नरराक्षसों को साथ लेकर यह ऐटखान खिलाफती राज्य की पावन कीर्ति

को कलंकित करता हुआ घूम रहा था।'

'सरकार इस पावन ब्राह्मण की छोकरी के साथ किया गया यह अत्याचार इतना अधिक भंयकर है कि मैं समझता हूँ कि कोई भी सच्चा मुसलमान इतना भयंकर कृत्य कदापि नहीं करेगा।'

और तभी वह वजीर भी बोल उठा—'जिसने कुट्टम ग्राम में हुए दंगे के समय स्थूलेश्वर शास्त्री की पुत्री से उसके माता-पिता की उपस्थिति में ही घोर बलात्कार किया था। उसने कहा 'छी: ! जो इस प्रकार का पापकर्म करता है, वह सच्चा मुसलमान ही नहीं।'

तभी वहां खड़ा हुआ एक फकीर-सा दिखाई देने वाला मुसलमान बोला, 'यह बिल्कुल सही है। परन्तु वजीर, जिस रात्रि को कुट्टम ग्राम में दंगा हुआ था, उस समय जो कुछ हुआ उसे स्मरण रखते हुए यदि विचार किया जाए तो यही कहना होगा कि मलाबार में जातिवन्त मुसलमानों की संख्या बहुत ही कम है।'

'यह ऐटखान की टोली का मुसलमान है। पाजी कहां से आ टपका?' बड़े क्रोधसहित हसन फुंकार उठा।

'यह शिया मुसलमान है।' अब्दुल ने आरोप लगाया।

'यह मुसलमान ही नहीं है।' पागल मुहम्मद ने अपनी तान तोड़ी।

'मैं ऐटखान की टोली का नहीं और न मुझे मौलवी के दल से ही कोई सरोकार है। मैं शिया मुसलमान भी नहीं,और जिन अर्थों में तुम किसी को सुन्नी कहते हो उन अर्थों में मैं सुन्नी भी नहीं। और तुम लोग इस विद्रोह के आरम्भ होने से अब तक जो कुकृत्य करते आए हो, यदि वे मुसलमान धर्म की शिक्षाओं के अनुरूप हैं तो मुसलमान भी नहीं मैं। मैं तो उस टोली का हूँ, जिसके मुख्य पैगम्बर मुहम्मद थे। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। मैं तो यह समझता हूँ कि जो कुरान की शिक्षाओं को सही रूप में समझता है वह किसी पर भी बलात्कार को पाप समझता है। वस्तुतः हमें यह देखने से पहले कि कोई व्यक्ति हिन्दू है अथवा मुसलमान यह देखना चाहिए कि वह मनुष्य भी है कि नहीं। हिन्दू लोग भी तो मानव हैं, उनके साथ यह बलात्कार एक भयंकर अत्याचार है।'

'यह तो काफिरों के पक्ष में बोल रहा है। ये काफिर हिन्दू लोग ही अंग्रेजों की नौकरी करते हैं न।'

'अंग्रेजों की नौकरी तो मुसलमान भी करते हैं। तुर्कों के विरुद्ध हजारों

मुसलमान लड़े हैं। अतः यदि केवल इसीलिए कि हिन्दू अंग्रेजों की नौकरी करते हैं, उनके रक्त से फाग खेल रहे हो और उनके मन्दिर गिरा रहे हो तो मुसलमानों की मस्जिदें भी क्यों नहीं गिराते। हां! तनिक यह तो बताओ कि क्या तुम अंग्रेजों की नौकरी करना छुड़ाने के लिए ही उनकी निरपराध कन्याओं का पातिव्रत्य भंग कर अपनी कामाग्नि शान्त कर रहे हो?' तुम्हें अल्लाह की शपथ है। बोलो, क्या इन अत्याचारों के लिए खुदा तुम्हें माफी देगा? मैं मुसलमान हूँ अतः मैं तुमसे प्रश्न करता हूँ, क्या तुम्हें कुरान यही शिक्षा देता है?' उस फकीर ने उन मोपलों को चुनौती देते हुए कहा।

'अरे बेवकूफ! अल्लाह ईमानदारों के हजारों अपराध क्षमा करता है। अल्लाह बड़ा रहमदिल है। परन्तु तू तो कुरान का एक अक्षर भी नहीं पढ़ा। अन्यथा कभी तू जिहाद अथवा धर्मयुद्ध को पाप कहने की मूर्खता कर सकता था? जिहाद की व्यवस्था के अनुसार तो गैर मुसलमानों का सब माल, घर, लड़कियां और लड़के ये सभी मुसलमानों की सम्पत्ति हैं। चौथे अध्याय की पांचवीं आयत में क्या कहा गया है? तूने कुरान पढ़ा ही नहीं है। अथवा तू कोई सूफी है अथवा बाबी है या फिर तू कोई शिया है।'

'तू शिया है! तू बाबी है! तू सूफी है!' यह आवाज लगाते हुए मौलवी की टोली के लोगों ने उस पर लाठियां चलानी आरम्भ कर दीं। ऐटखान की टोली के जो शिया थे वे इस अपमान को सहन नहीं कर पाए, अतः वे भी मौलवी के लोगों पर टूट पड़े। कुछ समय तक मुसलमानों के इन दोनों पक्षों में जमकर लड़ाई हुई, जिसके परिणामस्वरूप कई मोपले मारे गये। अनेक घायल होकर चीखने-चिल्लाने लगे। ऐटखान की मृत्यु के कारण विशृंखलित हुई उसकी टोली के लोग इधर-उधर प्राण बचाकर भाग निकले। लाठियों की मार से घायल होकर गिर जाने वाला वह फकीर वहीं पड़ा रह गया। परन्तु इस मारामारी में भी वह एक बार साहस संजोकर पुनः उठ खड़ा हुआ। उसने बड़ी ही गम्भीर वाणी में कहा, ''बन्धुओ! तुम्हारे इन आततायी कृत्यों से मुसलमानी मजहब पर जो कालिख पुत गई है उसका यथासम्भव प्रतिकार करने के कारण तुम मुझे काफिरों का वकील कह कर मुझ पर प्रहार कर रहे हो। निरपराध हिन्दुओं पर तुम जो तलवारें मेरे मना करने पर भी चला रहे हो वही तलवार एक दिन स्वयं तुम पर भी पड़ेगी। आततायी के रूप में जिस तलवार से दूसरों पर प्रहार किया जाता है, वही तलवार आक्रान्ता की भी मृत्यु का कारण बनती है। अभी भी तुम यह समझ लो कि राम और रहीम एक ही हैं। हां, अभी भी

तुम यह समझ जाओ।'

उस मुसलमान साधु के मुख से ये शब्द निकलते ही कई मोपले एक साथ चिल्ला उठे-'हरामी! हरामी! शैतान और अल्लाह को यह बदमाश एक ही समझता है।'

'अल्लाह रहीम को सरकतदार, जोड़ीदार बनाता है! मारो!' इस गर्जना के साथ ही साथ दो-तीन लाठियां उसकी कनपटी पर पड़ीं और उसकी खोपड़ी नारियल के समान तड़क कर फूट गई। उसकी मज्जा और मांस बाहर आ पड़े और वह मुसलमान वहीं पर दम तोड़ गया।

'अल्लाह हो अकबर।' कहता हुआ मौलवी गरजा।

'अल्लाह हो अकबर' का घोष लगाकर मोपले ने उसका साथ दिया।

इस प्रकार ऐटखान की टोली को पराजित कर गोपुर तालुका पर भी अपना अधिकार जमा लेने के उपरान्त मौलवी कुट्टम ग्राम को वापस लौट चला। उसके मन में रह-रहकर एक ही मलाल उभरता था और वह था सुमति का निधन। उसका हृदय क्षुब्ध था, उदासी बढ़ती जा रही थी। अभी वह आधे मार्ग में ही पहुंच पाया था कि पगले मुहम्मद ने पुनः उसके कन्धे पर आकर हाथ रखा और बोल उठा, 'सरकार सुमति जीवित है।'

मौलवी ने दुखी होते हुए कहा, 'मूर्ख वह मर गई है, यह तो मैंने प्रत्यक्ष देखा है।'

'सरकार, लेकिन वह फिर जीवित हो गई है। अल्लाह की कसम, देख लीजिए वह रही सुमति!'

मौलवी ने मन ही मन खिन्न होते हुए कहा, 'अच्छा दिखा, न जाने किस लड़की को तू सुमति समझ बैठा है।'

कुछ लोग मुहम्मद द्वारा जिस लड़की को सुमति बताया जा रहा था, उसे देखने गए। मौलवी भी वहां पहुंचा। उसने उस लड़की को देखा और समझ गया कि यह सुमति नहीं है। किन्तु साथ ही उसे देखते-देखते ही मौलवी की निराशा पहले के समान तीव्र नहीं रही। वह कन्या भी सुमति के समान ही आकर्षक थी और वह सुमति का विकल्प बन सकती है, मौलवी के मन में यह विचार उदित हुआ।

खो-खो हंसता हुआ मुहम्मद पागल बोल उठा, सरकार, यह तो लक्ष्मी है। इसे ही मैने हरिहर का पैर तोड़ कर पकड़ने का प्रयास किया था और आखिरकार यह पकड़ ही ली गई।

'चुप रे मूर्ख। इसे तू सुमति बता रहा था, भला इसका भी कोई कारण है?'.....मौलवी ने क्रोध का प्रदर्शन करते हुए कहा।

थर-थर काँपते हुए मुहम्मद ने उत्तर दिया 'जिस कारण से आपने उस रात्रि में कुट्टम ग्राम में इसे सुमति समझ लिया था बस उसी कारण से मैं भी गोपुर ग्राम में इसे दिन के उजाले में ही सुमति समझ बैठा, हुजूर।'

लक्ष्मी भी वस्तुतः सुमति की ही प्रतिमूर्ति-सी प्रतीत होती थी। जिस चिन्तामणि शास्त्री को चारों वेद कण्ठस्थ थे उसी के पवित्र कुल में इस कन्या ने जन्म लिया था। जिस प्रकार कोई बौना मनुष्य वृक्ष पर ऊंचाई से लगे किसी फल को अपनी एक कूद से तोड़ लेने में सफलता प्राप्त कर लेने पर समाधान का अनुभव करता है, उसी भांति सुमति-सरीखी ब्राह्मण-कन्या को भ्रष्ट कर, अपने उपयोग में लाने की मौलवी की इच्छा थी। किन्तु वह अब लक्ष्मी के सहारे ही वह पूर्ण करने पर तुल गया था। 'धर्मवीरत्व' का उत्साह अब पुनः उसके मन पर पागलपन-सा सवार हो बैठा था। उसने उस दीन, संकटग्रस्त, वनवास और अपमान से कृशकाय हुई कन्या का स्पर्श किया और बोला, 'तू' निर्भय हो। मैं तेरे मन में जो भी दुःख है, उस सबको दूर कर दूंगा।' यह आश्वासन देते हुए उसने लक्ष्मी को अपनी ही गाड़ी में बैठा लिया। क्षीणशक्ति और दुःखों से प्रतिकार की भी क्षमता खो बैठी यह कन्या भी गुपचुप गाड़ी में बैठी रही।

मौलवी अपनी टोली सहित कुट्टम ग्राम में वापस लौट आया। इन तीन-चार दिनों में ही कुट्टम की स्थिति में कितना महान् अन्तर आ गया था। आज नारियल और पोफली के वृक्षों की सघन छाया तले बने हुए इन घरों में जहां कभी वेदों के मंजुल घोष गूंजा करते थे, वहां आज उनमें उस रात्रि में बहा रक्त अभी तक भी नहीं सूख पाया था। हरिहर शास्त्री के निवास-स्थान को ही मौलवी ने अपने मुख्यालय में बदल दिया था। अब उसे कलेक्टर का बंगला कहा जाने लगा था। और स्थूलेश्वर शास्त्री का वह आंगन जिसमें उसने अस्पृश्य हिन्दू के आने के स्थान पर मुसलमानों के घुस आने को अच्छा बताया था मौलवी की टोली के अधिकारियों और सैनिकों के लिये मांस पक रहा था। चिन्तामणि शास्त्री की वह वेदशाला जहां कभी चारों वेदों का सतत पाठ होता रहता था, वहां अब कसाई की तलवार के आगे थर-थर कांपती, रम्भाती हुई गउएं ही दृष्टिगोचर हो रही थीं। जिन पात्रों में जल डालकर ब्राह्मणों ने गत दिवस सन्ध्या की थी उन्हीं पात्रों में आज मोपले दारू भर-भर कर पी रहे थे।

सम्पूर्ण रात्रि-भर लड़ते-लड़ते धर्मवीरों ने जिस श्रीरंग के पावन देवालय की रक्षा की थी और घायल होकर अगले दिन कम्बु थिय्या भयंकर घाव लगने के कारण शत्रुओं द्वारा बन्दी बना लिया गया था, उस देवालय पर अब मौलवी का अधिकार था। वहां से श्रीरंग की पावन प्रतिमा हटा दी गई थी। और मुसलमानी मस्जिद के समान देवालय पर तीन मीनारे खड़ी कर दी गई थीं। देवालय पर लहराता हुआ हिन्दू-ध्वज उतार कर उसके स्थान पर वहां तुर्की का हरा झण्डा लहरा दिया गया था। उन भ्रष्ट काफिरों का देवालय 'ईमानदार' सत्व धर्मियों की प्रार्थना के योग्य हो जाए, इसलिए एक जवान गाय की हत्या कर उसका रक्त इस देवालय में यत्र-तत्र बिखेरा गया था। जिस प्रकार मूर्ख काफिर गंगाजल छिड़ककर इसे शुद्ध किया करते थे, उसी प्रकार वहां अब रक्त छिड़ककर उसे पाक किया गया था। इन सब संस्कारों के उपरान्त यह मस्जिद भी अब उतनी ही पवित्र हो गई थी जितना पावन वह मौलवी स्वयं था। ग्राम के सभी हिन्दुओं के घरों को तीन दिन तक जी भरकर लूटते रहने के पश्चात् जो सामान इस धर्मयुद्ध के उपहार स्वरूप उपलब्ध हुआ था वह मोपला धर्मवीरों में बांटा जा रहा था। ब्राह्मणों, नायरों और वैश्यों के अच्छे-अच्छे घरों को चुन-चुन कर मोपाला सरदारों को प्रदान कर दिया गया था। और ग्राम के सभी धनिकों को, काफिरों को, चोरों के समान एक बन्दीगृह में बन्द कर दिया गया था। कभी जिस तालाब से 150 फुट की दूरी पर ही कम्बु-सरीखे हिन्दू-धर्म के रक्षकों के आने से स्पृश्य हिन्दुओं का धर्म रसातल को चला जाता था अब उसी तालाब में गो-रक्त मिश्रित कर उसी का पानी खिलाफती राज्य के अधिकारी उन हिन्दुओं को पीने के लिए दे रहे थे। और इस पानी के वितरित करने का कार्य कर रहा था वही क्षत्रिय कुलावतंस सीताराम नायर, जिसने तालाब से 150 फुट से आगे आ जाने के अपराध में कम्बु को लात मारी थी।

कुट्टम की स्थिति इतनी भयंकर हो चुकी थी। किन्तु अभी तो उसकी भयंकरता पर कलश चढ़ना था। अभी तो इस स्थिति के परिवर्तन का मर्म अभिव्यक्त होना बाकी ही रह गया था।

वह मर्म आज व्यक्त होगा। कारण कि आज इन सभी बन्दियों का फैसला किया जाना है। उनका सबसे घोर अपराध यही था कि वे हिन्दू के रूप में जन्मे थे और मुसलमान मोपलों के खिलाफत राज्य की स्थापना हो जाने के उपरान्त भी अपने घर-बार, महिलाओं और संपत्ति को अपना मानते थे।

जिस उपवन के पुष्पों का चयन कर सुमति देवता की पूजा के लिए माला

गूंथा करती थी, उसी उद्यान के मैदान में एक उच्चासन पर मौलवी आसीन था। पैर टेकने के लिए भी एक पांव-पीठ लगी हुई थी। कैसे बनाई गई थी यह? तो श्रीरंग की उस सुन्दर प्रतिमा को खण्डित कर उसी से पैर टेकने का यह पैरों का आसन निर्माण किया गया था। उस पर पांव टेक कर मौलवी ने न्याय आरम्भ करने का आदेश दिया।

इस प्रान्त में न्याय के लिए प्रख्यात मोपलों का पुरोहित-वर्ग थंगल कहा जाता है। उन्हीं में से एक को बुलाया गया था। मौलवी का आदेश होते ही हिन्दू बन्दियों को बन्दीगृह से वहां लाकर उपस्थित किया गया और थंगल बोला—'अल्लाह के बन्दों की जय-जयकार हो! मलाबार में खिलाफत राज्य की स्थापना हो गई है, और शीघ्र ही सम्पूर्ण जगत् में होने वाली है। अब इस राज्य में सम्पूर्ण पाखण्ड, मूर्तिपूजा तथा मुहम्मद पैगम्बर (अल्लाह उनकी आत्मा को शान्ति दे) के वचनों को न मानने वाले नास्तिक, इन तीनों का ही बीज भी नहीं रहने देना चाहिए, यह आदेश मुझे कल अल्लाह ने दे दिया है। हे विश्वास न करने वालो! देखो, तनिक अच्छी तरह देखो। देखो-देखो आकाश के मध्य वह काली-सी रेखा! वह फटी! या अल्लाह। क्या खूबसूरती है।'

यह कहते हुए थंगल आकाश की ओर दृष्टि गड़ाए हंसता-हंसता निश्चल व तन्मय होकर बैठ गया। सम्पूर्ण सभा आश्चर्यचकित रह गई और सभी लोग आकाश की ओर झांकने लग गए। इतने में ही वह मुहम्मद नामक पगला बोल उठा—'ओहो! आकाश के ठीक बीचों-बीच यह कैसा दृश्य दिखाई दे रहा है।'

आश्चर्य से आंखें फाड़ता हुआ थंगल बोला, 'क्या तूने देखा है वह प्रकाश? मौलवी में यह पुण्यवान् मनुष्य है। इसे एक ओर हटा लो! अच्छा! उस आकाश में कौन-सी सुन्दर चीज तेरी आंखों में दिखाई दे रही है?

मुहम्मद ने झटका सा देते हुए कहा, 'अन्धकार!' उसके झटके से अपने को संभालता हुआ थंगल बोला, 'मौलवी, यह तो पापी मनुष्य है। इसे बाहर निकाल दो। इसकी प्रथम पुण्याई के कारण इसे थोड़ी सी दिव्य-दृष्टि मिली थी, परन्तु इतने से ही इसमें अहंकार जागृत हो गया। इसीलिए अल्लाह ने इसकी आंखों पर अंधकार का पर्दा डाल दिया है! अल्लाह समर्थ है।'

'ओहो! ओहो! क्या खूबसूरती है' थंगल बड़ी ही आनन्दपूर्ण तन्मय मुद्रा सहित बार-बार आकाश की ओर देखता हुआ बोला, 'अल्लाह तू धर्मवीरों पर कितना अधिक प्रसन्न है।' इस प्रकार बड़ी ही भक्ति और अनुरक्ति प्रदर्शित करते हुए उसने पुनः कहा, 'अब जो महान् दृश्य मुझे दिखाई दिया है, हे

मुसलमानो! तुम सबको भी उसका दर्शन हो सकता है। तुम जानते हो कि मुझे क्या दिखाई दे रहा है?'

बड़ी ही उत्सुकता-सहित सैकड़ों विश्वासनिष्ठ मोपले बोल पड़े 'नहीं आचार्य!'

'बताऊं तुम्हें?'

बड़ी ही व्यग्रता सहित वे चमत्कार-लोलुप मोपले बोले—

'बताइए। हम आपके पांव पड़ते हैं, आचार्य बताइए।'

'मुझे परी दिखाई दे रही है। उसके हाथों में क्या है? स्वर्ग के पुष्पों की माला। अरे उसके नेत्र कैसे हैं। ठीक वैसे ही जैसा कुरान में विवरण उपलब्ध है। काली-काली और लम्बी भौहें। वह माला, वह परी मोपला वीरों के गले में पहनाएगी। धर्मयुद्ध में जो आज मरेंगे उन्हीं के गले में वह परी माला डालेगी। जो धर्मयुद्ध में विजयी होंगे उनके गले में इस संसार के लोगों की माला पड़ेगी और उस जगत् में वह परी उनका आलिंगन करेगी और उन्हें माला समर्पित करेगी। यह है धर्मवीरों को मिलने वाला फल और भला काफिरों का क्या मिलेगा? तोबा! तोबा!'

'तोबा! तोबा!' फड़कते हुए वे मोपले बोल उठे।

ईश्वर और पैगम्बर पर जिनको विश्वास नहीं है, वे काफिर हैं। भला उनको क्या फल भोगना पड़ता है? वे भयंकर नरकाग्नि में दग्ध होते हैं। उन्हें दुर्गन्ध में रहना पड़ता है और गली-सड़ी वस्तुएं ही उन्हें मिल पाती हैं, उनका अंग-अंग नोचा जाता है। फिर वे पश्चात्ताप भी व्यक्त करते हैं तो वह भी खुदा को स्वीकार नहीं होता। कुरान शरीफ में यह बात स्पष्ट शब्दों में बता दी गई है। तोबा! तोबा! भली-भांति समझ लो अरे काफिरो, अरे बन्दियो! मैं तुम्हें अल्लाह के हुक्म से ही यह बता रहा हूँ कि यदि तुम नरक की इस आग से जलने से बचना चाहते हो तो शीघ्रातिशीघ्र इस्लाम धर्म स्वीकार कर लो नहीं तो तुम्हें इस संसार में मिलेगी मौत और उस दुनिया में दोजख की आग! यही है तुम्हारा पारितोषिक, बोलो तुम क्या चाहते हो? आज ही फैसले का दिन है। आज सायंकाल तक खिलाफत राज्य में एक भी काफिर जीवित नहीं रह पाएगा। इस खिलाफत राज्य में आज सायंकाल तक सम्पूर्ण देश मुसलमान हो जाना चाहिए। हां, तो ले आओ पहली टोली को।'

नंगी तलवारें चमकाते हुए 50 मोपले एक घेरा बनाकर खड़े हो गए थे। वे एक ओर से थोड़े हटे। उस स्थान से 25 हिन्दू बन्दियों की एक टोली उस

घेरे के बीच प्रविष्ट हुई और उन्होंने पुनः घेरा बन्द कर लिया!

दीन-दुःखी, फूट-फूटकर रोती हुई महिलाएं, नीच अधर्मियों ने अपनी क्रूरता का प्रदर्शन कर जिनकी साड़ियां भी फाड़ दी थीं, ऐसी अर्धनग्न कुमारियां कि जिनकी लज्जा का हरण किया गया था, अपने पिताओं के समक्ष इस निर्लज्ज अवस्था और अर्धभ्रष्ट और अर्धनग्न स्थिति में रहने पर विवश पुत्रियां जो मरने से भी परे मरने सरीखी हो गई थीं तथा अपनी पुत्रियों और स्त्रियों के सम्मान और जीवन को अपनी आंखों के समक्ष सर्वनाश होते हुए देखने पर विवश अपने पौरुष को धिक्कारते हुए पिता, अपनी छातियों से बालकों को चिपटाए हुए स्त्रियां और अपने वृद्ध दादा-दादियों के हाथ पकड़े हुए बालक, ये सभी थर-थर कांपते हुए तलवारों से ही बनाए गए उस घेरे में उसी प्रकार रोते और गायों के समान ही डकराते हुए घुसा दिए गए।

उनसे पूछा गया कि 'बोलो मुसलमान होते हो अथवा नहीं।' इन सभी को चार दिन तक बन्दीगृह में खाने-पीने की दृष्टि से त्रास देते-देते सताया गया था। अतः इन क्षीण-शक्ति और क्षीण-भक्ति लोगों ने कोई उत्तर न दिया। पुनः पूछा गया कि बोलो 'मुसलमान होते हो अथवा मरते हो।' इन बन्दियों में से सबसे पहले एक ने उत्तर दिया, 'मरने को तैयार हैं।'

वह कौन था? वह था, वही कम्बु, जो श्रीरंग के देवालय की रक्षार्थ लड़ते-लड़ते घायल होकर गिर पड़ा था और बन्दी बना लिया गया था।

उस टोली में सबसे पहले उस अकेले के मुख से निकला था कि 'मैं मरने को तैयार हूँ।'

उस टोली में से सर्वप्रथम उसी अकेले की हत्या की गई।

और उसकी हत्या भी इतनी क्रूरता-सहित की गई कि हिन्दूधर्म का परित्याग न करने को तत्पर अन्य लोग भी समझ लें कि उन पर कितना भयंकर अत्याचार किया जायेगा, इसलिए उस थंगल ने उसे उस घेरे से एकदम बाहर निकाल कर उसे उस कुंए के पास लाकर खड़ा किया था, जिसके जल से सुमति अपने पुष्पों को पानी दिया करती थी। मैं मुसलमान होने को तैयार नहीं, जब कम्बु के मुख से पुनः यही गर्जना हुई तो उसके सिर का एक-एक केश खींचकर निकाला गया और फिर उसके शरीर के अनेक टुकड़े किए गए और फिर उसके शव, धड़ और शरीर के टुकड़ों को उस कुंए में फेंकते हुए धर्मवीरों ने 'अल्लाह हो अकबर' का एक जयघोष लगाया।

कम्बु के जीवन का इस भांति दुःखद अन्त होते हुए देखकर उस टोली में

से किसी ने भी हूँ-हां तक न की और मूक पशुओं के समान वे उस कुंए के पास ले जाए गए। वहां उनका मुंडन किया गया तथा शिखाएं काट दी गयीं और मुसलमान होने की पुष्टि के रूप में उन्हें गोमांस दिया गया। किन्तु उनमें से किसी ने भी उसे स्पर्श तक न किया। तब थंगल के आदेशोपरान्त उस टोली में से जो पुरुष और बालक थे उनके गुप्तांग उघाड़े गये। एक मौलवी हाथ में कुरान लेकर खड़ा हो गया और दूसरे ने हाथ में छुरी सम्भाली। कुरान का पाठ होता रहा और बड़ी तेजी के साथ छुरी हाथ में लेकर आने वाले मौलवी ने दो-तीन दुबले-पतले हिन्दुओं के गुप्तांगों की थोड़ी सी खाल कतर दी। 'हाय, हाय' कर अकुलाते और बिलखते गए उन लोगों को बताया गया, 'अल्लाह के प्रिय पैगम्बर की आज्ञा के अनुरूप अब तुम्हारी सुन्नत कर दी गई है। अब तुम मुसलमान हो गए हो। अब तुम धर्मानुसार आचरण करो। अब स्वर्ग भी तुम्हारे लिए सुरक्षित हो गया। किन्तु यदि तुम पुनः हिन्दुओं में मिले अथवा उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध रखा तो तुम मुसलमान धर्म से पथभ्रष्ट हो जाओगे और फिर धर्माज्ञा के अनुसार तुम्हारा वध कर दिया जाएगा।' इसके पश्चात् उन सभी को—स्त्रियों और पुरुषों को मोपलों के समान वस्त्र पहनने को दिए गए।

'दूसरी टोली को लाया जाए।' थंगल गरज उठा।

तभी उसी प्रकार तलवार उठाए हुए मोपलों के घेरे में पच्चीस-तीस हिन्दुओं की एक और टोली वहां लाई गई। तभी एक थिय्या ने बड़े क्रोध सहित एक वृद्ध महिला को धक्का देकर अपने से दूर कर दिया और बोला, 'बुढ़िया तू जाति की मसकुनि—डोंब है ना! और फिर मुझ महान् को छू रही है। दूर हो जा। यह देखते ही खो-खो करती हुई हिन्दुओं के घर अपनी मशाल से जलाने वाली वह मोपला-वृद्धा गरज उठी, 'मरो, तुम्हारी आंखें अब तक भी नहीं खुल पाई हैं क्या ? अरे तुम हिन्दुओं को कुछ दिखाई देने लगे इसीलिए तो मैंने यह मशाल जला और आग लगाती हुई घूम रही हूँ। परन्तु तुम्हें तो अभी भी कुछ दिखाई नहीं देता। मरो मुसलमानों के बन्दीगृह में, उनके राज्य में तुमने धक्के खाये हैं, हाथ-पैर तुड़वाये हैं, गो-रक्त से सने अपने हाथों को मैंने उस तालाब में धोया है, जिसका पानी तुम्हें पिलाया जा रहा है, परन्तु तुम्हारा अनिष्ट होने और छुआछूत का भूत अभी तक भी नहीं उतर पाया है। डोम्बों से छू जाने से महारे का अनिष्ट हो जाता है ना ? अरे, जीवित रहते हुए तो तुमने कभी हम हिन्दू एक जाति हैं इस दृष्टि से इकट्ठे होने का प्रयास किया ही नहीं। पर मुर्दो ! अब हिन्दू होने के कारण जब तुम मृत्यु के द्वार पर आ पहुंचे हो, फिर भी इकट्ठे

होने को तैयार नहीं हो! मरो मुर्दे कहीं के।'

'मुसलमान होते हो कि मरने को तैयार हो?' थंगल ने पूछा। 'मैं मरने को तैयार हूँ।' 'मैं मरने को तैयार हूँ।'

'मैं भी मृत्यु को गले लगाऊंगा।' दस-बारह कण्ठों से एक साथ यह स्वर गूंज उठे। थंगल चकित रह गया। बोला इन सबको इस टोली से बाहर निकाल लो। तब एक व्यक्ति जो अपने एक ही पांव से किसी-न-किसी प्रकार चल रहा था, जिसकी दूसरी टांग कटी हुई थी, और जिसमें चार दिन से निरन्तर रक्त बहते-बहते घाव बन गया था तथा दुर्गन्ध आ रही थी, वह सबसे पहले आगे बढ़ा। वह व्यक्ति था हरिहर शास्त्री। उसके मुख से राम-राम की ध्वनि गूंज रही थी।

उसे देखते ही अपनी मशाल उसके सामने करती हुई वह मोपला-वृद्धा आगे बढ़ी। उसने अपनी मशाल हरिहर शास्त्री के इतना अधिक सामने कर दी कि उनके नेत्र ही जलने लगे। और बोली, 'रे मूर्ख ब्राह्मण! देख, तेरी व तेरी हिन्दू-जाति की कैसी दुर्दशा हो रही है। देख, तू जीवित रहते हुए भी रक्त से सना और घावों से भरा नरक में सड़ रहा है। और मूर्ख तूने तो मेरे समान किसी पर अत्याचार नहीं किया, किसी के घर को आग नहीं लगाई। कोई घोर पाप-कर्म नहीं किया। केवल वेदों को ही रटता रहा। सदा पुनीत-कर्म किए। फिर भी तू जीवित रहते ही नरक भोग रहा है। तेरे अंगों में कीड़े पड़ रहे हैं। और देख, मुझे देख! इस मौलवी पर दृष्टि डाल, उस थंगल को देख, कैसे स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हैं। बस केवल अल्लाह पर, पैगम्बर पर हमारा विश्वास है। इतने मात्र से ही हम इस संसार में सुख भोग रहे हैं। और तूने तो केवल पुण्य करते और पोथियां पढ़ते हुए जीवन बिता दिया है। न्याय की विजय होगी, आदि की तू रट लगाता रहा है। केवल कल्पनालोक में ही विचरण करता रहा है। पर आज ये तेरी सारी कल्पनाएं मिट्टी के घरौंदे सिद्ध हुई हैं। क्या अभी भी तुझे यह दिखाई नहीं दिया कि पाप से बचकर इस संसार में रहना मुश्किल है?' यह कहते हुए उस वृद्धा ने पुनः अपनी मशाल हरिहर शास्त्री के नेत्रों की ओर बढ़ा दी। और हरिहर शास्त्री ने उसके ताप से झुलसते हुए पुनः उच्चारण किया 'राम! राम! राम!'

'अभी भी मरा कहीं का राम-राम की ही रट लगा रहा है।' यह कहती हुई उस निष्ठुर वृद्धा का ठहाका पुनः गूंज उठा।

उसी वीर ब्राह्मण को अपनी शारीरिक वेदना से भी अधिक यह अपमान

और मानसिक वेदना सहन नहीं हो पा रही थी। उसके पीछे ही था चिन्तामणि शास्त्री और शास्त्री के साथ-ही-साथ थे कम्बु की टोली के दो थिय्या नवयुवक! कृष्ण नायर वैद्य जो श्रीरंग के पावन देवालय की रक्षार्थ लड़ते-लड़ते घायल हो गया था। वह उन नवयुवकों के पीछे खड़ा था। उन थिय्या तरुणों को संबोधित करते हुए थंगल ने कहा, 'हे तरुण'! इन ब्राह्मणों और क्षत्रियों के पीछे लगकर भला तुम क्यों बिना कारण ही मौत को बुलावा दे रहे हो। तुम मुसलमान हो जाओ तो इन हिन्दू स्त्रियों में से ही छांटकर दे दूंगा। और फिर तुम सुख सहित जीवन-यापन करना।'

परन्तु अभी वह थंगल यह वाक्य भी पूरा नहीं कर पाया था कि वे महार तरुण बोल उठे, 'चुप रे मूर्ख! हमारा एक बाप है और वह हिन्दू है। अत: हम भी हिन्दू ही हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य कहार और मांग सभी एक हिन्दू पिता की सन्ताने हैं। हमारे पिता का नाम महादेव! हम सभी एक ही हिन्दू माता की सन्तानें हैं, और हमारी माता का नाम है हिन्दू-जाति!'

और उन सभी ने एक-दूसरे के गले में हाथ डाल लिए। तभी अपने मध्य उस घायल वीर ब्राह्मण को लेकर वे गरज उठे हर हर महादेव। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और महार सभी अपनी-अपनी जाति और गोत्र को बिसार समवेत स्वर में बोल उठे 'हिन्दू-जाति की जय! हिन्दू-जाति की जय!'

अकस्मात् प्रदीप्त हुई, इस हौतात्म्य भावना की इस दीप्ति से ठीक वैसा दृश्य उपस्थित हो गया जैसा घटाटोप अन्धकार में सहसा ही बिजली ही बिजली चमकने से होता है। मोपले भी स्तम्भित रह गए। और वह मोपला-वृद्धा तनिक तिरस्कारपूर्वक हंसती हुई तथा अपने मन का समाधान करने की कुचेष्टा करती हुई बोली, 'सीखा, मरों ने आखिर एकत्रित होकर मरना सीखा। परन्तु एकत्रित होकर मरने से हिन्दू-जाति की जय नहीं होगी। जैसे आज तुमने एकत्रित होकर मरना सीखा है। जब तुम इसी प्रकार संगठित होकर जीना सीख जाओगे, उस दिन हिन्दू-जाति की जय की गर्जना करना। मरते हुए जय-गर्जना करना तो अरे मुर्दो! कोरी विडम्बना ही है।'

'नहीं' हरिहर शास्त्री गरज उठे। 'विडम्बना नहीं, तू जो कहती है, वह राक्षसी सत्य है। परन्तु हमारा यह एकत्रित होकर मरना ही हिन्दू-जाति को एकत्रित होकर जीवित रहना तथा संगठित होकर विजय प्राप्त करने का पथ प्रदर्शित करेगा।'

'जानकी जीवन राम! राम! पतितपावन सीताराम!' कहते हुए वीर स्वर-

ताल सहित भजन करने लगे। तब उन्हें भी उस कुंए पर ले जाया गया। वे तलवार चमकाते हुए मोपले इन निःशस्त्र बन्दियों पर टूट पड़े। तलवारों के वार खटाखट उन पर हुए। हरिहर शास्त्री का आधा मस्तक कट कर गिर पड़ा फिर भी यही ध्वनि गूंजती रही। 'जानकी जीवन राम! राम! पतित पावन सीताराम!'

आधा मस्तक कट कर गिर पड़ा, और आधा लटक रहा था। भयंकर रक्तस्राव हो रहा था और अभी भी वायुमण्डल में यही स्वर गुंजित हो रहा था, 'जानकी जीवन राम! राम! पतितपावन सीताराम!'

उस थिय्या तरुण का हाथ तलवार का वार पड़ने से कट कर हरिहर के रक्त की तरंग में जा पड़ा। वृद्धा मसकुनि के दो टुकड़े हो गए। उसका एक टुकड़ा कृष्णानायर वैद्य के ऊपर गिरा और दूसरा टुकड़ा एक मोपले ने मनोरंजन करते हुए काठी के समान नायर पर फेंक दिया। उसके रक्त से कृष्ण नायर का सम्पूर्ण शरीर सराबोर हो गया। तभी कटकटाती हुई तलवार का एक वार उसके नेत्रों में घुस गया। उसके नेत्र बाहर निकल कर गिर पड़े। कृष्ण नायर पर जो वार पड़ा था उससे तलवार उसके कन्धे को चीरती हुई निकल गई थी और एक चीख के साथ उनकी नश्वर काया को पड़ा छोड़ प्राणों ने विदा ले ली थी। चारों ओर चीख-पुकार, कराह और वेदना तथा मारो! मत मारो-मारो! की भयंकर आवाज गूंज रही थी। कोई हिन्दू वीर मारा गया और कोई दम तोड़ रहा है।

पतितपावन राम राम! जानकी जीवन राम! राम! वे सभी मार डाले गए थे। और मरने वालों की देहों के टुकड़े, अस्थि, मज्जा और तड़पते हुए अंग-प्रत्यंगों को मोपलों ने अपनी ठोकरों से धकेल दिया था उस कुंए में। इस प्रकार ये सभी मृत्यु का ग्रास बन गए थे।

पतितपावन राम राम! राम! जानकी जीवन राम! राम! राम! यह भजन विलीन हो गया था। बाकी जो हिन्दू डर गये थे उनके सिर मूंड कर तथा सुन्नत करके उन्हें मोपलों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्र पहना दिए गए थे।

'तीसरी टोली' कहते हुए थंगल गरजा। तीसरी टोली आई, उसे भी पूर्ववत् सशस्त्र मोपला दल ने अपने घेरे में ले लिया। इनमें से जिन्होंने मुसलमान बनना स्वीकार किया उन्हें छोड़ कर जो लोग बाकी बचे उनमें से कुछ की हत्या कर दी गई और कुछ को अधमरा करके ही उस कुंए में धकेल दिया। केवल तरुण कन्याएं ही इनकी तलवारों से बच सकीं, किन्तु उन्हें तो हत्या किए जाने से भी अधिक त्रास दिया जाना था, क्योंकि उन्हें दासियों के रूप में जीवन बिताना था।

'चौथी टोली' कहते हुए थंगल गरजा ही था कि तभी वहां घोड़े को पूरी गति सहित दौड़ते हुए पहुंचने वाले एक मोपले की आवाज गूंज उठी, वे आ गए! सरकार वे आ गए।'

बड़े आनन्द का अनुभव करते हुए थंगल बोला, 'अल्लाह की क्या तारीफ की जाए! कौन? अनवर पाशा की सेना आ गई है? वे मोपलों की सहायतार्थ दस हजार तुर्क, बीस हजार कुर्द और पच्चीस हजार अरबों को लेकर यहां पहुंचने वाले थे।

'अनवर पाशा गाजी है! बावन हजार अरब लोग आ रहे हैं।' सभा में जयघोष गूंज उठा।

'नहीं नहीं, अनवर पाशा नहीं।' बीच में ही उन्हें टोकते हुए उस घुड़सवार ने कहा। तभी मौलवी बोला, 'फिर कौन आया है? अफगानिस्तान का अमीर? दिल्ली पर तो मुसलमान वीरों का कभी का अधिकार हो चुका है। अमीर इस्लाम की खड्ग है।'

'अमीर इस्लाम की खड्ग है। परन्तु सरकार अमीर नहीं आया है।'

घुड़सवार अभी इतना ही कह पाया था कि उस वृद्धा ने अपनी मशाल को ऊंचा किया और समुद्र की ओर से उसे चमकाती हुई बोली, 'फिर कौन आये हैं? अरबस्थान से समुद्र मार्ग द्वारा खलीफा जी ने शस्त्रास्त्र भेजने थे, जिनके लिए कुट्टम के खिलाफत मंडल ने तीन लाख रुपए भेजे थे, तो क्या उन शस्त्रास्त्रों से लदे जहाज आ रहे हैं?'

'चुप बुढ़िया' यह कहते हुए उस घुड़सवार ने क्रोध व निराशा से क्षुब्ध होते हुए कहा, सरकार! वे अनवर पाशा, वह अमीर और हथियारों से भरे हुए अरबी जहाज तथा 52 हजार तुर्क तो जब आएंगे, तब आएंगे, परन्तु अभी तो वे आए हैं, वे हैं केवल गोरखे! हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों व देवमन्दिरों के कलश गिराए जाने और मूर्तियों के खण्डित किए जाने के समाचारों से क्षुब्ध होकर वे प्रतिशोध लेने की शपथ ग्रहण कर भयंकर 'खुकरी' धारण करने वाले गुरखे। जो कोई भी सशस्त्र मोपला उन्हें मिलता है उसे बन्दी बनाते हुए खिलाफती राज्य में आगे बढ़ते आ रहे हैं।'

'आने दो! चिन्ता की कोई बात नहीं।' थंगल ने उठकर दण्ड थपथपाते हुए किसी भूखे सिंह के समान कहा 'काफिर मुसलमानों का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। हे विश्वासनिष्ठ इस्लामी वीरो! इस आसमान की कसम! अब! ओहो! यह मैं क्या देख रहा हूँ? रुको, थोड़ा रुको! कौन हैं ये। मेरे नेत्र

बन्द हुए जा रहे हैं। फिर मैं अपनी आंखें खोलकर देख रहा हूँ। कैसा है ये तेज! कैसी है ये तलवार। हां, हां, देख लिया। विश्वासनिष्ठो, जेब्रिल अपने देवदूतों के सहित उतर रहा है।' या अल्लाह!'

'या अल्लाह! जेब्रिल अपने देवदूतों के सहित उतर रहा है।' मोपले उत्तेजित होकर गरजे।

अरे, इन गोरखों की क्या बात कहते हो। उसके मुकुट में तीन तारे लटक रहे हैं। यही है विजय का चिह्न।'

'यही है विजय का चिह्न' सभा में प्रतिध्वनि हुई। थंगल बोला, बेदर के युद्ध में जब पैगम्बर के लोगों पर काफिरों की सेना ने भारी अनर्थ किया तो इसी सेनापति जेब्रिल के साथ अल्लाह ने केवल दो हज़ार लोगों की सेना उसकी सहायता के लिए भेजी थी। उस समय भी इसके मुकुट में तीन तारे लटके हुए थे। अभी भी तीन ही तारे लटक रहे हैं। अहा हा, क्या तेज है!'

'ओहो , कैसा है ये तेज? हमें तो यह दिखाई नहीं देता।'

'परन्तु वह तुम्हें—तुम्हें भी दिखाई देगा।'

'किस तरह? किस तरह आचार्य, किस तरह?'

'हम पापियों को जेब्रिल के मुकुट के तीन तारे किस तरह दिखाई देंगे?'

'जब तुम काफिरों से लड़ते-लड़ते बलिदान हो जाओगे, तभी तुम्हें ये दिखाई देने लगेंगे। और काले-काले तथा बड़े-बड़े नेत्रों वाली वे परियां और सुन्दर किशोर हंसते हुए तुम्हारे साथ खड़े होंगे। 'सुर तुत्तूर' अध्याय में जो कुछ लिखा गया है वह सब सत्य है। तो बोलो, इसमें गोरखों के सम्बन्ध में क्या कहा गया है।'

'देवदूतों के सामने गोरखे?' सिंहों के समक्ष मच्छर के तुल्य हैं?' सभा में लोग गरज उठे।

तो फिर आज ही गोरखों पर धावा बोलने के लिए तैयार हो जाओ। मोपले खाली हाथ ही जायेंगे और काफिरों की बन्दूकों से गोलियां ही नहीं दग सकेंगी। काफिरों की गोलियां मोपलों पर नहीं चल सकतीं।

'तो फिर हम आज ही धावा बोल देंगे। अल्लाह हो अकबर! दीन-दीन'

'तो फिर निश्चय हो गया।' मौलवी बीच में ही बोल पड़ा, 'गोरखों पर तो धाव बोलना है परन्तु पहले हमें घर में बैठे इन सर्पों को, इन शत्रुओं को मिट्टी में मिलाना होगा, तभी हम चलेंगे। हे थंगल, अब जो बन्दी बाकी रह गए हैं, उनका फैसला एक साथ ही करते चलो। इस सम्बन्ध में और अधिक सोच-

विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। केवल इनमें से जो औरतें पसन्द आयें उन्हें अलग निकाल लो और बाकी सबको कत्ल कर दो। यदि ये शत्रु जीवित रह गये तो उन काफिर गोरखों से मिलकर यही हमारे नाश का कारण बन जायेंगे। मारो-मारो और झटपट इन्हें उसी कुएं में फैंक दो।'

इन क्रूर शब्दों के मौलवी के मुख से निकलते ही वे 200 हिन्दू बन्दी सहसा ही दुःख के सागर में डूब गये। वृद्ध महिलाएं, अबोध बालक, तरुण बाल-वृद्ध, स्त्रियां और पुरुष सभी के इस क्रूर मौलवी के शब्दों को सुनते ही प्राण सूख गए। 'मारो मत! मेरे पुत्र को, मेरी माता को, मेरे पिता को, मेरे भाई को मारो मत! मुझे मार दो, मैं मुसलमान नहीं बनूंगा। मत मारो, मैं मुसलमान हुआ जा रहा हूँ।' अनेक ध्वनियां, अनेक वेदनाएं, एक साथ कुहराम मच गया, उस मौलवी के कठोर शब्दों का हुआ यह परिणाम!

उस अत्याचारी मौलवी के उन कठोर शब्दों को सुनकर उत्तेजित हुए मोपला एकदम उन निःशस्त्र, भयभीत दीन-दुःखी बन्दियों पर टूट पड़े। जिसकी तलवार जिधर पड़ी उधर ही काटती चली गई। किसी का हाथ, किसी का पैर, किसी का सिर कटा। रक्त, मांस, मज्जा और अन्तड़ियां निकल-निकल कर बाहर आ गईं और इन सैकड़ों मानवों के प्राण ले लिए गए। उनके कटे हुए अंग-प्रत्यंग निर्जीव देह और अनेक तड़पते हुए लोगों को भी उस कुंए में धक्का देकर मिट्टी में मिला दिया गया।

मौलवी ने थंगल से पूछा, क्यों आचार्य, न्याय-कर्म पूर्ण हो गया ना ? और थंगल ने उत्तर दिया 'हाँ, सब काम पूरा हो गया है।'

मौलवी वहीं गम्भीर मुद्रा-सहित खड़ा हुआ और आसपास की जितनी दूरी तक देख सकता था देखकर बोला, 'ईमानदारो! अल्लाह की फतह! आज, इस क्षण मैं अपनी आयु के अति उच्च शिखर पर आरूढ़ होकर खुदा को अनेकानेक धन्यवाद देकर कहता हूँ कि मेरे हाथों से इस कुट्टम व गोपुर ताल्लुका में एक भी हिन्दू जीवित नहीं बच पाया है। मेरे राज्य में इस समय एक भी देवालय अथवा मूर्ति का अस्तित्व नहीं रह गया है। कुछ तो मुसलमान बनाए गए हैं, सैकड़ों काफिरों की हत्या कर दी गई है। अनेकों काफिरों व नास्तिकों का बीज नाश कर दिया गया है। सैकड़ों देवताओं को भूलुंठित कर दिया गया है। बस! अब केवल विश्वासी, सत्यधर्मी पैगम्बर और अल्लाह का जयघोष ही मेरे राज्य में सुनाई पड़ता है। अब इस खिलाफती राज्य में कोई भी अन्यायी, पापी, मूर्तिपूजक, अधर्मी और अत्याचारी बाकी नहीं बचा है।'

मौलवी का 'मेरे राज्य में' कहना तथा उस थंगल को कुछ भी महत्त्व न दिया जाना थंगल के मन को नहीं रुचा। फिर भी प्रकटतः विरोध न करते हुए किन्तु अपना महत्त्व स्पष्ट करने के लिये वह थंगल बीच में ही बोल उठा—

'परन्तु गोरखों के आने का जो समाचार प्रकट हुआ है यदि पहले ही उनका प्रतिकार न किया गया तो सम्भवतः अल्लाह तुमसे यह यश छीन लेगा। वहां से जेब्रिल की देवदूतों की सेना भी चल पड़ी है, अल्लाह उसे विजय प्रदान करे। किन्तु जब तक वह यहां पहुंचती है तब तक एक आवश्यक कार्य के रूप में जिस-जिस ने इस खिलाफती राज्य की स्थापनार्थ कष्ट सहन किए हैं, उनमें से प्रत्येक को यथोचित पारितोषिक दे दिया जाए। और इस कार्य से निवृत्त होते ही जितना शीघ्र हो सके अपने शत्रुओं की सेना को धुंए में मिला देने के लिए प्रस्थान कर दो। यह राज्य सभी के प्रयास से प्राप्त हुआ है। यह खिलाफत राज्य है। इसकी सम्पत्ति पर सबको समान रूप से अधिकार प्राप्त है।'

'सम्पत्ति सबकी है। सम्मिलित है।' सभा में गर्जना हुई।

'और मृत्यु भी सबकी एक साथ ही आएगी। वह वृद्धा खो-खो करती हुई हँस पड़ी।'

मौलवी की छाती में आघात-सा लगा, किन्तु मोपलों के मन में तुरन्त उत्तेजना का संचार करने के लिए बोला, 'हां, चलो और काफिरों की उन सब कन्याओं को मेरे पास भेज दो।'

वे सब युवतियां और किशोर कन्याएं जिनकी हत्या नहीं की गई थी एक स्थान पर एकत्रित कर ली गई थीं। उन्हें लाकर लोगों की इस भीड़ के सामने खड़ा किया गया और थंगल बोला-'छोकरियो, तुममें से जो मुसलमान होना पसन्द करेगी उनसे मुसलमान सरदार विवाह करके उन्हें विधिवत् अपनी अर्धांगिनी के रूप में सम्पूर्ण अधिकार देंगे। किन्तु जो मुसलमान बनने को तैयार नहीं होंगी उन्हें बलात् दासियों के रूप में जीवन बिताने के लिए मोपला सैनिकों में बांट दिया जाएगा।'

'परन्तु मैं मरने को तत्पर हूँ।' 'मैं भी' और 'मैं भी'। वहीं निर्भयता-सहित पांच-छः वीर कन्याएं आगे बढ़कर गरज उठीं। परन्तु तभी वह वृद्धा आगे बढ़ी और उन वीर कन्याओं में से एक के गले में हाथ डालकर बड़े प्रेम से बोली, 'मेरी छकुली, तू तो अभी कली-सी ही है। मरना तो सभी को पड़ेगा। परन्तु लड़की थोड़े दिनों आनन्द का उपभोग क्यों नहीं करती। जिस मोपले को तू

चाहती है उसे चुन ले, मुझे बता दे। हिन्दू की अपेक्षा मोपला कहीं अच्छा है। मैं तुझे अपने अनुभव के आधार पर यह बता रही हूँ। परंन्तु उस आत्मसम्मानी वीर बाला ने उस मोपला-वृद्धा के मुख पर कसकर एक तमाचा जड़ दिया। किन्तु इससे भी उस विक्षिप्त-सी वृद्धा को एक प्रकार से सन्तोष का ही अनुभव हुआ और बोली, 'अहा, हा, यदि हिन्दू पुरुष इस प्रकार दूसरों के मुख पर तत्काल चांटा मारना सीख जाते तो मेरी छकुली, मैं भी तेरे साथ ही मरने के लिए तैयार हो जाती। परन्तु इन मुर्दों में तो निरा साधुपना ही भरा है।' इधर इन दोनों में यह चर्चा चल रही थी और उधर मौलवी ने मोपलों को आदेश दे दिया कि वे अपनी-अपनी पसन्द की युवती को चुन लें। पहले तो बड़े सरदार, फिर मध्यमवर्ग वालों और बाद में सैनिकों को चुनने का अधिकार दिया जाना निश्चित हुआ। सबसे पहले वह पगला मुहम्मद बोला, 'मुझे तो लक्ष्मी चाहिए।' यह सुनते ही मौलवी का चेहरा तमतमा उठा। उसे अपने पास खींचते हुए मुहम्मद बोला, मुझे लक्ष्मी चाहिए। मैंने उसे ले लिया' और मैं, हम सब में जो सर्वश्रेष्ठ सम्मान का अधिकारी है उस मौलवी को इसे अर्पित करता हूँ।' 'ठीक-ठीक' सभी बोल उठे। किन्तु थंगल को लगा कि उसका मौलवी ने जान बूझकर अपमान किया है अतः वह मौन रहा। उसी समय इब्राहीम बोला, 'मौलवी के उपरान्त चयन करने का अधिकार मुझे है।' परन्तु अब्दुल आवेश में आकर बोला, 'नहीं मेरा है।' तभी इब्राहीम बोला, मैंने तीन देवालय भूमिसात् किए हैं। दस-बीस स्त्रियों और युवतियों को पकड़ कर लाया हूँ। मैंने उनके पिता-भाइयों अथवा पतियों को जान से मार दिया है, अथवा घायल कर दिया है। अथवा मुसलमान बना दिया है। अतः मैं श्रेष्ठ हूँ। इस खिलाफत राज्य में मुझसे अधिक धर्म-प्रचार और शत्रुओं का दमन और किसने किया है?'

'अब्दुल्ला ने' अब्दुला बोल उठा। 'मैंने कुट्टम की ब्राह्मण-बस्ती में उनकी सभी पुस्तकों को आग लगाई है। सुमति का पीछा भी मैंने ही किया। 'हिन्दू पर दया करो' कहने वालो और हम धर्मवीरों के धैर्य और कृत्यों को अत्याचार समझने वाले खिलाफत राज्य के दुष्ट उस शिया मुसलमान कबीर का सिर मैंने ही अपनी लाठी के प्राणघातक प्रहार द्वारा फोड़कर ठण्डा किया। अफगानिस्तान के अमीर के दिल्ली आने का शुभ समाचार सब लोगों को मैंने ही दिया, अली मुसेलियर के समक्ष माधव नायर के पेट में इसलिए छुरी भोंकी थी कि उसने खिलाफत के सचिव का काम करते हुए भी दस लाख रुपये के स्थान पर केवल दस हजार रुपये ही जमा किए थे। मैं काफिरों के देवों से लड़ा हूँ। मैंने

सैकड़ों काफिरों से लड़ाई की है और काफिरों की सैकड़ों स्त्रियों से लोहा लिया है।'

वह उन्मादिनी वृद्धा गरज उठी, 'तो फिर तू ही सर्वाधिक शूर और धर्म-निष्ठ है। परन्तु मैं? लगातार तीन-चार दिन तक अहर्निश काफिरों के घरों को जलाती रही हूँ। यद्यपि मैंने आधा मलाबार जला दिया है। पर अभी भी जला नहीं। मैंने ही मुस्लिम धर्म के अभियान को हृदय में बसाकर उन काफिरों के बीच घुसकर उन्हें यह बताया कि हिन्दू रहने में क्या हानि है! क्या मेरा धर्माभियान तुम में से किसी से कम है? अल्लाह की कसम, मैंने दो काफिरों की कन्याओं को........'

यह विवाद रोकने के लिए मौलवी बोला, 'वीरो, इब्राहीम, अब्दुला, बूढ़ी अम्मा! तुम्हारा तथा अनेक अन्य वीरों का यह कार्य निःसंशय ही तुम्हें इस लोक में सुख और परलोक में स्वर्ग प्राप्त होने का कारण बनेगा। तुम्हारे पराक्रम के फलस्वरूप इस राज्यपीठ पर आरूढ़ होकर मैं सगर्व यह कह रहा हूं कि मेरे इस राज्य में आज एक भी काफिर जीवित नहीं रहा। अब इस खिलाफती राज्य में केवल परमेश्वर और पैगम्बर की आज्ञा मानने वाले सद्धर्मनिष्ठ, ईमानदार मुसलमान ही रह रहे हैं। यहां का राज्य कार्यभार इस्लामी कायदे के मुताबिक ही चल रहा है। अतः यहां तो नाम-मात्र के लिए भी अन्याय नहीं हो सकता। तदुनसार मेरी यह आज्ञा है कि इस धर्मयुद्ध में की गई लूट को आप लोगों में पवित्र कुरान की आज्ञानुसार ही बांट दिया जाये। आठवें अध्याय की पहली आयत में कुरान शरीफ में कहा गया है कि 'हे विश्वासनिष्ठ मुसलमानो! तुम्हें काफिरों से लड़ते हुए प्राप्त हुई लूट के प्रश्न पर विवाद नहीं करना चाहिए। निःसंशय यह सब लूट की सम्पदा परमेश्वर और पैगम्बर की है। उसी ने यह सब कुछ प्रदान किया है, इसे सब को मानना चाहिए। परमेश्वर जो सातवें आसमान में विराजमान है, उसने पृथ्वी पर लूट का अधिकार पैगम्बर को दिया, पैगम्बर ने वह खलीफा को दिया। अर्थात् खलीफा ने जब इस ताल्लुके का राज्य मुझे खिलाफत राज्य के प्रतिनिधि के रूप में दिया, तभी इस सम्बन्ध में मुझे सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गए। अतः सर्वप्रथम इस लूट पर मेरा अधिकार है। इस लूट में से मैं तुम सब धर्मवीरों को हिस्सा बांट कर देना चाहता हूँ, यह मेरी उदारता और धार्मिक प्रवृत्ति ही है। अतः मैं जिस ढंग से इस लूट का बंटवारा करना चाहता हूँ, तुम्हें वाद-विवाद न करते उसे हुए स्वीकार करना चाहिए।' ऐसा कहते हुए उसने जो लड़की जिसने चाही उसे दे दी। तदुपरान्त

अधेड़ आयु की महिलाओं का बंटवारा किया। उनमें से एक साध्वी ने रोते-रोते कहा, 'दया करो, मैं विवाहित हूँ, मुझे मेरे पति के पास पहुंचा दीजिए। अन्यथा मुझे जान से मार डालिए।'

थंगल बोला, 'हे स्त्री, जब तक तू मुसलमान नहीं हो जाती तब तक तुझे पति मिल पाना असम्भव है। कारण यह है कि कुरान शरीफ के चौथे अध्याय की पच्चीसवीं आयत के अनुसार नास्तिकों की जो स्त्रियां प्राप्त होती हैं उनके पहले के विवाह समाप्त हो जाते हैं। वे मुसलमानों की सम्पत्ति हो जाती हैं। और कुरान शरीफ की 220वीं आयत के अनुसार काफिरों की स्त्री चाहे कितनी भी भली क्यों न हो, उसके मुकाबले मुसलमान दासी भी श्रेष्ठ होती है। काफिर पति को शास्त्र मान्यता नहीं देता। मुसलमान धर्म स्वीकार कर लेने पर ही तुझे मुसलमान पति मिल सकता है, उसके बिना नहीं।'

'परन्तु मुझे जाने से मार देना तो शास्त्रविरुद्ध नहीं होगा ? जिस शास्त्र ने अबोध बालकों, वृद्ध पुरुषों को भी मारने की अनुमति दी, अस्पृश्य कुमारियों को भ्रष्ट करने दिया व देवमूर्तियों को भग्न करने दिया, उस शास्त्र में मुझ सरीखी निरुपयोगी किसी स्त्री को मारना भी अनुचित नहीं होगा। मुझे मार डालो। मैं हिन्दू हूँ, अतः मुझे मार डालो।'

थंगल बोला, 'ऐ स्त्री ! परन्तु यह समझ.....' तभी वह मोपला-वृद्धा क्रोध में आकर बोली 'ऐ थंगल, लगता है कि तू मुसलमान ही नहीं ? अध्याय सात 158वीं आयत में भला यह क्या कहा गया है ? सम्पूर्ण कुरान में से मैंने केवल यही एक आयत पढ़ी है और उसी एक आयत के कारण मेरी आत्मा में प्रकाश हो गया है। मुसलमानों को उस आयत के अनुसार विश्वास करना चाहिए ! निरक्षर ईश-प्रेषित मुहम्मद पर विश्वास लाना चाहिए। तर्क-वितर्क क्यों किया जाए ? जो तर्क-वितर्क करे, भला वह मुसलमान काहे का है ?'

इतने में ही एक मोपला एक अन्य स्त्री को पकड़ कर ले आया और बोला, 'एक काफिरनी स्त्री इस खिलाफत राज्य में भी अभी जीवित है।'

वह वृद्धा बोली—'ले आ उसे आगे।' और उसने पुनः खो-खो करके हंसते हुए कहा, 'अरे, यह तो मुझ से भी कुरूप है। भला इसे कौन पसन्द करेगा ? भला देखो, कोई एकाध इसे ग्रहण करने को तैयार है क्या ? मोपलों में से अनेक लोग खिलखिलाकर हंस पड़े और बोले, 'एकाध क्या, हम सारे ही मिल कर......।'' फिर उनमें से जब कोई भी उसका हाथ थामने को तैयार न हुआ तो मोपला वृद्धा ने कहा, 'तो मर जा रांड।' तब विह्वल और बेचैन होकर

वह बोली, 'तुम चाहते हो तो मुझे मार देना, परन्तु आज मुझे मत मारो। मैं पैरों पड़ती हूँ। मैं गर्भवती हूँ। दो महीने बाद मैं सन्तान को जन्म दूं तो सुख-सहित मुझे मार डालना, परन्तु अभी मेरे कारण इस गर्भ में आये निरपराध प्राणी की हत्या न करो, मैं गर्भवती हूँ।'

'अरे, क्या है! तू गर्भवती है, बस यही बात है न! तो फिर नरक में भी सन्तानों को जन्म देने के लिए अलग कोठरियां हैं। तू मरेगी तो उन्हीं कोठरियों में से एक तुझे मिल जायेगी। और इतना ही क्यों, बस मैं भी दो मास पश्चात् ही तेरा प्रसव होने तक तेरे पीछे नरक में पहुंच रही हूँ। अतः मरने का भय न कर।' उसके इस कथन को सुनकर मोपले ठहाका मार कर हंस पड़े। उनके इस भीषण विनोद से उत्तेजित होकर उस विक्षिप्त-सी हुई वृद्धा ने अपनी छुरी उस महिला के पेट में घोंप दी और वह बेचारी दम तोड़ गई तथा उसके उदर में स्थित शिशु भी टुकड़े-टुकड़े हो गया।

खिलाफती राज्य के पहले दिन ही यह डोंडी पीट दी गई थी कि जो भी मोपला नर-नारी किसी भी हिन्दू को पकड़ेगा उसे पारितोषिक दिया जायेगा। अतः मोपले हिन्दुओं का आखेट करते हुए घूम रहे थे। एक मोपला महिला अपने ग्राम की एक जीर्ण-शीर्ण झोंपड़ी में रहने वाली एक हिन्दू स्त्री को पकड़ कर ले आई थी। वह बड़े दिनों से कुट्टम ग्राम की घुड़साल के समीप चुपचाप रह रही थी अतः उसकी ओर किसी का ध्यान कभी न जाता था। वह भी किसी से कोई संपर्क न रखती थी। वह यदि किसी से कभी बोलती भी तो दो-चार धीरे से शब्द। इसलिए लोग उसे गंजी के पास रहने वाली औरत के नाम से ही पुकारते थे। इस पगली के समान रहने वाली हिन्दू नारी की भी आज बारी आ गई थी। उसके वहां लाये जाते ही उन मोपलों के मुख पर पुनः हास्य की मधुरिमा व्याप्त हो गई। उनमें से कोई बोल उठा, 'यह घुड़साल के पास रहने वाली औरत, अरे, यह इतने दिनों तक कैसे बची रह गई है? पर, इसे तो मैं प्रेम करता हूँ।' दूसरा बोल उठा, 'नहीं इसे तो मैं चाहता हूँ।'

मोपला सैनिकों में से एक बोला, 'इसे पकड़ कर लाने वाली बीबी अम्मा को दो कौड़ी का इनाम दे दिया जाए।' दूसरे ने कहा, 'इसे पकड़ने के बदले में तो यह मोल बहुत ही कम है। इसके लिए एक कौड़ी तथा एक आधी कौड़ी, 1।। कौड़ी पारितोषिक दिया जाना चाहिए।' 'मैं तुझे 1।। नहीं 150 कौड़ियां देने को तैयार हूँ। तू इसे अपनी बना ले।' इस प्रकार नाना प्रकार की गुण्डागर्दी का प्रदर्शन उन मोपलों द्वारा किया जा रहा था। वे मनोरंजन में मग्न थे। उनके

विनोद से उत्तेजित होकर वह मोपला-वृद्धा अपनी मशाल लेकर उस घुड़साल के पास फूंस के घर में रहने वाली स्त्री की ओर बड़ी तेजी से बढ़ी और उसके पास पहुंचकर बोली 'ऐ अप्सरा, क्या तेरा भी इस संसार में कोई था ?'

'तेरा बाप' वह महिला बोली और ठहाका मारकर हंस पड़ी।

'क्या तेरा मूल्य सचमुच मेरी फूटी कौड़ी के बराबर है ?'

'नहीं तेरी फूटी कौड़ी जितना नहीं, तेरी फूटी खोपड़ी जितना है।'

'ठीक है फिर' थोड़ा उचक कर वह पगली सामने से हट गई। उसका उन्माद उतर-सा गया और जिस प्रकार कोई याचक किसी से याचना करते समय अनुनय करता है, वैसी ही मुद्रा का प्रदर्शन करती हुई बोली-

'अच्छा ठीक है। बता, तुझे क्या बताना है। देख, अब मैंने अपनी मशाल भी बुझा दी है।'

इस प्रकार विचित्र सी मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए उस पगली मोपला स्त्री ने अपनी मशाल धूल में डालकर बुझा दी। उसके इस कृत्य से उसकी उद्दंड विक्षिप्तावस्था का नहीं अपितु अपूर्व आचरण का ही परिचय मिल रहा था। वह पगली पुनः बोली 'बोल, क्या हुआ है, बोल।'

परन्तु मौलवी बोल उठा, 'यह क्या गड़बड़ शुरू कर दी है, भला बूढ़ी अम्मा, क्या इस बुढ़िया से गप्पें मारने का यह समय है ?'

मौलवी की शेखी से चिढ़ा हुआ थंगल मौलवी का अपमान करना चाहता था। अब आशा हो गई थी कि पगली-बूढ़ी अम्मा द्वारा भी अब उसका साथ दिया जाना संभव है। अतः थंगल ने कहा, बूढ़ी अम्मा, तुम जो कुछ कहती हो, ठीक है। तुम्हारी यह बात उचित ही है कि इस स्त्री से जो कुछ यह कहना चाहती है, उसे सुना जाए। हो सकता है कि इससे कोई महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाए। और उसने फूंस के घर में रहने वाली उस हिन्दू स्त्री से कहा, 'हे फूंस के घर में रहने वाली स्त्री! बता, क्या कहना चाहती है ?

मौलवी बोला, 'इस तरह समय नष्ट हो रहा है, क्या तुम्हें यह नहीं दिखाई देता ?'

थंगल बोला, 'मैंने तुम्हारी अपेक्षा धर्मशास्त्रों का अधिक अध्ययन किया है, यह स्पष्ट है। अतः मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि समय किस बात में नष्ट होता है और किस में नहीं होता। यह वृद्धा हो गई है, उन्मादिनी है, किन्तु फिर भी इसकी भी तो आत्मा है।' अतः इसे मारने अथवा कोई अन्य दण्ड देने से पहले यह आवश्यक है कि इसकी बात पूरी तरह सुनी जाए, इस्लामी कानून

किसी को भी अन्यायपूर्वक दण्ड देने की अनुमति नहीं देता, खिलाफती राज्य में अभियुक्त की बात सुने बिना उसे दण्ड अथवा पारितोषिक नहीं दिया जाता। खिलाफती राज्य न्याय और धर्म का राज्य है।

थंगल के इस कथन के पश्चात् भीड़ मे से सैकड़ों लोग एक साथ बोल उठे, 'हे स्त्री, बता तू क्या कहना चाहती है।'

उस स्त्री ने अपने दन्तविहीन मुख से धीमी-धीमी आवाज में कहा, 'मैं जो बताऊंगी वह कोई व्यंग्य नहीं है। मेरी यह इच्छा है कि मैं हिन्दू-धर्म के अनुरूप ही आचरण करूं और हिन्दू के रूप में ही अपनी देह का परित्याग करूं। मुझे जब इस मोपला नारी ने पकड़ा तो मैंने इसके पैर पकड़ कर पूछा था कि मुझे क्यों लिये जा रही हो। यदि तुम देवमूर्तियां तोड़ना चाहती हो तो मैं तुम्हें बताती हूँ कि मेरे यहां एक भी देव-प्रतिमा नहीं है। अगर तुम कुमारी की लज्जा का हरण कराना चाहती हो तो मैं तुम्हें बताती हूँ कि मेरी लज्जा तो कभी की राख की ढेरी बन चुकी है। अगर तुम किसी पुत्रवती के उस स्तन पर तलवार चलाना चाहती हो कि जिससे दूध की धारा प्रवाहित होती है तो मेरी छाती का दूध तो सांप पी गया है। अब तो किसी लताविहीन वृक्ष के समान ही मेरी छाती शुष्क दिखाई देती है। सारांश यह है कि धर्मयुद्ध करने वाले इन मोपला' वीरों के किसी भी धार्मिक कृत्य के लिये उपयोगी सामग्री अब मेरे पास नहीं रही। यह सब बताते हुए मैंने पुनः यही पूछा था कि भला मुझे क्यों पकड़े लिए जाती हो। परन्तु इतने पर भी यह मोपला मुसलमानी मुझे पकड़ कर यहां ले ही आई है। मैं अब भी अपना हिन्दू-धर्म नहीं छोड़ना चाहती। साथ ही मेरी यह भी इच्छा है कि मुझे भली भांति देखने दो—जिसके स्तन का दूध पीकर मनुष्य भी सांप बन गया। सम्पूर्ण मलाबार में मैं ही तो एकमात्र स्त्री हूँ। मैंने अपने इन स्तनों से जिन बालकों को दूध पिलाया है उनमें से एक तो सांप बन गया, उसे मैंने घर से निकाल दिया और जो मनुष्य ही रहा उसे मैंने अपने घर से 150 फुट की दूरी से आगे नहीं आने दिया।

'ऐ बुढ़िया, यह क्या बकवास कर रही है।' थंगल की आज्ञा को निष्फल करने तथा उसे बोलना बन्द कराने के लिए मौलवी गरजा, 'कौन? मनुष्य कौन? बहकती क्या है! बता सांप कौन?

'सांप तू? और मनुष्य वह कम्बु, वह थिय्या जिसे जान से मार दिया गया है। और देख! मैं भी मर रही हूँ, परन्तु इतना कहकर मर रही हूँ कि मेरे स्तनों की धारा तेरी माता के स्तनों की धारा के माध्यम से तेरे पेट में गई है। मेरे गर्भ

से ही तेरी माता ने जीवन पाया था, जिसके गर्भ से तुझे जन्म मिला था।

'चुप रहो! साली क्या बकती है। मौलवी की नसों में पैगम्बर मुहम्मद का रक्त प्रवाहित हो रहा है। पैगम्बर की मौसी की बहन का जो सगा पड़ोसी था। उसकी भानजी का जो लड़का था, वही मेरा पूर्वज है समझी! रांड कहीं की! मैं सैय्यद हूँ। अरब हूँ। मैं कुरैश हूँ।'

मौलवी के रुष्ट होने का कारण स्पष्ट था। खिलाफती राज्य का मुख्य अधिकार अरबों को और उनमें से भी जी पैगम्बर जाति में उत्पन्न हुए थे ऐसे असली मुसलमानों के हाथ में ही रहने की परम्परा के कारण वह मौलवी अपने आपको असली कुरैश बता रहा था। परन्तु उस स्त्री के उपर्युक्त वाक्यों ने उसके मर्मस्थल पर जो घाव लगाया था, उससे वह तिलमिला उठा था। किन्तु मौलवी को उस वृद्धा के शब्दों पर जितना क्रोध आया था, उतना ही उसके वाक्यों से थंगल को सन्तोष प्राप्त हुआ था।

अतः उसकी उत्सुकता बढ़ी थी। वह समझ रहा था कि इस वृद्धा के द्वारा निश्चित रूप से ही कोई-न-कोई रहस्य प्रकट किया जाएगा और फिर मौलवी का दर्प एक क्षण में चूर्ण हो जाएगा, इस आशय-सहित बना थंगल बोला, 'हे स्त्री, तू तनिक भी न घबरा, जो कहना चाहती है वह कह दे, निर्भयता सहित जो भी सत्य है, उसे स्पष्ट शब्दों में बता दे।'

'तो फिर सुनो! स्पष्ट शब्दों में सुनो! मैं तालापुत्तर ग्राम की रतन कनीसन की पत्नी हूँ। मेरी कोख से तीन बालकों ने जन्म लिया। उनमें से दो लड़के थे और सबसे छोटी सन्तान थी एक लड़की। हम कनीसनों की जाति थिय्यों से भी छोटी समझी जाती है। अतः हम ग्राम से दूर एक छोटे से घर में रहते थे।

हमारे पड़ोस में ही खेतों में काम करने वाले एक मोपला परिवार की झोंपड़ी थी। उस वर्ष बड़ा भयंकर अकाल पड़ा था। परन्तु हमने उस मोपला कुटुम्ब के सब लोगों की अपनी रोटी में से रोटी और सब्जी में से सब्जी देकर उस परिवार के प्रति दया प्रदर्शित की।

वह मोपला भी कहता था, 'अल्लाह तेरा भला करे। तू हमारी माँ है।' वह जब आंखों में अश्रुकण छलकाकर यह शब्द कहता था तो मैं भी मन ही मन कहती थी कि यह भी तो मेरे पुत्र के समान ही है। इसके मन में हमारे प्रति कभी अन्तर नहीं आएगा। किन्तु यह दुष्काल समाप्त हुआ। वह मोपला परिवार भी खा-पीकर पल गया।

इन्हीं दिनों अखाड़ ताल्लुका में मोपलों द्वारा उपद्रव किये जाने का समाचार

प्राप्त हुआ। उसके साथ ही साथ दीन-दीन करते हुए एक दिन उपद्रवियों की टोली हमारे ग्राम में आ पहुंची। मैं तथा मेरा पति रतन थर-थर कांपते हुए अपनी सन्तानों सहित वहां से भागकर दूर जंगल में जाकर छिप गये। किन्तु वे उपद्रवी हमारा सुराग लगाते-लगाते वहीं आ पहुंचे। और उन्हें हमारा पता बताने का काम उसी मोपला परिवार ने किया, जिनकी हमने दुष्काल में प्राण-रक्षा की थी।

उन्होंने मेरे पति के प्राण ले लिए और मुझे नंगा कर मेरी लज्जा का हरण किया, तो किसने? उन्हीं मोपला मुसलमानों ने जो हमारे यहां पले थे। किन्तु इस विपत्ति के आने पर भी मेरी छोटी लड़की को साथ लेकर मेरा बड़ा लड़का लुकता-छिपता तालापुत्तर ग्राम में आश्रय लेने की प्रार्थना करता हुआ घूमने लगा। चारों ओर ही उपद्रवी थे। परन्तु मेरी सन्तानों को कोई गांव वाला अपने पास भी नहीं फटकने देता था। मेरा पुत्र एक दिन एक ब्राह्मण के पैरों में पड़कर बोला, 'महाराज! मुसलमान हमें बलात् मुसलमान बनाना चाहते हैं, आप सभी हिन्दुओं के गुरु हैं। हमारी रक्षा कीजिए। किन्तु उस ब्राह्मण ने कहा कि 'हो जा न फिर मुसलमान, इससे मेरा क्या जाता है?' तब मेरा लड़का भयभीत होकर रात्रि में एक मन्दिर में जा छिपा। परन्तु वहां भी उसे एक नायर क्षत्रिय ने देख लिया और चीख उठा।

उस देवालय के प्रांगण में कुत्ते सुख से सोए हुए थे। किन्तु मेरे पुत्र को मार-मार कर उस क्षत्रिय ने देवालय से बाहर धक्का दे दिया। मेरे पुत्र ने उस की बड़ी अनुनय-विनय की और बोला, 'महाराज, आप क्षत्रिय हैं, सभी हिन्दुओं के रक्षक हैं।' हमें मुसलमान बलात् मुसलमान बनाना चाहते हैं । तो क्या आप हमें हिन्दू-धर्म से च्युत होते हुए चुपचाप देखते रहेंगे? वह बोला, मुसलमान तुम्हें भ्रष्ट बनाना चाहते हैं, तो क्या तुम इस देवालय को ही भ्रष्ट करोगे? भाग नहीं तो मारा जायेगा। तेरा धर्म तेरे साथ है, मेरा मेरे साथ, मुझे तुझ से क्या लेना-देना है?' तब मेरा पुत्र दुःखी होकर थिय्या लोगों के द्वारा अपनी बस्ती के पास बनाए फूंस के ढेरों के कूप में जाकर छिप गया। तब वहां उसे देखते ही थिय्या भी भड़क उठे।

'कनीसन जाति के बालक फूंस में आकर छिप गए हैं। हम महारों का अनिष्ट हो गया है।' मेरा पुत्र बोला, 'मैं हाथ जोड़ता हूँ, महाराज! तुम महान् हो और हम कनीसन डोम। आप से हम नीचे हैं। परन्तु मुसलमान हमारे पीछे पड़े हुए हैं और वे कहते हैं कि तुम हिन्दू-धर्म छोड़ दो, अन्यथा मारे जाओगे।

आप हमें आश्रय दीजिए। आप महार-थिय्या हैं, वापी, सतार, तेली आदि जब आप लोगों को अपने से दूर रहने को कहते हुए झिड़कियां देते हैं तो आप को वह अन्याय प्रतीत होता है। अहो—महार महाराज! पर वही अन्याय आज तुम हम पर कर रहे हो। आप हमें आश्रय दीजिए, यदि हम हिन्दू से मुलसमान बना लिए गए तो क्या तुम्हारे हिन्दू-धर्म का क्षय नहीं होगा? वे महार थिय्ये क्रुद्ध हो उठे और बोले, क्या हिन्दू-धर्म तुम लोगों के सहारे ही जिन्दा है? और तुम मुसलमान भी हो गए तो क्या वह नष्ट हो जाएगा? तुम कनीसन हिन्दुओं को हम महार छूते नहीं हैं, परन्तु तुम मुसलमान हो जाओ तो हम से स्पर्श कर सकते हो।

'जो नहीं हुआ तो हो जा, हमें इससे क्या मतलब?' अभी महार ये शब्द कह ही रहे थे कि उस ग्राम पर भी मोपले टूट पड़े। परन्तु पुलिस के आ जाने के कारण मोपले भाग खड़े हुए। हां केवल मेरी पुत्री को वापस जाते समय उन्होंने उठा लिया। वह दीन गाय के समान रंभाती और चीखती रही परन्तु किसी हिन्दू ने भी उसके उठाकर लाए जाने की चिन्ता नहीं की। वे तो सभी अपने-अपने मन में यही सोचते थे, **'मुझे इससे क्या?'** वे यही कहते रहे और मेरी कन्या पर मुसलमानों द्वारा अत्याचार किया जाता रहा। अन्त में उसे एक मोपला अपनी रखैल बनाकर ले गया। थोड़े दिनों के पश्चात् वह बीमार हो गई और कुछ दिनों के पश्चात् उससे मेरी भेंट हुई।

परन्तु वह पागलों के समान यही बोली, **'मुझे इससे क्या?** इन मरे हिन्दुओं को कोई अच्छी तरह सिखा दे कि उसके कथन का क्या परिणाम होता है कि मुझे किसी से क्या लेना-देना है?' कुछ दिनों पश्चात् तो उसकी स्थिति यह हो गई कि वह जब कहीं किसी भी हिन्दू को देखती तो तत्काल कह उठती, **मुझे इससे क्या?** सिखाऊं तुझे कि तुझे इससे क्या लेना-देना है।' मेरे दोनों लड़के भी पकड़ लिए गए और उन्हें भी धर्मच्युत किया गया। इनमें से जो कन्या को लेकर निकल भागा तो वह मेरे पास रह गई! परन्तु जो अभी छोटा ही था, उस पर एक दिन मोपला थंगल की पापदृष्टि ऐसी पड़ी कि वह उसे मेरे पास से बलात् छीन ले गया। उसे उसने एक मुसलमानी पाठशाला में कुरान का सस्वर और आद्योपान्त पाठ पढ़ाया और सिखाया। वह पक्का मुसलमान बन गया और इतना पक्का मुसलमान कि एक दिन स्वयं मुझे और अपने बड़े भाई को भी इस आरोप में जान से मार डालने को तैयार हो गया कि हम धर्मानुसार नमाज अदा नहीं करते हैं। हम दोनों को धर्मच्युत किया गया था, किन्तु हम

धर्मच्युत नहीं हुए हैं, यह बताते हुए हम तालापुत्तर के सभी हिन्दू-बन्धुओं के पास गए। हमने उनसे अनुनय-विनय की कि हमें पुनः हिन्दू-धर्म की शरण ले लिया जाए।

परन्तु वे सभी ठहाका मार कर हंसते और यही कहते, 'हिन्दू मुसलमान हो सकता है, किन्तु मुसलमान कभी हिन्दू नहीं हो सकता है ?' तुम्हें हिन्दू-धर्म का अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता। तू मूलतः कनीसन जाति की स्त्री है और मुसलमानों ने तुझे अपना लिया है। अतः तू हमें छू सकती है! तुझे पानी लेने कुंए पर तथा देवालय के सामने से हम गुजरने देते हैं। तूने गो-मांस खाया है, तो भी तुझ पर क्रोध नहीं करते। तू राम और कृष्ण का अपमान करेगी तो भी हम कुछ नहीं कह सकेंगे। क्योंकि यह तेरा धार्मिक अधिकार है, इसलिये हमें क्रोध नहीं आएगा। भला तुझे पुनः कनीसन जाति में शामिल होने और हिन्दू-धर्म का अधिकार कैसे वापस दिया जा सकता है। जा, हम तुझे देवालय तथा अपने घरों से 150 फुट दूर रहने का अधिकार पुनः देने को तैयार नहीं हैं ?'

मेरा लड़का तो तब मारा ही जा चुका था। मैं तथा मेरा वह पुत्र दोनों ही उसी घर में थे। कुछ दिन तो हमने इसी प्रकार बिताए कि लोग हमें मुसलमान समझते रहे और हम अपने आपको हिन्दू ही समझते रहे। एक दिन हम दोनों रामनवमी उत्सव की समाप्ति के उपरान्त अपने घर में ही भक्ति-भावना से तल्लीन होकर भजन कर रहे थे। तभी हाथ में छुरा लिए एक भयंकर आक्रान्ता हमारे घर में घुस आया और बोला, 'मुसलमान बना लिए जाने पर भी तू अभी तक काफिरों के ही धर्म का पालन करती है ? जो मुसलमान पुनः काफिर हो जाता है, तो उसे जान से मार दिया जाए यही हमारे धर्म की आज्ञा है।' ऐसा कहते हुए वह चाण्डाल जान से मारने के लिए आगे बढ़ा। परन्तु मेरे वीर पुत्र ने उछल कर कुल्हाड़ी उठा ली और उस पर इतने जोर से तथा चतुराई से वार किया कि वह 'या अल्लाह, या अल्लाह' की चीख मुख से निकालता हुआ दम तोड़ गया। और वह आक्रमणकारी अन्य कोई नहीं अपितु वही मोपला था जिस पर दुष्काल के दिनों में मैंने दया दिखाई थी और जो मुझे माता कहकर सम्बोधित किया करता था। सुमति ने जिस सर्प को दूध पिलाया था, उसने अपने दूध का उपकार निभाया था। परन्तु मैंने जिस मोपले को खिला-पिलाकर पाला था उस मनुष्य ने मेरे प्राण लेने का प्रयास किया। यह दिया था उसने मुझे उपकार का प्रतिदान। वस्तुतः सर्प का विष धर्म के लिए उन्मादी व्यक्ति के मन में निहित विष से कम ही भयंकर होता है।

'उस आक्रान्ता के हाथों से तो हम बच गए परन्तु उसकी हत्या का बदला हमसे लिया जाएगा, मुसलमान पुनः हमें हिन्दू-धर्म का परित्याग न करने के आरोप में मार डालेंगे, इस भय से हमने वह ग्राम छोड़ देने का निश्चय कर लिया ? मेरा पुत्र, मैं जाति का थिय्या हूँ, यह बताकर कुट्टम ग्राम में रहने लगा। मैं भी वहीं पहुंच गई किन्तु किसी को भी अपनी जाति अथवा गोत्र न बताते हुए और न किसी से विशेष सम्बन्ध ही रखते हुए ग्राम से बाहर रहने लगी। कुछ दिनों के पश्चात् मेरे पुत्र का एक थिय्या कन्या से विवाह हो गया और उसको बाद में एक पुत्र भी प्राप्त हुआ। मुझे अपना वह पौत्र (नाती) बचपन से ही प्राणों से भी प्रिय रहा। किन्तु मैंने उसे कभी यह नहीं बताया कि मैं कौन हूँ और उससे मेरा कभी सम्बन्ध है और न ही कभी मैं उससे जाकर मिली ही! वही मेरा पौत्र श्रीरंग मन्दिर की रक्षा करते-करते घायल हो जाने वाला तथा हिन्दू-जाति की रक्षार्थ प्राणों का भी बलिदान दे देने वाला हुतात्मा-हिन्दू हुतात्मा कम्बु था।'

यह हिन्दू हुतात्मा कम्बु था मेरा एक पौत्र। और मेरा वह दूसरा पुत्र जिसे मुसलमानों ने बाल्यावस्था में मुझसे छीन लिया था और जो उन्हीं की शिक्षा-दीक्षा के कारण कट्टर मुसलमान बन गया था—इतना पक्का कि मुझे भी जो काफिर बताकर मारने को तैयार था, उस मेरे दूसरे पुत्र का विवाह एक हिन्दू चमार कुल की धर्मच्युत की गई मुसलमान कन्या के साथ हुआ।

उसी का जो पुत्र हुआ वह मेरा दूसरा पौत्र। उसके रक्त में मेरा दूध नहीं, ऐसा नहीं है। वह बाल्यकाल से ही मुसलमानी धर्मशास्त्रों का अध्ययन करता-करता एक बड़ा मौलवी हो गया। यह मेरा दूसरा पौत्र अन्य कोई नहीं अपितु यही गयासुद्दीन है, जो श्रीरंग की मूर्ति को उलटा कर उस पर आसन जमा कर तथा उनके पादपीठ पर पैर रखकर बैठा हुआ है। जो खिलाफती राज्य का तुम्हारा कलक्टर है, यह मौलवी।'

'चुप! रांड कहीं की। अरे, यह पगली क्या बकवास कर रही है! तुम्हारे नेता को नरक में धकेलने के लिए काफिरों ने जानबूझ कर उसे यहां भेजा है। देखते क्या हो! मारो! मारो!' मौलवी चिल्लाया। 'काफिरों ने नहीं' वह वृद्धा बोल उठी!

'तो फिर शैतानों ने तुझे भेजा होगा?' मौलवी पुनः गरजा। वह उठा ही था कि मौलवी ने कहा, 'मैं यहां हूँ, मैं काजी हूँ, मैं थंगल हूँ। आपको भी अपना अपमान उसी प्रकार निगल जाना चाहिए, जिस तरह मैं अपमान का

कड़वा घूंट निगलता रहा हूँ।' वह वृद्धा कहने लगी, 'इससे अधिक मैं और कुछ नहीं कहूँगी।'

केवल एक ही वाक्य और कहती हूँ। वह यह है कि यह कम्बु और गयासुद्दीन दोनों ही मेरे पौत्र हैं। मेरे एक स्तन का दूध कम्बु के रक्त में और दूसरे स्तन का दूध गयासुद्दीन के रक्त में मिला है—एक हिन्दू हुतात्मा और दूसरा मोपला। मौलवी कैसे हो गया? रक्त का रंग लाल बताया जाता है। कहते हैं कि रक्त को रक्त आकर्षित करता है। परन्तु मुझ प्रतीत होता है कि रक्त का कोई रंग नहीं, रक्त का रंग ठीक पानी ही सरीखा है। जैसी शिक्षा किसी को मिलती है वह उसी के रंग में रंग जाता है। यह है वह वाक्य! और एक नाम और भी सुनो। वह मेरी पुत्री! जो हमेशा यही बकती थी कि '**मुझे इससे क्या?** सिखाऊंगी कि तुम्हें किससे क्या लेना-देना है,' जो ऐसा कहते हुए भटकती फिरती थी, वह आज मुझे पुनः मिल गई है। मेरी वह पुत्री है—यह पगली! यह मशाल वाली बुढ़िया!'

'हां! हां! मैं वही तो हूँ! जैसे किसी व्यक्ति पर चढ़ा हुआ भूत उतर जाने के उपरान्त वह शान्त मुद्रा में बोलने लग जाता है, उसी प्रकार शांत भाव से वह मशाल लेकर चलने वाली वृद्धा बोली, 'मैं वही हूँ। मेरी माता ने जो कुछ भी बताया है, वह सब सत्य है। और यह भी सत्य है कि मैं कुछ पागल हो गई थी, परन्तु मेरे इस उन्माद में भी एक बुद्धिमत्तापूर्ण अर्थ निहित था। उसी अर्थ को लोगों को समझाने के लिए मैं जलती मशाल हाथ में लिए घूमती थी।'

मैं अपने सम्पूर्ण अंगों और धमनियों को पूरा जोर लगाकर इतने जोरों से चीखती थी कि आकाश फट जाए। वस्तुतः मैं यही बताना चाहती थी कि हिन्दुओ! तुम्हारी किसी भी उपजाति की एक कन्या अथवा बालक तुमसे अलग हुआ और अधर्मियों के दुष्ट हाथों में पड़ गया तो तुम सबको क्या हानि होती है, यह मेरे उदाहरण से भी तुम्हें पता लग पाया है अथवा नहीं? यदि मेरी बाल्यावस्था में, मेरी तथा मेरे भाई की मालापुत्तर ग्राम के उन हिन्दुओं ने रक्षा की होती जो वे बड़ी आसानी से कर सकते थे, तो मैं भी आज उस कम्बु के समान ही श्रीरंग की रक्षार्थ जूझ पड़ती। यह मौलवी भी कम्बु के समान ही हिन्दू-धर्म और हिन्दू कुमारियों की पवित्रता और परित्राण के लिए कम्बु के समान ही आत्म-बलिदान दे देता। किन्तु तुमने मेरे जैसे डोमों अथवा कुमारियों को कुछ भी महत्त्व न देते हुए उनका लज्जा भ्रष्ट होने दी। तुमने मुझे मुसलमानों के हाथों में पड़ने से बचाने के प्रयास में उस स्थान पर भी नहीं ठहरने दिया,

जहां कुत्ते आराम से रहते हैं, तुमने मेरी रक्षा नहीं की। तुम यही सोचते रहे कि यदि डोमों का कोई बालक अथवा बालिका पथभ्रष्ट भी कर दी गई तो, **हमें इससे क्या ?**

यह सोचकर ही तुमने मेरी अवहेलना की, अपमान किया, उसी का यह परिणाम है। भोग लिया कि नहीं ? मुझ अकेली की मशाल ने ही सैकड़ों हिन्दुओं के घर जलाकर राख किए। ढेरियों में परिणत कर दिए। जैसे मैं रोई थी, उसी प्रकार जब बलात्कार किए जाने पर हिन्दू कन्याएं बिलख-बिलख कर रोती थीं तो मैंने वे दृश्य बड़े प्रसन्न मन से देखे हैं। मैं देवता की प्रतिमा पर सैकड़ों बार चढ़कर नाची हूँ।

मैंने सैकड़ों हिन्दुओं को मरते देखा है, मारे जाने पर यही सोचा है, 'पता लग गया कि तुम्हें किसी से क्या लेना है ? तुम्हें समझ में आ गया है कि धर्म के नाम पर किये जाने वाले उपद्रवों के समय यदि किसी डोम कन्या को उठाकर मुसलमान ले जाते हैं और वह हिन्दू-धर्म से च्युत कर दी जाती है तो तुम्हारा क्या जाता है ? क्या तुम अब भी यही कहोगे कि तुम्हारा धर्म तुम्हारे पास और हमारा धर्म हमारे पास ? घोट दूं तुम्हारा गला ? मेरा धर्म तो मेरे पास से गया किन्तु तुम्हारे प्राण भी तुमसे छीने बिना नहीं रहूँगी, यह सत्य तुम्हें आज भी स्पष्टतः दिखाई दिया अथवा नहीं ? नहीं देख पाए, तो देखो, इन तीन सौ हिन्दू घरों में लगाई गई अग्नि से हुए उजाले में देखो। डोंबों का एक बालक अथवा बालिका हिन्दुत्व से निकल कर जब इतना हा-हाकार चारों ओर करा सकता है, हे हिन्दू-जाति !'

'मैं चिल्ला-चिल्ला कर, किलकारी मार-मार कर यह बात कह रही हूँ कि तेरे ऐसे हजारों बालक और बालिकाएं तेरे घरों से उठाए जा रहे हैं अथवा भगाए जा रहे हैं और तू अभी भी यही समझ कर बैठी हुई है कि भला मुझे इससे क्या ? मेरी माता ने जो कहानी सुनाई है वह केवल उसकी ही नहीं है, हे हिन्दू-जाति ! यह तो तेरी कहानी का ही एक प्रतिबिम्ब मात्र है।'

इस प्रकार एक प्रचण्ड किलकारी मारती हुई, बीबी अम्मा, वह पगली पुनः चीखी और क्षण भर बाद रुक गई। उस समय सब एकदम स्तब्ध हो गए। वह पुनः बोल उठी, 'चाहे जो भी हो। मैंने अपना प्रतिशोध ले लिया, मेरा पागलपन समाप्त हो गया। मेरी मशाल भले ही बुझ गई और अब यह अन्धकार मिटा दूंगी।

ऐसा कहते हुए वह सहसा उठ खड़ी हुई। पुनः बोली 'जिसने मुझे पागल

बनाया वह अन्धकार तो तू है। तू भी बुझ।' यह कहती हुई वह चीखी और किसी सिंहनी के समान उछलकर उस मौलवी की गर्दन पकड़ ली।

'हाँ! हाँ' कहते हुए लोग अभी स्थिति की गम्भीरता को समझ कर उसे पुकारना ही चाहते थे कि उसने मौलवी की छाती में छुरी घुसेड़ दी। और फिर अपनी छुरी को मौलवी की छाती से निकाल कर उस पगली ने अपने हृदय में घोंप लिया! मौलवी और पगली दोनों के प्राण पखेरू उड़ गए और दोनों के निर्जीव शरीर रक्त में नहा गए।

❑

8

ऊंचे-ऊंचे आह्वान देते हुए भयप्रद बिगुल तथा बैण्ड इत्यादि रणवाद्य बजने लगे। हजारों तुर्क लोगों को लेकर अनवर पाशा, हजारों हथियारों से लदी अरबी नौकाएं, सहस्त्रों पठानों के साथ अमीर, हिन्दुस्तान में मुसलमानों के साम्राज्य की स्थापनार्थ अली मुसेलियर के मोपला खिलाफती राज्य की सहायतार्थ दौड़ते हुए आये। आने से पहले ही गोरखों की सेना ने 'हर हर महादेव' का जयघोष करते हुए धावा बोल दिया। थंगल ने जिन देवताओं के रेवड़ के रेवड़ अथवा किरीट में तीन चन्द्रमा लटकाए वह देव सेनापति जेब्रिल किंवा सुरतुल मुजदिल अध्याय के अनुसार मुसलमानों की विजय होगी, उस मौलवी द्वारा दिया गया आश्वासन, इनमें से कोई भी उन वीर गोरखों की तलवारों के प्रहारों को रोक नहीं पाया। तो फिर इन बेचारे मोपलों की तो बिसात ही क्या थी? थंगल ने मरने के उपरान्त स्वर्ग में दारू और स्त्रियां मिलने का जो प्रलोभन दिया था, तथा न दिखाई देने वाले देवदूतों की सहायता प्राप्त होने का जो भ्रम मन में बसा हुआ था उससे प्रेरित होकर दस-बारह मोपले लड़ते हुए मारे गए। परन्तु सैकड़ों मोपले स्वर्ग में प्राप्त होने वाली दारू और स्त्रियों के लोभ को बिसार कर गोरखों से लड़ने के स्थान पर अपने प्राण बचाकर भाग निकले। संध्या होते-होते कुट्टम ग्राम में मोपलों का दिखाई देना भी दुर्लभ हो गया। कोई मार डाला गया, कोई भाग निकला, हर हर महादेव की उस तलवार के सामने खिलाफत की आफत ही आ गई।

रात्रि हो गई, अन्धकार चतुर्दिक् व्याप्त हो गया। वह कुआं जिसमें थंगल और मौलवी ने कत्ल कराके सैकड़ों हिन्दू फैंक दिए थे, भी मानो आकाश की ओर निहार रहा था। अंधकार बढ़ता गया, मध्यरात्रि हो गई। जिस प्रकार बैठे-

बैठे कोई झपकियां लेने लगता है, उसी प्रकार कुएं को खोलकर अंधकार भी मानो गहरी नींद में खर्राटे भरने लगा था। उसके पेट में भयंकर पाचन क्रिया जारी थी। उस कुएं में पड़े हुए अनेक अर्धजीवित और मरणासन्न हिन्दुओं की आहें और कराहें, जो बीच-बीच में सुनाई पड़ रही थीं, उस अन्धकार के पेट में होती हुई गड़गड़ाहट-सी करती प्रतीत होती थीं।

वह कुआं, उसमें धकेली गई लाशों, धड़ों, धड़विहीन सिरों, टूटे हुए हाथों के टुकड़ों, मांसपिण्डों से आकण्ठ भरा हुआ था। इस कुएं की एक दीवार में एक वृक्ष फूट कर निकला हुआ था। अतः अनेक हिन्दुओं के जो शव, मांस आदि के टुकड़े फेंके गए थे वे इसमें अटक गए थे और इसकी शाखाएं भी झुक गयी थीं। इसी की एक शाखा में एक घायल हिन्दू जिसे इस कुंए में धकेला गया था, अटक कर रह गया था। उसी के समीप एक मरणासन्न हिन्दू और भी लटका हुआ था। वह दम तोड़ ही रहा था कि एक कोमल कण्ठ से निःसृत आवाज उस घायल हिन्दू को सुनाई पड़ी और वह कह रही थी 'भाई तू कहां है? मुझे भय लग रहा है, अपना हाथ पकड़ा दे।' उस वृक्ष में अटके हुए हिन्दू ने जब यह आवाज सुनी थी, तो उसकी थोड़ी-थोड़ी चेतना बनी हुई थी। उसने सोचा कि यह किसी ऐसी बहिन की आवाज है कि जो मरते समय अपने भाई का स्मरण कर रही है कि उसका क्या हुआ है। अतः वह विह्वल है। अथवा जब उसने हिन्दू-धर्म का परित्याग न करने का संकल्प व्यक्त किया है तो मोपलों द्वारा की जा रही मारामारी में उसका भाई उससे बिछुड़ गया है। या फिर जब मोपलों द्वारा इस कुएं में उसको अन्धाधुन्ध गिराया जा रहा है तो वह बहिन अपने भाई के हाथ का सहारा मांग रही है, जिससे कि वे दोनों ही साथ-साथ इस अन्धकूप में गिर सकें। अभी तक तो वह घायल हिन्दू अर्धचेतन अवस्था में ही था, इसलिए उसे पीड़ा का भान ही नहीं हो पा रहा था, किन्तु सहसा ही एक दम तोड़ते हुए व्यक्ति द्वारा पैर पटके जाने पर जब उसकी नाक पर आघात लगा तो वह सहसा ही पूर्णतः सचेत हो गया।

किन्तु वह चेतना बड़ी भयंकर थी, मृत्यु की अचेत अवस्था से भी अधिक भयावह! मध्यरात्रि, घिरा हुआ अन्धकार, चारों ओर गूंजती आहें-कराहें, बिलबिलाते मांसपिण्ड, रक्त, मज्जा, मांस और अंतड़ियां, भीषण स्मृतियां। वह घायल तरुण होश में आ गया था। अब उसके घायल कंधे और अंग-प्रत्यंग में भयंकर पीड़ा उभर उठी थी! वह भी जोरों से चीख उठा। उसकी उन आहों और कराहों से कतिपय अन्य अर्धमृत घायल भी तड़प उठे। मलाबार में यह

एकमात्र कुआं ही नहीं था, जहां अर्धरात्रि के इस अन्धकार में आहों और कराहों के स्वर उभरे थे। ऐसे दसियों कूपों में इसी प्रकार की आहों और कराहों के गूंजते स्वरों से रावण के द्वारा की जाने वाली भयंकर गड़गड़ाहट का आभास हो उठाता था।

उसी समय कानपुर के समीप एक भव्य बंगले में प्रेमवर्धक महामण्डल की सभा हो रही थी—खुदाबख्श, कड़कखान इत्यादि प्रमुख मुसलमान नेता तथा भालचन्द, गयाल सेठ, पीट गय्या इत्यादि हिन्दू नेता इस संस्था के इस विशेष अधिवेशन में उपस्थित थे। सभा में खड़े होकर कड़कखान ने कहा कि प्रेमवर्धक महामण्डल ने अपने अविकल परिश्रम से हिन्दू-मुसलमानों में जो एकता कायम की है, वह कतिपय देश-शत्रुओं को फूटी आंखों नहीं भा रही है। अतः उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों में दंगे होने के मिथ्या समाचार छापने का अभियान चलाया हुआ है। उनकी यह रुचि तीव्र निन्दा करती है। सभा ने स्वयं इन मामलों की जांच करने के लिए खुदाबख्श को मलाबार भेजा था। उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदन को देखते हुए यह सभा देश-भर की जनता की ओर से यह प्रस्ताव करती है कि मलाबार में हिन्दू-मुसलमानों की एकता को भंग करने वाली एक भी घटना घटित नहीं हुई है।'

गयाल सेठ बोला, 'सभी हिन्दुओं की ओर से मैं इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूँ। मलाबार में हिन्दू और मुसलमान सुख और समाधान-सहित निवास कर रहे हैं। मलाबार में कुछ भी नहीं हुआ है।'

सभी हिन्दू बोल उठे—'कुछ भी नहीं हुआ है।'

'छी: छी: कुछ भी नहीं हुआ, ऐसा कैसे कह रहे हो? या अल्लाह! अभी भी हमारे हिन्दू बन्धुओं में मुसलमानों के प्रति जितनी सहानुभूति होनी चाहिए वह नहीं है। मलाबार में हमारे शूर मोपले जो यह कर रहे हैं, क्या वह कोई बात ही नहीं है?' कड़कखान कड़क उठा।

तभी अध्यक्ष भालचन्द ने खड़े होकर कहा 'क्षमा कीजिए! कड़कखान महोदय, तुम्हारे शूर बन्धुओं, उन मोपला वीरों और उनके धैर्य का यह सभा अभिनन्दन करती है। मोपले हम हिन्दुओं के भाई हैं।'

'हिन्दू-मुसलमान भाई है' सभा में गर्जना हुई।

'हिन्दू-मुसलमान एक हैं' मूढाप्पा, बावले, शास्त्री आदि उत्साह के नारे लगाने लगे।

'और यदि हिन्दू-मुसलमान नहीं हुए हैं तो मोपले उन्हें मुसलमान बना रहे

हैं, जान से मार रहे हैं।' एक गृहस्थ ने उठकर जोरदार आवाज लगाई। तभी बावले, गयाले, भालचन्द इत्यादि हिन्दू नेता चीख उठे 'गलत बात कहता है! तू है कौन, बता तो सही तू देशभक्त है?'

'यह देश-शत्रु है। हिन्दू-मुसलमानों की एकता नष्ट कर रहा है' सारी सभा गूंज उठी। परन्तु इससे भी भयभीत न होते हुए वह गृहस्थ बोला, 'शान्त हो जाओ। मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह अक्षरशः सत्य है। मैं एक हिन्दू हूँ। मेरी इस सम्बन्ध में प्रत्यक्ष साक्षी है। स्वयं मुझे ही मोपलों ने भयंकर बल द्वारा मुसलमान बना लिया था। मुझ से भी लाखों गुना अधिक अत्याचार अन्य लोगों पर किया गया है।'

'परन्तु अब तू मुसलमान है ना, फिर तू मुसलमानों के विरुद्ध कैसे बोल रहा है?' मौलवी करीमुद्दीन ने उससे पूछा।

'मैं हिन्दू हूँ। मोपलों ने मुझे बलात् मुसलमान बनाया था। परन्तु मुझे मेरी इच्छा के अनुरूप आर्यसमाज ने संस्कार कर शुद्ध कर लिया है। मैं तो हिन्दू का हिन्दू ही हूँ।'

'या अल्लाह! फिर तो यह काफिर मार दिए जाने के योग्य है।' कुढ़कर भयंकर रूप से चीखता कड़कखान बोला, 'मुसलमानों की शरीअत के अनुसार जो व्यक्ति मुसलमानों से पुनः हिन्दू होगा, वह मृत्युदण्ड का पात्र है। वह काफिर है, उसे जान से मार दिया जाना चाहिए।'

तभी अध्यक्ष भालचन्द ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'खान साहेब! खान साहेब! क्षमा कीजिए। अपराध इस गृहस्थ का है। यह क्योंकि भांडखोर आर्यसमाज का अनुयायी है, उसी प्रकार इसकी बात पर कोई विश्वास नहीं किया जा सकता, यह तो स्पष्ट ही है।'

'आर्यसमाज बिल्कुल भांडखोर संस्था है। यह आर्यसमाजी है इसलिए इसके साक्षी पर विश्वास ही नहीं किया जा सकता।' सभा में एक स्वर से लोग बोल उठे।

'परन्तु मलाबार में हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार किए जा रहे हैं, उनकी हत्याएं की जा रही हैं। यह मैं आर्यसमाजी नहीं कहता अपितु यह बात श्री देवधर के पत्र में कही गई है। यह देखिए उनका पत्र।'

'श्रीयुत देवधर उपद्रवी है' सभा गरज उठी।

'श्रीयुत देवधर उपद्रवी है, हम असहकारी देशभक्तों को उसका कथन मान्य नहीं है।' भालचन्द ने निर्णय दे दिया।

'फिर भी मलाबार में मोपलों द्वारा हिन्दुओं से किए गए छल को तुम्हें सत्य मानना चाहिए। कारण देवधर ही नहीं डॉ० मुंजे भी इस बात की साक्षी देने को तैयार है कि यह बात सत्य है।'

'डॉ० मुंजे जाहिल है, अतः उसकी भी साक्षी पर विश्वास नहीं किया जा सकता' सभा का स्वर गूंज उठा।

डॉ० मुंजे जाहिल है, अतः हम अनत्याचारी देशभक्तों की दृष्टि से उनकी साक्षी विश्वसनीय नहीं है। अध्यक्ष भालचन्द ने निर्णय किया।

'परन्तु जिन-जिन हिन्दुओं को इस भयंकर आपत्ति से ग्रस्त होना पड़ा है, उन्होंने हस्ताक्षरों सहित आपदाओं की ये गाथाएं लिखकर मेरे मित्रों को तारों द्वारा भेजी हैं। कुट्टम ग्राम में कुछ दिन पूर्व ही भयंकर हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ है और मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं का शिकार खेला जा रहा है। यह सूचना मुझे दूसरे पत्र द्वारा मिली है, मैं वह थोड़ी-सी पढ़कर सुनाए देता हूँ।'

'अरे तारों का क्या है? काल्पनिक दंगा सम्बन्धी समाचारों की तारें तो मुझे प्रतिदिन ही सैकड़ों मिल रही हैं। परन्तु मलाबार के इन हिन्दुओं की इन तारों की एक गद्दी बनाकर मैं अपनी उस कुर्सी पर बैठता हूँ। यहां से आई हुई तारें सत्य हैं, यह कैसे मान लिया जाए? भालचन्द ने शान्त मुद्रा में किन्तु बड़ी गम्भीरता सहित कहा 'तारों पर मुझे विश्वास नहीं है।'

खुदाबख्श कुछ कराहता हुआ-सा बोला 'अभी मुझे कोचीन के खिलाफत मण्डल के अध्यक्ष का तार भी मिला है। इस प्रश्न से सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है। कोचीन से खिलाफत के सेक्रेटरी ने लिखा है कि मलाबार में मुसलमानों ने हिन्दुओं पर अत्याचार किया है कि हिन्दुओं को मुसलमान धर्म में बलपूर्वक दीक्षित किए जाने के जो समाचार प्रकाशित हो रहे हैं वे पूर्णतः निराधार हैं। प्रेक्षतः जानकारी प्राप्त करने से यह विदित हुआ है कि एक अथवा डेढ़ हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाने की घटना हुई है।'

'बस-बस। इस तार ने सभी प्रश्नो का समाधान कर दिया है। मलाबार के हिन्दुओं पर अत्याचारों सम्बन्धी सभी कहानियां मिथ्या हैं। एकाध हिन्दू इस प्रकार धर्मच्युत किया गया होगा। यह बात खुदाबख्श को मिली तार से ही स्पष्ट हो जाती है। अतः शंका करने का कोई कारण नहीं है।' भालचन्द बोला।

'अब शंका का कोई कारण ही नहीं रहा, मलाबार में कोई गड़बड़ नहीं हुई। मलाबार में हिन्दू और मुसलमान प्रेम-सहित रह रहे हैं।' सभा में गर्जना हुई।

यहां मूल प्रस्ताव में मोपलों के शौर्य का अभिनन्दन करने सम्बन्धी खुदाबख्श की उस सूचना को सम्मिलित करते हुए मोपलों की दयालुता, सहनशीलता के गुणगान करके यह बताया जा रहा था कि उनके द्वारा हिन्दू बन्धुओं पर अत्याचार किया जाना किस भांति असम्भव है।

और उसी समय वहां—

वहां भयंकर अन्धकार में अपना जबड़ा खोले सोये हुए से उस भयंकर कुएं के पेट में हाड़-रक्त-मांस, शव, कटे हुए अंग-प्रत्यंगों, छिन्न-भिन्न हुए सिर, टूटे पैर आदि वह सब अन्न पचता जा रहा था। और उस अन्न के चाबे जाने, दले जाने से उत्पन्न किसी रत्न के समान वह हिन्दू तरुण—वह लटका हुआ घायल मरने वालों में से किसी की लात लगने से जब सचेत हुआ तो उसे एकदम उस समय की स्मृति हो आई जब वह अचेत हुआ था। उसे लगा कि मानो उससे पूछा जा रहा है, 'हिन्दू-धर्म छोड़ता है कि नहीं? मुसलमान होता है कि मरता है?' और वह चीख उठा 'जी नहीं होता, जी नहीं छोड़ता! मैं हिन्दू हूँ! मारो तुम कितना मारते हो। परन्तु कुछ ही समय उपरांत उसे अनुभूति हो गई कि वह कहां है? उसका प्रकृति-प्रदत्त धैर्य पुनः उदित होने लगा। उसके समीप ही किसी हिन्दू का पैर लटक रहा था और उससे रक्त की धारा उसके मुख पर टपक रही थी। वह उसे लटकते हुए पैर पर चढ़ गया। किन्तु तभी उसके मन में एक टीस-सी उठी कि कहीं उसके द्वारा किसी हिन्दू हुतात्मा की देह का अपमान तो नहीं हो रहा। किन्तु उसने अपने मन के इस संकोच को शान्त किया और कुएं में उगे हुए उस वृक्ष को पकड़ कर कुंए से बाहर निकलने का प्रयत्न किया। किन्तु वह डाली छूट गई और वह धड़ाम से गिर गया। इसका परिणाम यह हुआ कि कुएं में दूसरी ओर शवों का जो ढेर लगा हुआ था वह उसके ऊपर खिसककर आ गिरा। थोड़ी-सी चूक हुई ही थी कि उसका पीठ तक का भाग शवों आदि की उस ढ़ेरी में धंस गया। उसने उस ढेरी से निकल कर एक ओर खड़े होने का प्रयास किया ही था कि उसका पैर एक व्यक्ति के पेट पर पड़ गया और पेट फूटते ही उस शव की अंतड़ियां, मांस, नसें, अन्न-मल सभी कुछ निकल कर बिखर पड़ा। इससे बनी कीच में उसका पांव फंस गया था। उसे सहसा ही अत्यधिक भय प्रतीत होने लगा किन्तु उसने येन-केन-प्रकारेण उस भय से अपने आपको उबारा और झटका देकर अपना पैर खींचा। उसने पास ही पड़े एक सिर विहीन धड़ को कुएं की दीवार के सहारे खड़ा किया और उस पर पांव रखकर पुनः उस वृक्ष की टहनी को पकड़ा। उसके मन में बार-बार

एक ही विचार आ रहा था कि वह सिरहीन हिन्दू हुतात्मा कौन था? रहने के लिए मरण का भी वरण करने वाले उसके समान लोग थोड़े ही हैं। और तू उस सिरविहीन हिन्दू हुतात्मा की पीठ और कन्धे पर पग रखकर बचने के लिए इतने हाथ-पैर मार रहा है, तुझे लज्जा नहीं आती?'

किन्तु सिरविहीन हुतात्माओं के कन्धे पर चढ़कर ही तो कोई राष्ट्र पतन के गर्त से अपना सिर ऊंचा करके निकल पाता है। मरण के अन्धकार से पुनर्जीवन के उदयाचल की ओर बढ़ने के लिए शीशदान देने वाले ऐसे ही हुतात्माओं के शवों की ढेरियां तो किसी राष्ट्र को खड़ी करनी पड़ती हैं।

अतः हे हिन्दू तरुण! संकोच न कर। चढ़ इस ढेरी पर पकड़ ले वह डाली, और आगे बढ़ा अपना हाथ तथा उस कुंए की लकड़ी को पकड़कर इस मृत्यु के मुख से बाहर निकल आ।

वह हिन्दू तरुण इसी प्रयास में लगा हुआ भी था।

और उधर उस सभा में खुदाबख्श मोपलों की दीनता और सुशील स्वभाव का वर्णन करते हुए कह रहा था-'ऐसे लोग हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार व उनका बलात् धर्मान्तरण कर रहे हैं इस बात पर हिन्दू बन्धुओं को विश्वास ही कैसे हो रहा है?' हिन्दू बन्धुओं, स्मरण रखो कि मोपले मुसलमान हैं। बस! इस एक ही शब्द से इन सम्पूर्ण आक्षेपों की समाप्ति हो जाती है। मुसलमानी धर्म बलात् दूसरों के धर्म को हानि पहुंचाने के पूर्णतः विरुद्ध है।'

'पूर्णतः विरुद्ध है।' कड़कखान बोला, 'कुरान के तो एक-एक पृष्ठ में यही स्पष्ट किया गया है।'

'उदाहरणस्वरूप आप मुझे इस मत की पुष्टि करने वाले किन्हीं दो पृष्ठों को बता सकते हैं क्या? और यह भी बताएंगे क्या कि इन वचनों के विरुद्ध कितने वचन हैं तथा मुसलमानी इतिहास में इन दोनों वचनों के स्थान पर कौन से वचनों को ग्रहण किया गया है?' वह आर्यसमाजी बीच में ही बोला उठा। यह सुनते ही कड़कखान एकददम आगबबूला हो गया और बोला, 'इस आर्यसमाजी को सभा से निकाल दो, अन्यथा मैं इसको जान से मार दूंगा। जो भी एक बार मुसलमान बना लिया गया है, चाहे वह बलपूर्वक ही बनाया गया हो वह यदि पुनः मुसलमानी धर्म को छोड़ता है, चाहे वह स्वेच्छा से ही ऐसा करे, उसे जान से मार देना ही मुसलमानी धर्म की आज्ञा है।'

'यह हरामी है, यह काफिर है' ऐसा कहते हुए अनेक मुसलमान उस हिन्दू की तरफ बढ़े। अध्यक्ष भालचन्द भी भयभीत हो गया। कहीं सभा ही भंग

न हो जाए, इस भय से उसने उस आर्यसमाजी को धक्के देकर सभा से निकाल देने का आदेश दे दिया। जब उसको सभा से बाहर निकाला जा रहा था तो उसने कहा कि 'हे हिन्दुओ, तुम मुझे धक्के मारकर क्यों निकाल रहे हो? तुम तो अत्याचार न करने वाले लोग हो।'

चुप रह! गधा कहीं का! श्रीयुत झकमार घोष ने क्षुब्ध होकर कहा, 'हमारा अत्याचार न करने का निर्णय केवल दूसरों के सम्बन्ध में है। अपनों के विरुद्ध भी हम बल प्रयोग नहीं करेंगे, अत्याचार न करने का यह भी अर्थ होता है क्या?'

उस आर्यसमाजी को बाहर निकाल दिये जाने पर सभा में शान्ति स्थापित हो गई। स्वयं भालचन्द्र द्वारा प्रस्तुत यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया कि मुसलमानी धर्म का प्रचार कभी भी बलपूर्वक नहीं किया गया। अतः मलाबार में भी बल प्रयोग नहीं हुआ है। मोपले शूरवीर और हम हिन्दुओं के सगे भाई हैं। उन्होंने हिन्दुओं के साथ किसी प्रकार का भी छल नहीं किया है। इसके विपरीत अनेक मोपलों ने हिन्दुओं को आश्रय देकर हिन्दू जनता पर उपकार किया है। जिन लोगों ने भी हिन्दुओं के बलात् धर्मान्तरण की अफवाहें फैलाई हैं, वे सभी देश के शत्रु हैं। इस प्रचार का आधार कहीं एक-डेढ़ हिन्दू का बलात् धर्मान्तरण किया जाना है। अतः मलाबार में कोई चिन्ताजनक स्थिति नहीं है।

'मलाबार में हिन्दू-मुसलमानों की एकता को कोई भंग नहीं कर सकता। वहां कोई चिन्ताजनक स्थिति नहीं है।' बावले, झकमार घोष मुढ़ाप्पा इत्यादि सभी हिन्दुओं ने एक स्वर से गर्जना की।

और वहां—

वह हिन्दू युवक उस कुंए से बाहर निकल आया था। उसके अंग-प्रत्यंग नख-शिख सने हुए, किसी के रक्त से तो किसी की मज्जाओं से बहते रस से। मुसलमानों द्वारा उस पर किए प्रहार से उसके कंधे आदि पर भी भयंकर घाव लगे थे और उनसे रक्तस्राव हो रहा था। असह्य वेदना हो रही थी। परन्तु खुली वायु में श्वास लेकर वह तरुण अपने को कुछ हलका अनुभव कर रहा था। परन्तु घोर अन्धकार! वह गहन कूप! वह घोर स्मृति और गहन विस्मृति! किन्तु वह सहसा ही चौक-सा पड़ा। उसने देखा कि पास के वृक्षों के पीछे कोई खड़ा है। फिर उसे स्पष्टतः दिखाई देने लगा कि वहां कोई स्त्री खड़ी है। उसने समझा कि यह कोई मोपला नारी है।

इधर श्रीरंगम् देवालय के समीप से एक प्रचण्ड जयघोष सुनाई पड़ा 'हर हर महादेव।' हिन्दू युवक यह विचार कर प्रसन्न हो उठा कि इतने जोरों से हर हर महादेव का जयघोष गुंजाने में समर्थ हिन्दू अभी भी विश्व में जीवित हैं। उसका रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठा और सुध-बुध भुलाकर उस प्रिय और पूज्य जयघोष को तन्मयता-सहित सुनने लगा और स्वयं भी बोल उठा 'हर हर महादेव।'

उस तरुण के मुख से यह ध्वनि सुनते ही वह झाड़ी के पीछे खड़ी हुई आकृति भी चल पड़ी। उसने अपनी साड़ी के पल्ले के पीछे छिपाया दीप निकाला और उसके उजाले की रेखा उस जयध्वनि करने वाले व्यक्ति पर पड़ने लगी। वह स्त्री तत्काल उसकी ओर 'दामू! हे वीरवर' दामू! कहते हुए दौड़ पड़ी। आश्चर्य, आनन्द, आभार और अभिमान से उसका शरीर कंपित हो उठा। उसके हाथ से जलता दीप गिर पड़ा। उस दीप के गिरने के साथ ही उसके धैर्य का बांध भी टूट गया। 'दामू जानते हो कि नहीं ? वीरवर मैं हूँ तुम्हारे द्वारा मुक्त की गई लक्ष्मी।' एक सांस में ही यह कहती हुई वह युवती दामू से लिपट गई। उसकी छाती से लिपट कर वह युवती बोली 'मुझे संभाल दामू, अब तक इस श्मशान में भी मुझे भय नहीं लग रह था, किन्तु मैं अब क्षण-भर भी खड़ी नहीं रह सकती।'

यह चिन्तामणि शास्त्री की वही कन्या थी जिसे शास्त्री के शान्ति-कुटीर में सोए हुए सुमति समझकर पकड़ा गया था। और उसके बाद उसने कितने सन्ताप, छल, भीति, बलात्कार, प्रहार और आशा तथा निराशा सहन की। उसे भी बन्दी बनाना पड़ा था, किन्तु विजयी गोरखों ने सभी बन्दी बनाई गई हिन्दू कन्याओं को स्वतन्त्र कर दिया था। यह युवती लक्ष्मी भी उन्हीं के साथ मुक्त हुई थी। इतने कष्टों और दुःखों से लक्ष्मी टूट-सी गई थी।

परन्तु अब उसके जीवन का बन्धन भी टूटने ही वाला था, जब उसकी दामू से भेंट हुई।

इतने दिनों के उपरान्त उसे कोई अपना मिला था। यह पगली स्त्री जाति! संकटकाल में झेले सभी दुःखों को वह एकदम भूल गई। दुःखों के आघात से उसकी जो जीवन-डोरी टूट नहीं पाई थी वह सुख का यह अतिरेक सहन न कर पाई। और दामू मुझे संभाल ले, कहती-कहती वह युवक के बाहुपाश में इस प्रकार आबद्ध हो गई कि फिर न हिली। उसने इतना ही कहा 'दामू! मेरा दामू! मेरा......' और लजा गई। परन्तु अधूरे वाक्यों का उच्चारण यही तो प्रेम का

पुरातन अभ्यास है ! दामू ने भी उसे सान्त्वना दी-'लक्ष्मीबाई ! भयभीत न हो, मैं तुम्हारे साथ हूँ।'

किन्तु प्रेमोन्मत्त इस सुन्दर कन्या का यह प्रथम बाहुपाश में आबद्ध होना, उसके लिए जीवन का अन्तिम बन्धन सिद्ध हुआ। लक्ष्मी बड़ी निश्चिन्तता-सहित उस युवक की गोदी में सिर रखकर सो गई। युवक भी सोच रहा था कि गोरखों ने पुनः ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है कि कुट्टम ग्राम में हिन्दू निश्चिन्तता-सहित सो सकते हैं। उसने समझा कि युवती को नींद आ गई है। कुछ समय पश्चात् युवक को भी नींद आ गई।

प्रातःकाल हुआ। सुशीतल सुगन्धित समीरण बह चला। पक्षियों की चहचहाहट चारों ओर गूंज उठी। पहले एक चिड़िया उन दोनों के ऊपर से उड़ी और उसने कई चक्कर लगाये और फिर लक्ष्मी की बिखरी केशराशि में से एक केश खींचकर वह चिड़िया उड़ गई। परन्तु वह युवती जागी नहीं, अपितु उस युवक के गले में हाथ डाले उसी भांति निश्चिन्त पड़ी रही। युवक के घावों से होते हुए रक्तस्राव से वह भी पूर्णतः भीग गई थी। कुछ ही समय पश्चात् एक छोटा-सा हिन्दू बालक एक भव्य आकृति वाले संन्यासी को साथ लिये वहां आ पहुंचा और बोला, 'यही है वह कुआं महाराज।' संन्यासी भी स्तम्भित होकर खड़ा रहा।

'परन्तु यह कौन है ?' वह बालक दामू और उस युवती को वहां सोये हुये और रक्त से नहाये हुये देखकर बोला, 'ओहो, यह तो दामू थिय्या है ! कम्बु का सहायक और वीर शिष्य, और यह ? यह है चिन्तामणि शास्त्री की कन्या-लक्ष्मी, हां वही तो है यह ?

संन्यासी ने भी बड़ी कुरूप दृष्टि से यह दृश्य देखा। उस युवक और युवती के सम्बन्ध में शंकित होकर उन्हें संन्यासी ने हिलाया। परन्तु वह कन्या तो निश्चिंत पड़ी थी। किन्तु वह तरुण एकदम उचक पड़ा। उसे लगा कि लक्ष्मी को किसी शत्रु ने हाथ लगाया है। परन्तु उसने देखा कि उसके सिर पर एक भव्य आकृति वाले परम दयालु संन्यासी ने हाथ रखा हुआ है और वह उसे आशीर्वाद दे रहा है। उसे यह संन्यासी अभयदान देने वाले देवता के समान प्रतीत हुआ।

दामू झटपट उठा, खड़ा हुआ और भक्ति-भावना सहित कुछ दूर पीछे हटा और उस संन्यासी को दण्डवत् किया। अभी संन्यासी पुनः उसके मस्तक पर प्रेम सहित हाथ रखने ही वाला था कि युवक बोल उठा 'भगवन् मैं थिय्या

हूँ। आपको कलंक लग जाएगा।'

'पगले! तेरी वीरता की कथा मैंने लोगों के मुख से सुनी है। मुझे बताया गया था कि तेरी हत्या कर दी गई है। तब तेरे तथा तेरे गुरु कम्बु सहित हिन्दू-धर्म के सम्मान की वेदी पर, जिस-जिसने अपनी देह सानन्द समर्पित की है, उन्हीं हुतात्माओं के वध किये शरीर के दर्शन करने हेतु मैं यहां आया था। और मुझे वहां उन हिन्दू हुतात्माओं के समान ही तेरा प्रत्यक्ष दर्शन मिला है। जो थिय्या हिन्दू-धर्म के लिए अपनी आत्मा का हवन करता है वह तो ब्राह्मणों से भी श्रेष्ठ ब्राह्मण है। जो महान् हिन्दू-धर्म के लिए अपना शीश भेंट चढ़ाता है, वह क्षत्रियों से भी श्रेष्ठ क्षत्रिय है। चल, सर्वप्रथम इस सुन्दर ब्राह्मण कन्या के शव को इस कुएं में डाल दें। रो मत, हजारों वृद्ध एवं तरुण, बालक और बालिकाएं, स्त्रियां तथा पुरुष हिन्दू-धर्म के लिए मोपलों की तलवारों के शिकार बन रहे हैं। जब तू किसी व्यक्ति विशेष के लिए रोने लगा है तो समझ कि तेरा अहंकार तेरे जाति-प्रेम के मार्ग में रोड़ा बन रहा है। तुम्हारा प्रत्येक अश्रु हिन्दू-जाति के लिए गलना चाहिए। किसी व्यक्ति-विशेष के लिए अपने नेत्रों से अश्रु प्रवाहित करते रहने का अवसर अब कहां है?

उन दोनों ने उस निरपराध किन्तु पीड़ाओं के भार से क्लांत-श्रांत हुई युवती के शव को उस कुएं में फेंक दिया। वह संन्यासी तथा दामू बहुत देर तक उस कुएं के समीप खड़े रहे। बीच-बीच में संन्यासी कुछ पूछता जाता था और दामू उसे उत्तर देता जाता था। उस कुएं के पास बड़ी दूर-दूर तक अनेकों हिन्दुओं की कटी हुई शिखाएं, और बलात् की गई सुन्नत के कारण कंटक हुआ मांस तथा चर्म और रक्त बिखरा हुआ था। और उस कुएं में हिन्दुओं के अनेक शव रक्त में सरोबार पड़े थे। ऐसा लग रहा था कि मानो इस कुएं के निर्माण में मलाबार के मुसलमान कारीगरों ने हिन्दुओं के रक्तमांस के चूने से, कटे हाथों, पांवों, सिरों, बोटियों और अस्थियों व धड़ों तथा शवों से इसका निर्माण किया हो। संन्यासी उस दृश्य को बारम्बार देखकर बोला-'आगरा में मुसलमानों ने प्रेम का ताजमहल बनाया है, परन्तु मुसलमान कारीगरों ने इस कुएं के समान द्वेष के ताजमहलों का निर्माण भी पद-पद पर समग्र हिन्दुस्तान में किया है। ईश्वर उन्हें क्षमा कर और सद्बुद्धि प्रदान कर।'

'सुबुद्धि दे!' सहसा ही एक ध्वनि उठी। संन्यासी ने पीछे मुड़कर देखा तो एक मुसलमान वृद्ध लाठी टेकता हुआ अपनी ओर आते हुए दिखाई दिया। वह मुसलमान बोला—'महाराज चौंकिए नहीं, मैं मोपला मुसलमान हूँ।'

'अच्छा तो ऐसा है।' संन्यासी बोला—'यदि तू अन्य मोपला मुसलमानों के समान मुझ हिन्दू की हत्या करने आया है, तो भी मैं चौकूंगा नहीं। इस कुएं को देख। चौदह-चौदह वर्ष की अल्हड़ हिन्दू कुमारियों ने हिन्दू-धर्म की रक्षार्थ अपने प्राण समर्पित किये हैं। उन्होंने ही कोई संकोच नहीं किया, मैं तो संन्यासी हूँ। संन्यासी के प्राण तो पहले ही आधे जा चुके होते हैं। और यदि तू मोपला होकर भी हिन्दुओं से द्वेष नहीं करता और उनके द्वारा किए भयंकर अन्याय और अत्याचार पर तुझे वस्तुतः पश्चात्ताप हो रहा है तो भी मैं चौकूंगा नहीं। कारण यह है कि क्या मोपला, क्या मुसलमान, क्या ईसाई! सम्पूर्ण जाति की जाति ही दुष्ट होती है, ऐसा तो मैं मानता नहीं हूँ। वे भी मनुष्य ही हैं। उनमें भी साधु, सत्त्वशील तथा दयामय नर-नारी हैं। मैं जब किसी जाति के लोगों द्वारा किए गए कृत्यों का विरोध करता हूँ तो उन कृत्यों का विरोध करता हूँ, उस जाति अथवा धर्म का नहीं।'

आँखों में अश्रु भरकर वह मोपला बोला—'महाराज, हिन्दू लोगों में साधु-सन्तों की मैंने पर्याप्त संगति की है। अतः मुझे यह विदित है कि न्याय, सत्य व दैवी विचारों को जितनी हिन्दुओं ने मान्यता दी है, उतने दुर्दैव से हम मुसलमानों में अभी तक नहीं पनप पाए है। कुरान सरीखे ग्रन्थ का उसके लाखों अनुयायियों द्वारा बड़ा ही भयंकर अर्थ किया जाता है। वह अर्थ मुझे तथा मेरे पंथ के अनुयायियों को पसन्द नहीं है। अनेक मुसलमान हमें मुसलमान मानते हुए भी हमारे प्रति द्वेष-भावना रखते हैं। क्योंकि हम कुरान के वचनों का अर्थ समझ और परिस्थितियों के सन्दर्भ में लगाते हैं। जो वचन त्रिकाल से सत्य है तथा मानव जाति के हितों के अनुकूल प्रतीत होते हैं उन्हें हम त्रिकालाबाधित मानते हैं अतः हमारे हिन्दू बन्धुओं पर मुसलमानों ने जो अत्याचार किए हैं, उनका भी हमारा पंथ तीव्र निषेध करता है। हम तो यह प्रार्थना करते हैं कि 'हे रहीम! हे राम! मुसलमानों को सद्बुद्धि दे। हिन्दुओं को सद्बुद्धि दे कि जिससे मनुष्य देव के नाम पर और देवताओं के नाम पर मनुष्यों की बलि न लें। जिस कुरान ने अरबों को अपनी कन्याओं को न मारने की शिक्षा दी है वही कुरान अल्लाह के नाम पर दूसरों की हत्या की शिक्षा भला कैसे दे सकता है? और यदि वह ऐसी शिक्षा देता है तो फिर वह ईश्वरीय पुस्तक नहीं है।'

'ईश्वरी पुस्तक?' संन्यासी बोला—'इस ईश्वरीय पुस्तक की मनुष्य ने शैतानी टीकाएँ करके मनुष्य पर अत्याचार किए हैं। यदि मनुष्य जाति के लिए जो शिक्षाएँ प्रत्यक्षतः उपकारक हैं उनका अनुकरण किया जाए और जो शिक्षाएं

राक्षसी व अहितकारी प्रतीत होती हैं वे केवल किसी पुस्तक में उल्लिखित हैं, केवल इसीलिए मान्य हैं, यदि मनुष्य इस दृष्टिकोण का परित्याग कर दे तो मानव का मानव पर कितना उपकार होगा ? ईश्वरीय पुस्तकों के नाम पर मानव ने इतने अधिक अनर्थ किए हैं कि उनकी अपेक्षा मनुष्यकृत पुस्तकें ही अधिक आदरणीय व नैतिक प्रतीत होती हैं। परन्तु यह स्थिति तो जब आएगी तब आएगी। तब तक तो अत्याचार और बलात्कार का मुकाबला करने वाला कोई भी व्यक्ति हमारे लिए वन्दनीय है। यह कुआं अनेक सुकोमल सुकुमारियों और नवयौवन में मदमाते तरुणों के शवों से भरा हुआ है। उनसे यही प्रश्न किया जाता है कि तुम मुसलमान होते हो कि मरते हो ? बालिकाओं ने अपनी माताओं और माताओं ने बालकों के मोह को तज कर तथा तरुणों ने मदमाते यौवन का मोह छोड़कर हँसते-हँसते काल का वरण किया है। उनके खण्ड-खण्ड कर दिये गये, फिर भी उन्होंने सी तक न की। उनका यह धर्मवीरत्व धन्य है। अत्याचारों की धार भी जिस ढाल से टकराकर कुंठित हो गई, ऐसे हुतात्माओं की ढाल हे हिन्दू-जाति, आज भी तेरे हाथों मे है, अतः भय न कर।

एक बाबा बंदा बहादुर ने बलिदान दिया, शम्भाजी शहीद हो गए, किन्तु आज भी उनके बलिदानों के कारण हम उनका नाम सम्मान सहित लेते हैं। किन्तु जिनकी शहादत की पावनता उनसे अणुमात्र भी कम नहीं, परन्तु जिनके नामों का पता लगाया जाना असम्भव है, ऐसे सैकड़ों आबालवृद्ध नर-नारी, ब्राह्मण और चण्डाल, हिन्दू-धर्मवीरों ने जो अत्युग्र बलिदान देकर इस कुंए को पाटा है, उन्हीं के नाम पर इस कुएं को नाम देता हूँ। हिन्दू-जाति की अवनति की स्थिति में भी प्रकाशमान उनका दिव्य बलिदान और उनकी शक्ति का नाम ही यह कुआं है। इनके दिव्य बलिदान और शक्ति के नाम पर यह हिन्दू-जाति पुनरपि समर्थ, सुन्दर और देवप्रिय होगी। ऐसी जो आशा हमारे हृदय का स्पन्दन कर रही है, उस आशा का नाम ही यह कूप है।'

संन्यासी ने भक्ति-भावना से परिपूरित होकर इस कुएं की तीन प्रदक्षिणाएँ कीं। उनके पीछे-पीछे ही वह मुसलमान वृद्ध और दामू भी भक्ति-भावना से

शिवाजी तथा गुरु गोविन्द और भाऊ द्वारा जिन रणांगणों में विजय प्राप्त की गई, वहां विजय-स्तभ न भी बनाए गये तो क्षण भर चलेगा ? परन्तु इस कूप के रक्तांगण में जयस्तम्भ नहीं तो यशस्तम्भ का निर्माण किये जाने का कार्य कदापि न भुलाया जाए। जाति के जीवन का आधार जयस्तम्भ की अपेक्षा उसके यशस्तम्भों की दृढ़ता पर ही अधिक अवलम्बित होता है।'

'परन्तु महाराज! जिनके भाग्य में उस सौभाग्यशाली दिन का दर्शन करना है, वही करें। मैं तो इस कूप में पुनः उतरूंगा। मेरे साथ-ही-साथ जिन लोगों ने धर्मयुद्ध में भाग लिया और जो मारे गए, उनके शवों पर पग रखकर, अपना जीवन बचाने के लिए इस कूप से बाहर आकर मैंने जो कृतघ्नता दिखाई है उसको अपने-आपको इसमें पुनः प्रविष्ट कराकर मैं भस्म क्यों न कर दूं ?'

'छी:-छी: ! पगला कहीं का। ध्येय की प्राप्ति के लिये मरना जितना पावन है उसकी अपेक्षा ध्येय की सफलता के लिए जीवित रहना और भी अधिक पावन है। यदि तुम सरीखे युवक जाति के लिए अपना जीवन लगा दें तो फिर धर्म के लिए मरने की स्थिति ही कभी उत्पन्न नहीं होगी! धर्म के लिये सजग रहना यही मुख्य कर्त्तव्य है। उसके शिथिल होने पर ही धर्म पर संकट के घन गहरा उठते हैं और उस उपेक्षा का प्रायश्चित करने के लिए धर्म हेतु जीवन समर्पित करने पड़ते हैं। परोपकारार्थ मरना तो आपद्धर्म है। अतः तू जी और इस प्रकार जी कि तेरी जाति भी एक जीवित जाति के रूप में खड़ी रहे! इन हुतात्माओं ने महान् कार्य किया है। किन्तु जिस ध्येय के लिये ये जीवन दे चुके हैं उसको प्राप्त करके ही इन हुतात्माओं को अधिक सन्तोष प्राप्त होगा। इस कार्य के लिए तुझे एक महत्त्वपूर्ण कार्य करना पड़ेगा।'

'महाराज वह महत्त्वपूर्ण कार्य क्या है ?'

'शुद्धि!' वह संन्यासी बोला, 'चल हुतात्माओं के पावन रक्त से पवित्र हुए इस कुएं के समक्ष प्रतिज्ञा कर कि जिन लोगों को मुसलमानों ने बलात् मुसलमान बनाया है उन सब हिन्दुओं की शुद्धि कर, मैं उन्हें पुनः हिन्दू-धर्म में दीक्षित करूंगा। जिन्होंने हिन्दुत्व के लिये प्राण दिए हैं उन्होंने हिन्दुत्व की रक्षा की है, और तुम जीवित हो, अब तुम्हें शुद्धि द्वारा हिन्दू-धर्म की रक्षा करनी होगी! शुद्धि का प्रचार करो और शत्रु के दुष्ट इरादों को विफल करो। चलो, कार्य में प्रवृत्त हो जाओ।'

❑

9

वे चल पड़े। संन्यासी और दामोदर दोनों ही ग्राम-ग्राम और झोंपड़ी-झोंपड़ी में पहुंचे और मोपलों द्वारा बलपूर्वक धर्मच्युत किये गये हिन्दुओं को शुद्ध करने लगे। यह कार्य बड़ी तीव्र गति से चला। मोपलों के विद्रोह के प्रवाह का शमन हो गया। उनके नेतागण भी मारे गये और वे दांतों तले तृण दबाकर अनुनय-विनय कर रहे थे। किन्तु इस पर भी संन्यासी और दामोदर द्वारा किए जा रहे शुद्धि के कार्य से क्षुब्ध होकर मोपलों में से ही कुछ व्यक्तियों ने उनकी हत्या का षड्यन्त्र रचने में कोई कमी नहीं की।

एक दिन तीसरे पहर के लगभग एक झोंपड़ी के द्वार पर एक तरुण कन्या सुस्वर में कोई गीत गुनगुना रही थी। उस स्वर को सुनकर उस मार्ग से जाने वाला एक संन्यासी सहसा ही चौंक पड़ा और ठहर गया। उस तरुणी के गीत की पंक्तियों में उसे गोविंद नाम अस्पष्ट सा सुनाई पड़ा। वह भी मार्ग छोड़कर धीरे-धीरे उस झोंपड़ी के समीप पहुंचकर एक झाड़ी के पीछे छिपकर खड़ा हो गया। वह तरुणी भी अपने गीत के स्वर को धीरे-धीरे ऊंचा करती जा रही थी। और, अब संन्यासी को स्पष्टतः उसके सुमधुर कंठ से यह गीत मुखरित होता सुनाई पड़ने लगा—**गोविन्दा! सुखकन्दा! मन्मन घे तव छन्दा।**

संन्यासी सामने आ गया। उसे देखते ही वह तरुणी चौंक पड़ी। संन्यासी बोल उठा, 'लड़की! यह झोंपड़ी किसकी है?' 'एक मोपले की है, 'और तू यहां कैसे आ गई?' परन्तु इन प्रश्नों के साथ ही साथ उस लड़की का चेहरा उतर गया तथा उसके नेत्रों से अश्रु कण छलक पड़े। किन्तु साथ ही आशा और उत्कण्ठा भी उसके मुखमण्डल पर स्पष्ट उभर आई थी।

उसने मोपलों के मुख से सुना था कि कोई हिन्दू संन्यासी हिन्दुओं को शुद्ध कर उन्हें पुनः हिन्दू-धर्म में वापस लेने का कार्य कर रहे हैं। मोपले उसे क्रोध में शैतान संन्यासी के नाम से ही पुकारते थे।

उस तरुणी का हृदय सहसा कांप उठा। कहीं यह वही संन्यासी तो नहीं है। उसने केवल रोना आरम्भ कर दिया।

'रो नहीं!' संन्यासी बोला, 'लड़की, तेरे शरीर पर मोपला स्त्रियों की जाकिट है, परन्तु तू यह गोविंद का गीत गा रही है। कहीं तू पहले हिन्दू तो नहीं थी?'

युवती ने कुछ साहस करते हुए कहा, 'भगवन्, भक्तों की परीक्षा गोविन्द

जाकिट से नहीं हृदय से करते हैं। मुझे मेरे माता-पिता ने यही सिखाया है। मैं हिन्दू थी, आपकी यह बात सत्य है। परन्तु मैं अभी-भी हिन्दू ही हूँ। मेरे शरीर पर मुसलमानी जाकिट चढ़ा दी गई, मन पर नहीं। क्षमा कीजिए, मैंने सुना है धर्मभ्रष्ट किए गए हिन्दू पुनः शुद्ध होकर हिन्दू-धर्म व समाज में वापस आ सकते हैं। यह सत्य है क्या ?'

संन्यासी बोला, 'यह सत्य है।' बलात्कार अथवा मूर्खतावश जो हिन्दू-धर्म से च्युत हुए हैं, वे सभी प्रायश्चित्त करके पुनः हिन्दू हो सकते हैं।'

'महाराज! परन्तु मैं तो एक मसकुनी हूँ, नीच जाति की एक कन्या। फिर बलात् मुझे एक मुसलमान ने यहां अपनी पत्नी बनाकर रखा हुआ है। अभी भी मैं जीवित हूँ, क्या मैं शुद्ध हो सकती हूँ ?'

'हां क्यों नहीं ? तेरा चित्त जिस क्षण शुद्ध हो गया उसी समय वह प्रायश्चित हो गया। तू जीवित है इसे मैं सद्भाग्य मानता हूँ। यदि पतित होने वाला प्रत्येक व्यक्ति आत्महत्या करने लगेगा तो हिन्दू-जाति स्वतः ही समाप्त हो जाएगी ? यदि ऐसा ही किया जाने लगा तो मोपलों को तुम्हें बलात् धर्मान्तरित करने का भी कष्ट नहीं उठाना होगा। यदि धर्म के प्रति हृदय से आस्था समाप्त न हो तो प्रत्येक बात क्षम्य है और जो कुछ हुआ है उसकी तुम्हारे द्वारा किए गए अपराध के रूप में गणना नहीं की जा सकती।'

ध्येय के बन्दरगाह तक पहुंचने के लिए अनेक बार नाविक को सामने से बहती वायु को चीरकर बढ़ने के स्थान पर मार्ग बदल कर भी चलना पड़ता है। तुम तो केवल यह बताओ कि क्या तुम पुनः हिन्दू होना चाहती हो ? यदि चाहो तो पुनः हिन्दू हो सकती है।'

अप्रत्याशित रूप कोई शुभ समाचार मिलने पर जैसे मनुष्य क्षण भर विश्वास ही नहीं कर पाता उसी प्रकार क्षण-भर अवाक् रहकर वह युवती बोली, 'ऐसा है तो महाराज, क्या सचमुच ही मैं हिन्दू हो सकती हूँ ? आप तुरन्त ऐसा कीजिए और मुझे अभी ले चलिए। हिन्दू-धर्म से च्युत किए गए हिन्दू यदि पुनः अपने धर्म में वापस आ जाते हैं तो मोपले उनकी हत्या कर देते हैं। अतः जल्दी चलिए। क्या मैं भी आपके साथ चलूँ ?'

'अवश्य, परन्तु तुम मुसलमानी पहनावा मत पहने रहो। यह जाकिट उतार दो। तुम उस राक्षस से किंचित् मात्र भी भयभीत न हो। मेरे साथी यहां समीप में ही हैं। ये बटन खोल दो, और निकाल दो इस जाकिट को।'

यह अकल्पित मुक्ति—राक्षसों की बंदीशाला से यह अकल्पित मुक्ति—

एक क्षण पूर्व तक तो इस मुक्ति की कहीं गन्ध भी न आ पा रही थी। वह युवती बटन खोलने लगी। किन्तु मैं पुनः हिन्दू होने वाली हूँ इस प्रिय कल्पना से उसके नारी-स्वभाव के अनुसार मृदुल ज्ञान-तन्तु पुनः थर-थर कम्पित हो उठे और बटन न खुल पाए।

हिन्दू-जाति के मातृपक्ष में वापस लौटने के मार्ग में एक मोपलों की जाकिटरूपी फाटक आड़े आ गया था और फाटक पर लगी सांकल शीघ्र ही नहीं खुल सकी!

परन्तु इसमें हो रहा विलम्ब भी वह सहन न कर पाई। जो बटन खुल नहीं पाये थे, उसने उन्हें तड़-तड़ तोड़ दिया और वह जाकिट उतार कर फेंक दी। जिस प्रकार पिंजरे में बन्द कोई पक्षी पिंजरे से मुक्त होते हुए पंख फड़फड़ा कर उड़ पड़ता है, और किसी वृक्ष पर जाकर आश्रय ले लेता है उसी प्रकार वह भी झट से आगे बढ़ी और उसने संन्यासी के बाहुपाश में आश्रय ले लिया।

संन्यासी चल पड़ा। उस कन्या सहित वह कुछ ही दूर चल पाया था कि उसके साथी भी उससे आ मिले।

'यह कौन है? अरे मालती!' दामोदर आश्चर्यचकित होकर बोला। 'ऐसा है तो हे भगवान्! ऐसे जितने भी हिन्दू हम जानते थे और जिन्हें दुष्टों ने हिन्दू-धर्म से पतित किया था, शुद्ध कर लिये जाने चाहियें। कितनी आनन्ददायक है यह बात।

संन्यासी बोला, 'और जिन्हें मैं पहचानता था वे सब भी। अभी छः मास भी नहीं हुए होंगे और उस मौलवी कुर्रमला ने खड़े होकर सगर्व गर्जना करते हुए कहा था कि 'आज हिन्दू-धर्म मर गया है। इस खिलाफती राज्य में जितने भी हिन्दू थे, वे सभी मुसलमान बना लिए गए हैं। आज हम ऐसा कह सकते हैं कि मलाबार में तो तुम्हारे खिलाफत राज्य का नाम-निशान तक भी नहीं रह गया है। धर्मभ्रष्ट किए गए सभी हिन्दू पुनः अपने धर्म में आ गए हैं और तेरे प्रयास विफल हो गए हैं।'

'स्वामिन्! शकों और हूणों की तलवारों से लगे आघात जिस प्रकार समूल भर दिए गए थे उसी प्रकार आपकी कृपा से इस प्रहार को भी पूर्णतः विफल कर दिया गया है।'

'यह ठीक ही हुआ।' संन्यासी गम्भीरता सहित बोला, 'अपने किए गए आघातों को मिटा देना यह हिन्दू-जाति की जीवन-शक्ति की गौरवपूर्ण विजय है इसमें तो कोई शंका ही नहीं। किन्तु अब इस जीवन-शक्ति से ऐसी क्रिया-

शक्ति का निर्माण किया जाना अभीष्ट है कि किसी हिन्दू-जाति पर प्रहार करने का साहस ही न हो। घावों को भरकर उनके चिह्न मिटा देने की अपेक्षा अब हिन्दू-जाति को अपने आप में ऐसा सामर्थ्य और चैतन्य उत्पन्न करना होगा कि अब किसी को इस जाति पर प्रहार करने का साहस ही न हो पाए और किसी को ऐसा करने का अवसर ही न मिल पाए। वह विजय इस विजय की अपेक्षा अधिक गौरवपूर्ण होगी। औरंगजेब का पराभव कर मुगल-साम्राज्य को धूलि-धूसरित कर दिया गया यह तो विजय है ही परन्तु यदि बाबर अथवा महमूद गजनवी और कासिम को सिंधु नदी को पार करने का प्रयत्न करते हुए ही उन्हें डुबाकर नष्ट कर दिया जाता तो वह विजय, इस विजय की अपेक्षा परिपूर्ण और निरपवाद विजय सिद्ध होती। अब आगामी पीढ़ी को, जिसके तुम प्रतिनिधि हो ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि हिन्दूजाति का संगठित बलरूपी हिमालय सगर्व यह चुनौती दे सके कि किस माता ने ऐसा पूत जना है जिसने मुझ पर अन्याय सहित आघात करने का धौंसा खाया है?'

'इस प्रकार की विजय प्राप्त करने का कार्य, दामोदर तुम्हें, मालती और तुम्हारी पीढ़ी को ही करना है। ऐसा कहते हुए संन्यासी ने दामोदर और मालती के हाथों को एक-दूसरे से मिला दिया और गम्भीर स्वर में बोला, हे युवक! हे युवती! यह तुम्हारा पाणिग्रहण तुम्हारे लिए और तुम्हारी हिन्दू-जाति के लिए सुखद एवं शुभ हो!'

❑❑❑

"ईमानदारो! अल्लाह की फतह! आज, इस क्षण में अपनी आयु के अति उच्च शिखर पर आरूढ़ होकर खुदा को अनेकानेक धन्यवाद देकर कहता हूं कि मेरे हाथों से इस कुट्टम व गोपुर तालुल्का में एक भी हिन्दू जीवित नहीं बच पाया है। मेरे राज्य में इस समय एक भी देवालय अथवा मूर्ति का अस्तित्व नहीं रह गया है। जोकि मुसलमान बनाए गए हैं, सैंकड़ों काफिरों की हत्या कर दी गई है। अनेकों काफिरों व नास्तिकों का बीज नाश कर दिया गया है। सैकड़ों देवताओं को भूलुंठित कर दिया गया है। बस! अब केवल विश्वासी, सत्यधर्मी पैगम्बर और अल्लाह का जयघोष ही मेरे राज्य में सुनाई पड़ता है। अब इस खिलाफती राज्य में कोई भी अन्यायी, पापी, मूर्तिपूजक, अधर्मी बाकी नहीं बचा है।"

—इसी उपन्यास से, पृष्ठ 95

इसी उपन्यास से

दीन-दुःखी, फूट-फूटकर रोती हुई महिलाएं, नीच अधर्मियों ने अपनी क्रूरता का प्रदर्शन कर जिनकी साड़ियां भी फाड़ दी थीं, ऐसी अर्धनग्न कुमारियां कि जिनकी लज्जा का हरण किया गया था, अपने पिताओं के समक्ष इस निर्लज्ज अवस्था और अर्धभ्रष्ट और अर्धनग्न स्थिति में रहने पर विवश पुत्रियां जो मरने से भी परे मरने सरीखी हो गई थीं तथा अपनी पुत्रियों और स्त्रियों के सम्मान और जीवन का अपनी आंखों के समक्ष सर्वनाश होते हुए देखने पर विवश अपने पौरुष को धिक्कारते हुए पिता, अपनी छातियों से बालकों को लिपटाए हुए स्त्रियां और अपने वृद्ध दादा-दादियों के हाथ पकड़े हुए बालक, ये सभी थर-थर कांपते हुए तलवारों से ही बनाए गए उस घेरे में उसी प्रकार रोते और गायों के समान ही डकारते हुए घुसा दिए गए।

भूल सुधार को अपमान समझने वाली जाति का अस्तित्व केवल इतिहास के पन्नों में रह जाता है।

स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती

वेद विद्या शोध संस्थान (न्यास)

आवरण : श्रीमहालक्ष्मी; ०९८९९६५१५०३
E-mail : smcolour@gmail.com